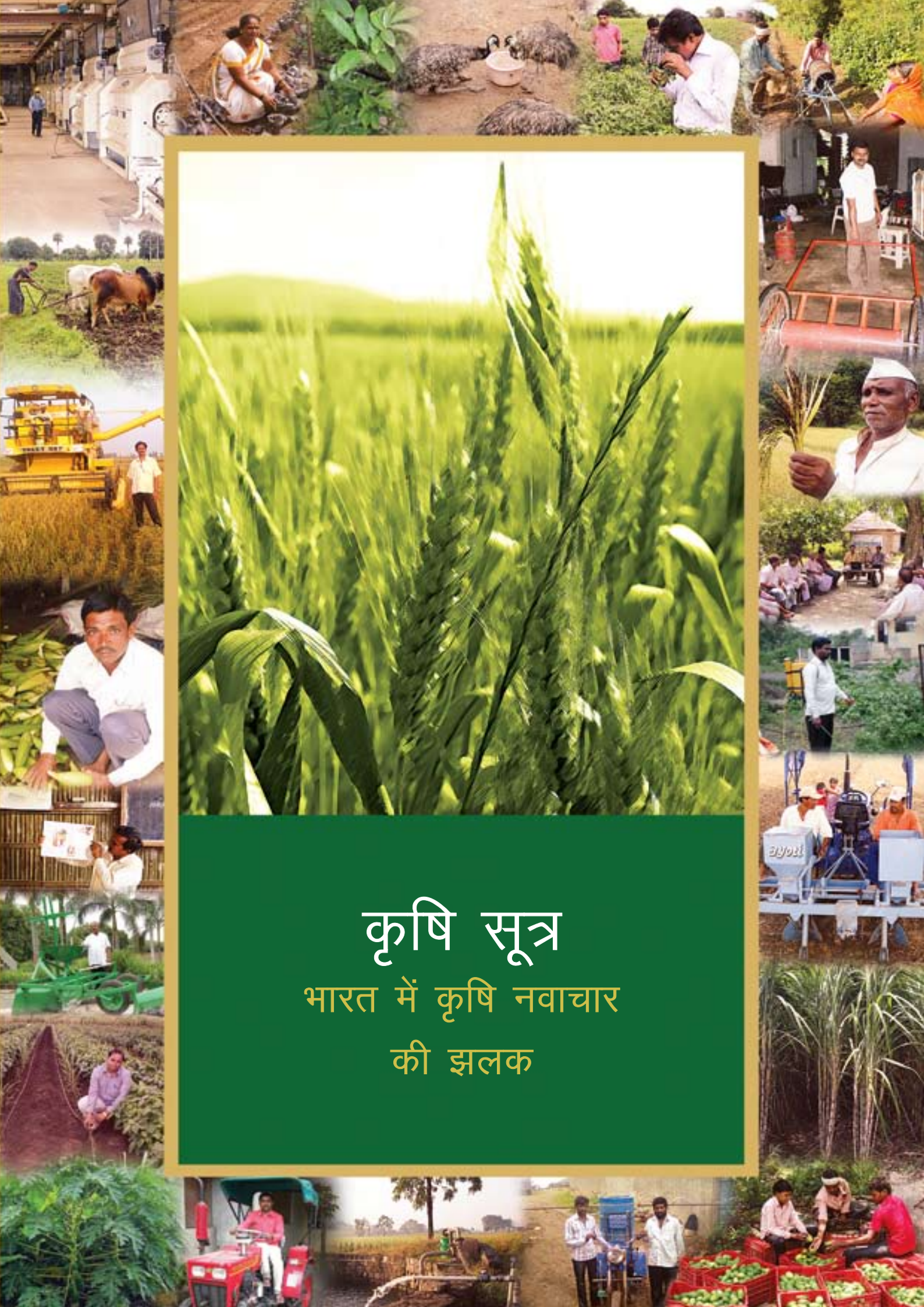

कृषि सूत्र

भारत में कृषि नवाचार की झलक

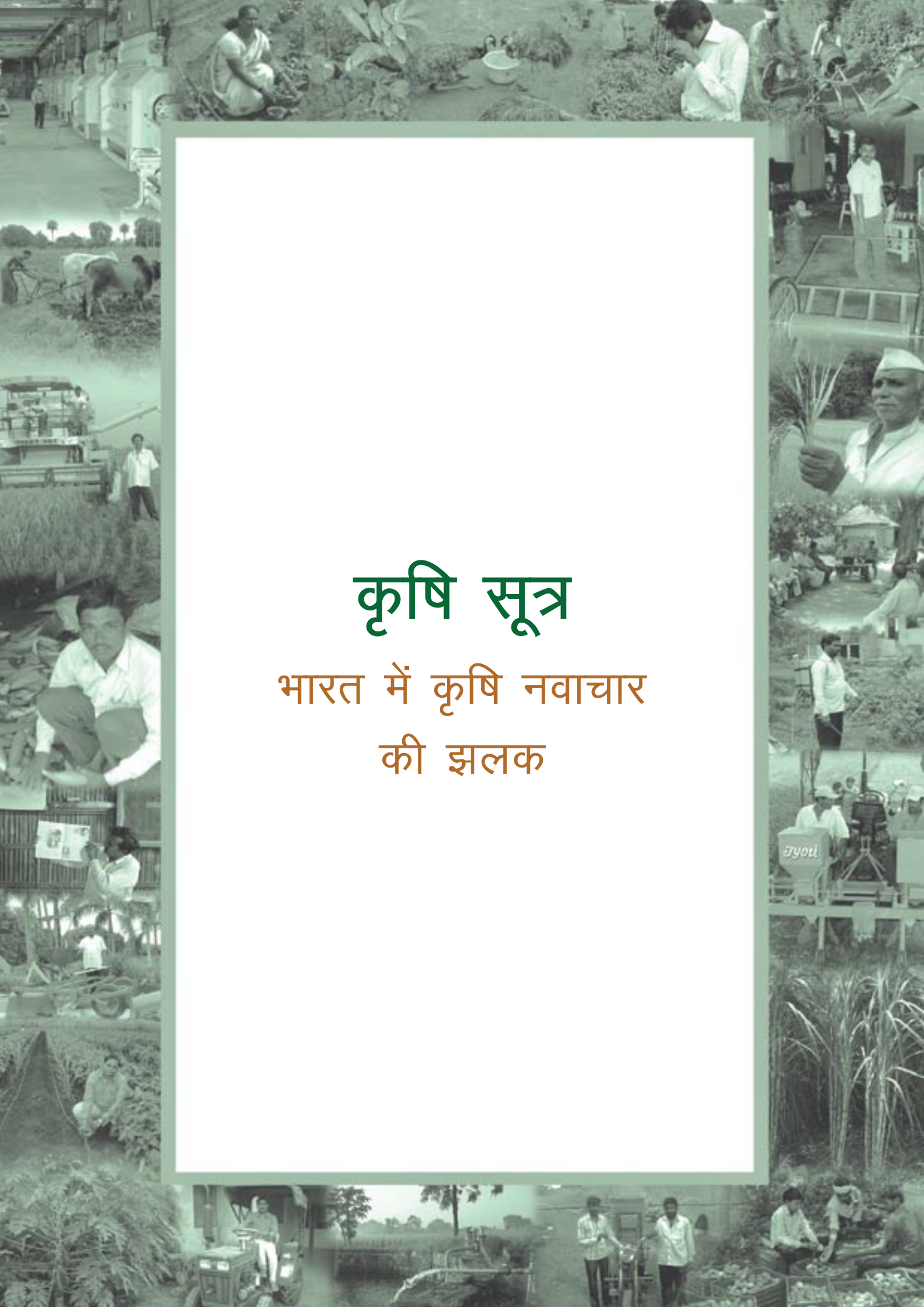

कृषि सूत्र

भारत में कृषि नवाचार की झलक

शरद पवार
SHARAD PAWAR

D.O. No....677..../AM
कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF AGRICULTURE &
FOOD PROCESSING INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA

20 FEB 2013

संदेश

लघु कृषक कृषि–व्यापार संघ (SFAC) द्वारा पिछले वर्ष "कृषि सूत्र" नामक प्रकाशन प्रसारित किया गया था, जिसमें कृषि क्षेत्र में नवाचार के 100 उदाहरणों का संकलन था। मुझे अत्यंत हर्ष है कि अब इस प्रकाशन का हिन्दी संस्करण प्रकाशित हो रहा है, जिससे इसकी पहुंच हिन्दी भाषी राज्यों में जिला स्तर तक के अधिकारियों, कृषक संगठनों, वैज्ञानिकों व सामान्य कृषकों तक होगी। मुझे आशा है लघु कृषक कृषि–व्यापार संघ (SFAC) आगे भी कृषि क्षेत्र में नये विकास की इसी प्रकार पहचान करता रहेगा एवं समय–समय पर इस प्रकार के प्रकाशन को सामने लाएगा।

शुभकामनाओं सहित।

(शरद पवार)

Office : Room No. 120, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001 Tel.: 23383370, 23782691 Fax : 23384129
Resi. : 6, Janpath, New Delhi-110 011 (India) Tel. : 011-23018870, 23018619 Fax : 011-23018609
E-mail : sharadpawar.sp@gmail.com

आशीष बहुगुणा
सचिव

भारत सरकार
कृषि मंत्रालय
कृषि एवं सहकारिता विभाग
Government of India
Ministry of Agriculture
Department of Agriculture & Cooperation

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि लघु कृषक कृषि–व्यापार संघ (SFAC) द्वारा पिछले वर्ष प्रकाशित "कृषि सूत्र" संकलन का हिन्दी अनुवाद तैयार किया गया है। इस प्रकाशन में एकत्र की गई कृषि नवाचार की कहानियाँ वास्तव में अत्यन्त प्रेरणा तथा उत्साह उत्पन्न करती हैं। मुझे विश्वास है कि इस हिन्दी संस्करण का उत्तर भारतीय राज्यों में अत्यन्त ही सकारात्मक प्रभाव होगा एवं इसे देखकर कृषक एवं उद्यमी दोनों वर्ग प्रोत्साहित होंगे।

लघु कृषक कृषि–व्यापार संघ (SFAC) को इस अनूठे कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

फरवरी 20, 2013

(आशीष बहुगुणा)

Office : Krishi Bhawan, New Delhi-110001, दूरभाष / Phone : 23382651, 23388444 फैक्स सं० / Fax No. : 23386004
E-mail : secy_agri@nic.in

विषय वस्तु

प्रस्तावना xi

कृषि यंत्र 1

1. बेहतर फसल प्रबंधन व उच्च पैदावार के लिए संशोधित धान बुआई ड्रम मशीन 2
2. पौधों को हरा–भरा रखने के लिए किफायती छायादार हरित पौधा घर 4
3. बॉयो गैस संयंत्र 6
4. मसालों व अनाज साफ करने का सूक्ष्म ग्रेडर 8
5. दालों/दाल पीसने की चक्की 10
6. कृषि क्षेत्र के उन्नत औजार 12
7. क्रांति स्प्रे पंप 14
8. गन्ने की खेती को बेहतर ढंग से जोतने के लिए सब सॉयलर का निर्माण 16
9. दोहरे मीडिया स्प्रे के साथ नवाचारी स्प्रे पंप 18
10. बिजली चालित कृषि औजार 20
11. पौधों के लिए बिना छत वाले हरित घर 22
12. त्रिशूल ट्रैक्टर 24
13. मिनी ट्रैक्टर 26
14. खर पतवार हटाने की मशीन 28
15. संशोधित हल्दी पिसाई की कार्यविधि जिससे माल और बिजली की बचत होती है 30
16. बहुउद्देशीय यंत्र चालित बुआई मशीन 32
17. गन्ने की कोंपल काटने की मशीन 34
18. गहराई से हल चलाने के लिए सब–सॉयलर 36
19. बुआई मशीन व हल जोतने संबंधी औजारों में सुधार 38
20. बेलदार पौधों के लिए तारों की चरखी 40
21. इंजन चालित स्प्रेअर 42
22. मशरूम खाद को उल्ट–पल्ट करने की मशीन 44
23. मक्का छीलने की संशोधित मशीन 46
24. कृमि खाद और कीड़े अलग करने की मशीन 48
25. धान कूटने के लिए संशोधित रोलर 50
26. गन्ने की कोंपलें तोड़ने का यंत्र 52

सिंचाई 55

27. असरदार जल प्रबंधन के वेन मॉडल 56
28. परिष्कृत ड्रिप सिंचाई प्रणाली 58
29. किफायती ड्रिप सिंचाई के लिए कपास में बारी–बारी से अंतर देना 60
30. सौर ऊर्जा चालित मध्य धुरी पर निरंतर घूमने वाला सिंचाई यंत्र 62
31. नवाचारी पवन चक्की के जरिए सिंचाई करना 64
32. पौधों की दूरी में सुधार करके किफायती ड्रिप सिंचाई करना 66

कृषि परंपरा एवं खाद्य संसाधन 69

33. प्रसारण खेती एवं जैविक कृषि 70
34. अनार की पैदावार में सुधार (पानी के जरिए पोषक तत्व देना व फसल का संरक्षण करने की तकनीक) 72
35. सूखाग्रस्त इलाकों में जैविक खेती 74
36. कृषि खाद और खाली जगह का अधिकतम इस्तेमाल करके कपास की पैदावार बढाना 76
37. शुष्क भूमि पर जैविक खेती करना 78
38. सूखाग्रस्त इलाकों में फसल के लिए विविधीकरण तथा जैविक तकनीक 80
39. प्याज के साथ पत्ता गोभी की अंतर–फसल लगाना 82
40. उभरी हुई स्थिर क्यारियों संबंधी तकनीक 84
41. हरा–भरा बगीचा – किफायती जैविक खेती के लिए परियोजना का समूचा विकास व प्रबधन 86
42. जैविक खेती से बंजर भूमि को खेती योग्य बनाना 88
43. पहाड़ी इलाकों में बागवानी 90
44. लीची के बगीचों को ठंडा रखने के लिए कूलर के रूप में फव्वारों का इस्तेमाल 92
45. आम के बगीचे (बीज बोना एवं उसी स्थान पर पौधे की कलम लगाना) 94
46. बहु फसल ढांचा 96
47. शीत जल धान संसाधन 98
48. बूरा/गुड़ बनाने का लघु संयंत्र 100
49. पैदावार का मूल्यवर्धन 102

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील पदार्थ 105

50. कैंचुओं का इस्तेमाल करके बंजर भूमि का कृमि उपचार करना 106
51. कृमिखाद, असरदार पैदावार के लिए डिजाइन की गई प्रक्रिया 108
52. अनार में संक्रमण, अंगूर के आकार का अनुसंधान 110
53. कीट, फंगस व विषाणुजनित रोगों का जैविक हल ECOGOLD 999 PLUS 112
54. जैविक कीटनाशक दवाओं को तैयार करना आसान है 114
55. जैविक कीटनाशक दवाओं के लिए पत्तियों का काढा बनाना 116

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग 119

56. चल कृषि : मोबाइल कृषि परामर्श सेवाएं 120
57. रूयटर बाजार लाइट (RML) : मोबाइल फोन पर किसानों को निजी माइक्रो कृषि सूचना सेवाएं प्रदान करना 122
58. असरदार कृषि प्रबंधन के लिए ERP सॉफटवेयर 126
59. कृषि उत्पादों का पता लगाना एवं प्रबंधन करना 128
60. जल विभाजन प्रबंधन कार्यक्रम – जल विभाजन ए से जेड तक के लिए आइटी समाधान 130
61. नैनो गणेश 132
62. ताजा व रोजाना – ऑन लाइन सब्जी स्टोर 134
63. shopveg.in – ऑन लाइन सब्जी और किराने की दुकान 136

फल और सब्जियां 139

64. अनोना 2, NMK 1 – शरीफों की अच्छी पैदावार का संकलन 140
65. भारत में आकर्षक एवं विदेशी फल व सब्जियों की खेती 142
66. गन्ने की रोग प्रतिरोधी बढिया उपज – CON 05071 किस्म 144
67. आम की नई किस्म – नीलफोनसो 146
68. नारियल की गैर–पारंपरिक किस्म की खेती 148
69. मीठी मक्कई व अनार के लिए बागवानी का विकास करना 150
70. गन्ने की खेती वाले इलाके में शरीफे की खेती 152
71. टमाटर की अविनाश किस्म के लिए मानक संचालन प्रक्रिया विकासित करना 154
72. झर करेला – जंगली करेले की चुनी हुई किस्म 156
73. आधी शुष्क भूमि पर नारियल व चीकू की बागवानी का विकास करना 158
74. प्याज की अत्याधिक पैदावार 160
75. केले की लगातार खेती 162
76. केले और पपीते की मिश्रित फसलें 164
77. केले की फसल के लिए आयातित तकनीक का अनुकूलन एवं कार्यान्वयन 166

अन्य फसलें 169

78. सफेद बीजों वाली रवी की नई प्रकार की अरहर दाल जिसे GT 102 के नाम से जाना जाता है 170
79. मिसीला रिफाइनरी में बिनोलों से एक ही बार में तेल निचोड़ने की तकनीक को समेकित करके स्वदेश में विकसित 172
80. मंदे मौसम के दौरान गुड़– शीरे के निर्यात अवसरों का विकास 174
81. धान के बीजों का संरक्षण 176
82. मूंग दाल की नई किस्म – GBM1 178

मत्स्य पालन 181

83. किफायती मछली शुक्राणु पैकिंग व ढुलाई करना 182

पशु पालन 185

84. भारतीय बैलों को संक्रमण रोगों के प्रति कम संवेदनशील बनाना 186
85. पशुधन के लिए विशिष्ट प्रकार से खनिज मिश्रित क्षेत्र 188
86. कृषि पशुओं के लिए प्रोबॉयोटिक पूरक 190

डेरी 193

87. गिर पशु पालन के माध्यम से कम कोलेस्ट्रोल वाले दूध का उत्पादन 194
88. गोशाला के लिए नए शैड तैयार करना व उनकी व्यवस्था करना 196

मांस व मूर्गी पालन 199

89. छोटे से खेत में देसी तरीके से मुर्गी (देशी कोमबडी) पालन 200
90. छतरमुर्ग पालन 202

समुदायिक प्रयास 205

91. फसल–पशुधन की एकीकृत किफायती कृषि 206
92. विदेशी व देसी सब्जियां व फलों की समुदायिक कृषि 208
93. कृषि सेवा केंद्र 210
94. कृषि विज्ञान वाहन 212
95. एग्रो सेवा केंद्र 214
96. कालभात किस्म के धान संरक्षण व जैविक उत्पादन के लिए सामुदायिक पहल 216
97. सामुदायिक रूप से सब्जियां उगाना (सब्जी केंद्र) 218
98. छोटे खेतों के लिए पारंपरिक मौसम पूर्वानुमान तकनीक 220
99. अनार की खेती के लिए नवाचारी अनुबंध खेती का नमूना 222
100. कृषि समृद्धि के लिए उत्पादक कंपनी का नमूना 224

प्रस्तावना

नवाचार कृषि की स्वाभाविक प्रक्रिया है। जब से मनुष्य ने जंगली बीजों में वृद्वि करके खाद्य तथा अन्य प्रकार के उत्पादों की तकनीक की खोज की है तब से कृषि व रचनात्मकता में अटूट संबंध स्थापित हो गया है। प्राकृतिक संसाधनों की संभावनाओं को मिला कर जैसे पशु व मानव श्रम के लिए जमीन और पानी, हल जोतने से लेकर निराइ करने तक, जमीन में अनुकूल बैक्टीरिया डाल कर उपजाउ बनाने तथा कीट व पंखदार कीड़ों का नाश करने और अंत में फसल को खेत से ला कर संसाधित करने और कुटुम्ब का भरण पोषण करने जैसे बहुत से कार्य समय पर करने के लिए लगभग हर रोज अत्याधिक नवाचार तथा एकदम सही निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। दुनिया भर में लाखों किसान रोजना वास्तविकता पूर्ण रवैये तथा थोड़ी गड़बड़ी के साथ इस जटिल कार्य को करते हैं, बिल्कुल करीब से जांचने पर यह आश्चर्यजनक लगता है कि किस प्रकार बहुत से ऐसे अनछुए तत्वों और खिलाड़ियों के साथ यह प्रणाली वास्तव में एकदम सही ढंग से काम करती है। दुनिया के अन्य सभी स्थानों से कहीं ज्यादा भारतीय कृषि क्षेत्र में नवाचार की भावना दिखाई देती है। यह क्षेत्र 600 लाख लोगों की आबादी का भरण पोषण करता है और भारतीय किसानों की गहरी रचनात्मकता तथा नवाचार एवं साहसिकता की भावना इसके कार्यनिष्पादन को चुनौती देने वाली विवशताओं के प्रतिबिंब भारतीय कृषि की सफलता की सबसे बड़ी गवाही देते हैं। यद्यपि पिछले कुछ दशकों में कृषि में विभिन्न प्रकार के जोखिमों का पता लगाने के लिए दृढ राजकीय कार्रवाई सहित महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं परंतु किसानों के लचीले व अनुकूलन रवैये के कारण ही भारतीय कृषि क्षेत्र की गतिशीलता सुनिश्चित हो सकी है।

कृषि क्षेत्र में रचनात्मक साधन के यह 100 पार्श्व चित्र इस दस्तावेज का एक छोटा सा प्रयास हैं और कृषि में नवाचार के कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं। व्यक्तिगत किसान व उद्यमी केंद्र–बिंदु हैं और कृषि समुदाय के सामने आने वाली साधारण समस्याओं का सरल, किफायती परंतु काल्पनिक हल है।

100 पार्श्व चित्र केवल सौवें भाग का छोटे से अंश का वर्णन करते हैं, संभवतः इस प्रकार की हजारों प्रथाएं स्थानीय तौर पर विकसित की गईं हों। निस्संदेह इसका विस्तार कुछ क्षेत्र व राज्य तक ही सीमित है। यह कृषि में नवाचार के संक्षिप्त व प्रमाणिक सार संग्रह से हट कर है। इससे पूर्व हम मुह जबानी सूचना नेटवर्क पर आश्रित थे और वास्तव में कोई भी प्रकाशित सूचना उपलब्ध नहीं थी।

परंतु हम इसे आने वाले महीनों व सालों में इसी प्रकार से प्रकाशित।श्रृंखला की एक कड़ी के रूप में देखते हैं। इस रिपोर्ट के प्रकाशन व परिचालन से उम्मीद है कि इससे देश भर में होने वाले स्थानीय नवाचारों व रचनात्मक समाधानों संबंधी सूचनाओं के प्रवाह को हवा मिलेगी जिन्हें अगामी संग्रहों में लिखित प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जा सकेगा। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्तुत किए गए बहुत से नवाचार आगे बढाने के लिए उपयुक्त व व्यापक रूप से अनुकरणीय हैं, यह एक ऐसा कार्य है जिसे राज्य सरकारें, गैर–सरकारी अनुसंधान निकाय, निजी क्षेत्र की कंपनियां, व्यवसायिक, बैंक व मीडिया सहित अन्य सहभागी पूरा कर सकते हैं।

संभवतः यह रिपोर्ट अन्य किसी समुदाय से अधिक किसान समुदाय की एजेंसी, संघ, संस्था तथा ऐसे ही संस्थानों के माध्यम से स्वयं कृषि समुदाय को लक्षित करती है। अंत में मैं यह बताना चाहूंगा कि क्षेत्रीय भाषा में इसके संस्करण जल्द ही परिचालित किए जाएंगे, ताकि देश के हर हिस्से में किसान जैसा भी उचित समझें, इन समाधानों पर चर्चा करें, आलोचना करें, अपनाएं या अस्वीकार कर दें।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति व माननीय प्रधानमंत्री दोनों ने हाल ही में प्रोत्साही नवाचार व अपनी चौखट से बाहर निकल कर विचार करने की जरूरत पर जोर दिया है ताकि देश को आगे ले जाया जा सके। यह किताब कृषि नवाचार के विशाल कुंड की पहचान करने के प्रति मामूली सा योगदान है और यह इन किसानों व अन्य अनगिनत उन किसानों, उद्यमियों को समर्पित है जो इस क्षेत्र को संपन्न बनाते हैं।

कृषि यंत्र

नवाचार का सारांश

बेहतर फसल प्रबंधन व उच्च पैदावार के लिए संशोधित धान बुआई ड्रम मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री लक्ष्मण बाबूराव उर्फ बल दलवी
अनुभव	35 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया, फायदा – ₹ 30,000–40,000
विस्तार	30 से 40 यूनिट
कर्मचारियों की संख्या	2
संपर्क विवरण	गांव – वाडप, डाकखाना – गौडकामत, तालूका – करजात, जिला – रायगढ, महाराष्ट्र, फोन नः 02148 226617, 09273187434, (मोबाइल) ई–मेलः niliagromachines@yahoo.co.in

बिजनैस मॉडल

इस किसान ने डाक्टर बालासाहेब सावंत के मार्गदर्शन में धान बुआई की कुल 50 ड्रम मशीने तैयार कीं। कोणकण कृषि विद्यापीठ विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा आस–पास के गांवों में इन मशीनों की बिक्री की। उसने एक ड्रम मशीन को ₹ 3500 में बेचा और उसे प्रति ड्रम करीब ₹ 1000 का लाभ कमाया। एक साल में उसने 30 से 40 मशीने बेची जिससे उसे करीब ₹ 40,000 तक कमाई हुई। अपने उत्पाद के प्रचार के लिए वह मौखिक रूप से की गई चर्चा पर भरोसा करता है। इस मशीन की एक प्रतिकृति कोणकण कृषि विद्यापीठ विश्वविद्यालय के शो केस में रखी गयी है।

नवाचार का विवरण

धान बुआई की डीआरआर ड्रम मशीन में सुधार किए गए हैं (धान अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद ने इसे डिजाइन किया है) संशोधित मशीन में एक समय में चार लाइने दिखाई देती हैं, जिसमें स्टील के पहियों के बदले साईकिल के टायर लगाए गए हैं। इससे मशीन का भार काफी कम हो गया है और इससे मशीन इधर–उधर ले जाने व इस्तेमाल करने में सुविधा होती है। इसमें 9 इंच की लाईन होती है और उसके 2 इंच ऊपर छेद होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

धान बुआई की संशोधित ड्रम मशीन को मई 2009 में तैयार करके उसने जून, 2009 में अपने गांव वाडप में 3 हैक्टयर तथा पड़ोस के गांव जैसे सैपले, गौडकामत, सलोख, एशियाली, दहीगांव, पोसारी में 12 हैक्टयर क्षेत्र में इसका इस्तेमाल किया। आजकल आस–पास के गांवों में किसान 250 एकड से अधिक भूमि पर ड्रम मशीन से धान बुआई करते हैं। इससे धान की खेती में प्रति एकड 15 से 18 टन का इजाफा होता है इस प्रकार इससे ₹ 3000 प्रति एकड की बचत होती है।

पहचान/इनाम

राजनाला धान बुआई पैदावार तथा नर्सरी सहकारी समिति के अध्यक्ष वाडप, तालुक करजात।

मुद्दे

इस काम को पूरा करने में सबसे बडी मुश्किल बिक्री और प्रचार है। श्री लक्ष्मण राव का दावा है कि यदि एक बार इसके फायदों की जानकारी दी जाए तो किसान खुद बखुद इस संशोधित ड्रम मशीन को अपना लेंगे।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पौधों को हरा–भरा रखने के लिए किफायती छायादार हरित पौधा घर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री जगन्नाथ गंगाराम तायवडे
अनुभव	27 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	करीब ₹ 12 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	20
संपर्क विवरण	डाकखाना – लाडसावंगी, तालूका व जिला – औरंगाबाद, महाराष्ट्र, मोबाइल नः 09421313616

बिजनैस मॉडल

वह ज्यादातर मौखिक रूप से की गई चर्चा के माध्यम से किए गए प्रचार पर निर्भर रहता है। वह किसान सम्मेलनों (कृषि विभाग सहकारी मेला) में भाषण भी देता है।

नवाचार का विवरण

श्री जगन्नाथ तायवडे ने स्थानीय तौर पर उपलब्ध सामग्री से पौधों को हरा–भरा रखने के लिए छायादार हरित पौधा घर तैयार किया। इस छायादार हरित पौधे घर की कुल उंचाई मध्यबिंदु से 6 मीटर और लम्बाई 36 मीटर है तथा यह 24 मीटर चौड़ा है। छायादार हरित पौधे घर के लिए तारों से बनी रस्सियों की जरूरत होती है जो तुलना में सस्ती व स्थानीय बाजार में आसानी से मिल जाती हैं। इसका डिजाइन इस प्रकार का होता है कि इसमें नाममात्र रूकावटे आती हैं। छायादार हरित पौधे घर में बिना किसी रूकावट के खेती करना आसान होता है और लोकप्रिय डिजाइन की तुलना में इसमें मजदूरों को काम करने में आसानी होती है। छायादार हरित पौधे घर में इस्तेमाल की गई सामग्री प्लास्टिक और इसकी टेक लोहे की होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस प्रकार के छायादार हरित पौधे घर शिमला मिर्च, टमाटर, मिर्ची आदि जैसी लम्बी फसलें उगाने के लिए उपयुक्त होते हैं। यह 80 किलो मीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से आने वाली हवाओं को झेल सकते हैं और काफी हद तक यह किफायती भी होते हैं क्योंकि इन्हें बनाने में कुल ₹ 60 की लागत आती हैं इनके ढांचे की शक्ल गुम्बद की तरह होती है। करीब 15 किसान 0.10 हैक्टर (प्रति किसान) में इस प्रकार के ढांचे बनाकर शिमला मिर्च व टमाटर की खेती करने लगे हैं। इससे पैदावार 10 गुणा अधिक हो गई है और मिट्टी की गुणवत्ता भी बढ गई है। यदि समय की बात की जाए तो इस तकनीक का इस्तेमाल करने से प्रतिदिन 5 घंटे की बचत होती है। इसे लगाना बहुत आसान है क्योंकि पूर्व में सिफारिश की गई तकनीक से यह 30 प्रतिशत कम समय लेती है। इस डिजाइन का एक और लाभ यह भी है कि इसमें बरसात का पानी खुद बखुद बह जाता है और प्रतिकूल वातावरण में अधिक पैदावार मिलती है।

पहचान/इनाम

बहुत से इनाम व अच्छी पहचान मिली :

- औरंगाबाद जिला परिषद
- वसंतराव नायक प्रतिष्ठान
- एकता सेवा संस्थान
- सतिनेठ सतकारी महाराष्ट्र सरकार
- कृषि रत्न भारतीय कृषि समाज
- महा एग्रो पुरस्कार

मुद्दे

छाया करने वाली इस जाली को लगाने के लिए दक्ष मज़दूरों की जरूरत होती है जो कि स्थानीय इलाकों में आसानी से नहीं मिलते। इसके अतिरिक्त किसानों के बीच जागरूकता भी एक मुद्दा है जिससे नवाचारक को निपटना पड़ता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बॉयो गैस संयंत्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अमरूत मुत्था
अनुभव	25 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	डाकखाना – रास्तापुर, तालूका – निवासा, जिला – अहमदनगर, महाराष्ट्र, मोबाइल न.: 09970151001

बिजनैस मॉडल

ज्यादातर मौखिक रूप से की गई चर्चा के माध्यम से तथा उससे मिलने आने वाले किसानों को मुफ्त सलाह देकर प्रचार करता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक संयत्र में भरण के रूप में गोबर का इस्तेमाल करके 15 किलो वॉट की बिजली पैदा की जाती है। इस प्रकार से पैदा ऊर्जा का इस्तेमाल 26 एचपी की मोटर को सफलतापूर्वक चलाने के लिए किया जाता है। यह एक तीन फेज़ की बॉयो–गैस उत्पादन यूनिट है। इससे दोहरे फायदे हैं क्योंकि डेरी उद्योग और कृषि परस्पर एक दूसरे से जुडे हुए व्यवसाय है जिसके फलस्वरूप इस आत्मनिर्भर मॉडल की लागत अनुकूलतम हो जाती है। बायो–गैस को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने से अनेक फायदे हुए हैं। गोबर का इस्तेमाल बॉयो–गैस संयंत्र में करने से उस इलाके की अपने–आप साफ–सफाई हो जाती है जिससे रोगजनक कीडे–मकौडों के पनपने पर भी रोक लग जाती है और ईंधन के लिए लकडियां इक्ठ्ठा करने की भी जरूरत नहीं रहती जिससे कि मज़दूरी में भी कमी आ जाती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस संयंत्र से नवाचारक 6 लाख ₹ प्रति वर्ष का लाभ कमाता है। आसान किश्तों में भुगतान करने की सुविधा के कारण इसमें मजदूरी भी कम होती है। इसके अतिरिक्त इसमें चूंकि दक्ष मजदूरों की जरूरत पड़ती अतः वह स्वंय मजदूरों को इस प्रकार का दक्ष प्रशिक्षण देता है।

पहचान/इनाम

- अंतराष्ट्रीय उद्यमी एवार्ड
- विश्वेश्वरय अखिल भारतीय इंजीनीयर एवार्ड

मुद्दे

संयंत्र को अमल में लाने के लिए दक्ष मजदूरों की जरूरत होती है जिन्हें ढूंढ पाना मुश्किल होता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मसालों व अनाज साफ करने का सूक्ष्म ग्रेडर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री एल.डी. पटेल
अनुभव	40 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लगभग ₹ 1.25 करोड (कुल मिला कर)
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	35
संपर्क विवरण	गोल्डिन इंजिनिरिंग कंपनी, लास्ट लेन, बीआईडीसी इस्टेट, गोरवा, बडोदरा – 390016 फोन नः 0265 2291540, 2284120, ई–मेलः goldin1971@yahoo.com वेबसाइट: www.goldin india.com

बिजनैस मॉडल

जीवनकाल रखरखाव की सेवाओं सहित मशीनों का निर्माण, मार्केटिंग तथा बिक्री

नवाचार का विवरण

इस उपकरण का इस्तेमाल सूक्ष्म तरह की साफ–सफाई करने के लिए किया जाता है। अनाज की पहले थोडी–बहुत सफाई करने के बाद ही इसका इस्तेमाल किया जाता है। इससे मिलने वाली फसल पूरी तरह शुद्ध होती है जिसमें छोटे–बडे आकार के सभी दानों को हटा कर समान आकार के दाने निकाले जाते हैं। इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से मसालों व अनाज की सफाई करने के लिए किया जाता है। यह पूरी तरह बंद परिवेश में चलाई जाने वाली मशीन है इसलिए पूरी तरह गंदगी रहित निकाले गए समान आकार के दानों की बिक्री खुदरा बाजार में अधिक होती है। इसमें अनाज के साथ चिपकी हुई अशुद्ध चीज़ों को पूरी तरह हटाने की क्षमता है और गंदगी हटाने से दानों की गुणवत्ता भी नष्ट नहीं होती। लगभग शून्य रखरखाव लागत के साथ इस उपकरण की लागत ₹ 2 लाख (0.01 टन प्रति घंटा) से लेकर ₹ 5 लाख (1 टन प्रति घंटा) के बीच आती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस मशीन से एक समान आकार के धूल–मिट्टी रहित दाने निकलते हैं। इस प्रकार की शुद्धता खाद्यान निर्यात के लिए अनिवार्य होती है। इतनी सस्ती दर पर इस काम को हाथ से करना असंभव है (इस काम को हाथ से करने पर लगभग 1 किलो/घंटा का समय लगता है जब कि यह काम इस मशीन से करने पर 1 टन/घंटा लगता है)। इसके अतिरिक्त आकार के अनुसार हाथ से अनाज की सफाई करना एक तरह से असंभव ही है। इसलिए निर्यात मानक हासिल करने के लिए यह मशीन महत्वपूर्ण है।

पहचान/इनाम

- ISO 9001:2008 प्रमाणित

मुद्दे

अभी तक किसी प्रकार के बडे मुद्दे सामने नहीं आए हैं। वे स्वयं ग्राहकों से निरंतर प्रतिक्रिया लेते रहते हैं और भविष्य में आने वाले उत्पादों के कार्यनिष्पादन में सुधार लाने का प्रयास करते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

दालों/दाल पीसने की चक्की

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री भाग्यरेखा इंटरप्राइज
अनुभव	55 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 12 करोड
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	68 लोग
संपर्क विवरण	श्री गिरीश महेश्वरी, 3872/1, सोलापुर रोड, पोस्ट बॉक्स न.: 86, बरसी सोलापुर – 413401, महाराष्ट्र फोन न.: 02184 222528/325528

बिजनैस मॉडल

वह अपने घर में अनुसंधान व विकास करता है परंतु विवरण बताना नहीं चाहता। परंतु वह इस जानकारी को अनुसंधान निकायों के साथ बांटना चाहता है।

नवाचार का विवरण

दाल पीसने की प्रक्रिया में मुख्य रूप से दो प्रक्रियाएं शामिल होती हैं अर्थात छिलका निकालना तथा छिलके को चीर कर बीज (दो भागों में) निकाला। छिलका निकालने (बीज के उपर का छिलका) से स्थूल आनाज कम हो जाता है, भण्डारण क्षमता, खाना पकाने की गुणवत्ता, स्वाद और पाचन शक्ति में सुधार हो जाता है। अंकुरों के साथ भूसी का बहुत मजबूत बंधन होता है और इस बंधन की ताकत प्रत्येक दाल के दाने की किस्म के अनुसार भिन्न भिन्न होती है। जबरन भूसी हटाने व बीज को चीरने से बहुत भारी नुकसान होता है। दाल की सबसे उपरी 5 प्रतिशत परतों में कुल प्रोटीन का 4 प्रतिशत भाग निहित होता है। अंकुर के इस केंद्रित भाग में कीमती प्रोटीन का काफी बडा हिस्सा पाउडर में तबदील होकर नष्ट हो जाता है। इस भूसी के पाउडर (चूणी) का इस्तेमाल पशुओं के आहार में किया जाता है, और इससे धूल प्रदूषण की समस्या भी बहुत ज्यादा होती है। जिस कारण दाल पीसने की चक्की की आर्थिक सक्षमता का कोई फायदा नहीं होता और दालों की पैदावार करने वाले (किसान) को भी अपनी पैदावार की पूरी कीमत नहीं मिलती है।

दाल पीसने की चक्की के लिए विकसित नई तकनीक के फलस्वरूप अच्छी पैदावार होती है, कार्यविधि में समय कम लगता है और कार्यविधि पर होने वाले खर्चे भी कम होते हैं। इस कार्यविधि से तैयार की गई दाल का प्रोटीन मूल्य, आकार, खाना पकाने की गुणवत्ता तथा भण्डारण क्षमता बेहतर होती है। बाहरी आबो–हवा के कारण साल भर तक इसकी गुणवत्ता पर कोई असर नहीं पड़ता।

इसमें किसी प्रकार के रसायन का इस्तेमाल नहीं किया जाता और यह प्रक्रिया पूरी तरह स्वचालित व स्वास्थकारी है। जमीन व इमारत बनाने के लिए भी बहुत थोडी सी जगह की जरूरत होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

पुरानी तकनीकों की तुलना में दाल की पैदावार में 3 से 5 प्रतिशत का इजाफा होता है। प्रोटीन से भरपूर इसकी उत्तम (परका) गुणवत्ता मौजूदा 55–58 प्रतिशत से 20 प्रतिशत अधिक हो गई है। इस प्रकार अधिक पोषक दाल का उपभोग किया जा सकता है। इस उपकरण का इस्तेमाल करने से मौजूदा समय की अपक्व दालें (तूअर, मून, रयूड आदि) लगभग 5 से 7 दिन में पक जाती हैं। प्रसंस्करण समय भी घट कर 2 दिन रह जाता है। इस प्रकार मूल्यवान पूंजी, जगह और दरों में उतार–चढाव से बचत

होती है। अपक्व दालों से पक्व दाल बनाने की प्रक्रिया के लिए चक्की में खाने का तेल मिलाया जाता है जिसकी बाजार में बहुत कमी है। इस नई तकनीक के कारण तेल की खपत में 60–80 प्रतिशत की बचत होती है। इस प्रक्रिया से बिजली की भी बचत होती है। इंधन की खपत में 35 से 50 प्रतिशत बचत होती है। तेल डाल कर मशीन चलाने से दाने एक बार में तेजी से पूरी तरह खिल जाते हैं। बारंबार रोलिंग प्रक्रिया को (रगडने/घिसने) न दोहराने से धूल प्रदूषण लगभग न के बराबर हो जाता है। इस प्रक्रिया से प्राप्त दाल सभी प्रकार, जैसे कि तेज कोर, रंग, चमक, आकार, पकाने में गुणवत्ता तथा प्रोटीन मूल्य आदि में उत्तम होती हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

दाल चक्की उद्योग इस नई तकनीक को अपनाने के लिए अतिसंवेदनशील था – परंतु बाद में इसे पूरी तरह ग्रहण किया।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि क्षेत्र के उन्नत औजार

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री जंयत एच वाडेकर
अनुभव	15 साल
कार्य क्षेत्र	वाडा, थाणे, महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	1000
कर्मचारियों की संख्या	5
संपर्क विवरण	ए.पी. वाडा, जिला – थाणे, महाराष्ट्र – 421303, फोन नः 02526.650355 मोबाइल नः 09226728101

बिजनैस मॉडल

श्री वाडेकर को कृषि का 15 साल से ज्यादा का अनुभव है। वह छोटे पैमाने पर एक कर्मशाला चलाते हैं और उन्होंने कृषि में काम आने वाले, आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले कुछ औजार बनाएं हैं। प्रत्येक माह वह प्रत्येक औजार की 20 से 40 यूनिट बेच लेता है जो ₹ 25 से 60 लागत में तैयार होते है।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक कृषि औजारों के कारण बहुत सी शारीरिक चोटें आ जाती हैं। उनका इस्तेमाल करने में भी कठिनाई होती है जैसे हाथ से छूट जाना, अधिक ताकत की जरूरत, कार्यकाल कम होना और रखरखाव में अधिक समय लगना आदि। इन समस्याओं से निजात पाने और धान की खेती के लिए वास्तव में अपेक्षित औजारों का पता लगाने के लिए उक्त किसान ने कुछ औजारों को विकसित किया है। इन औजारों में इस्तेमाल की गई स्टील की गुणवत्ता बेहतर व मजबूती अधिक है। इन औजारों का वजन पारंपरिक औजरों की तुलना में कम है।

नवाचार/तकनीक का असर

इन औजारों को संभालना आसान है और इनको चलाने में कम प्रयास लगता है। हाथ से काम करने की गति में बहुत तेजी आ जाती है जिससे समय की अत्याधिक बचत होती है। चूंकि औजारों को स्वयं तैयार किया जाता है अतः औजार को बदलने की अपेक्षा किसी भी टूटे हुए पुर्जे को आसानी से बदला जा सकता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इन औजारों को बनाने के लिए किसान उससे मदद मांगते हैं। इन औजारों को वह प्रचार के लिए किसानों को मुफ्त में मुहैया कराता है।

उत्पाद चित्र

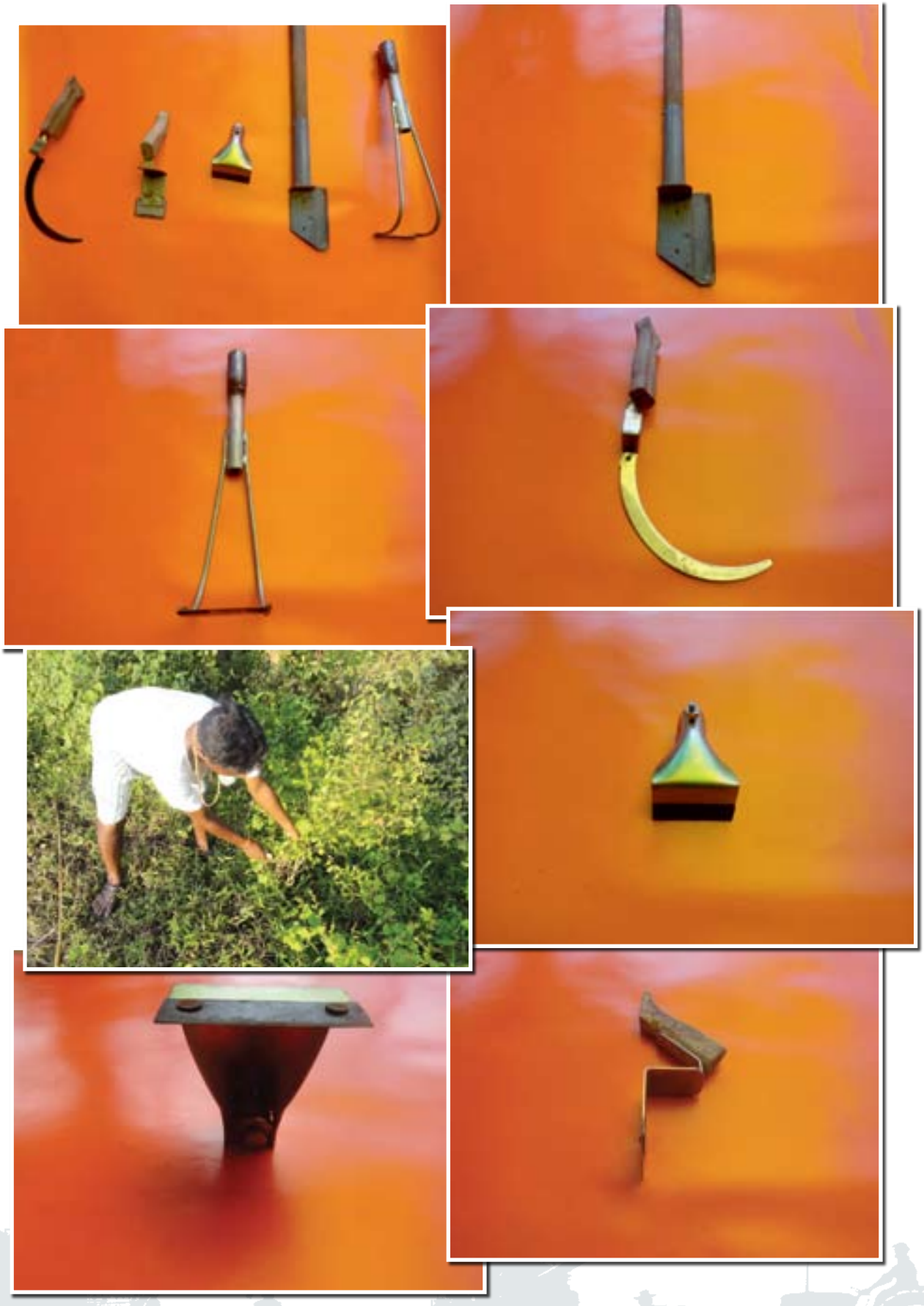

नवाचार का सारांश

क्रांति स्प्रे पंप

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मोहन लांब
अनुभव	48 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	550 प्रति वर्ष
विस्तार	30 से 40 यूनिट
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	गांव – वाडप, डाकखाना – चिंचपुर, तालूका – धारूड, जिला – बीड, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09689984518

बिजनैस मॉडल

प्रत्येक पंप की लागत लगभग ₹ 1300 है। वह एक साल तक पंप के रखरखाव की मुफ्त सेवा भी प्रदान करता है और एक साल के बाद काम के अनुसार पैसे लेता है। श्री मोहन लांब किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

झोले जैसा पारंपरिक स्प्रेअर इस्तेमाल करने में बहुत भारी और बेअसर होता है। अपेक्षित दबाव बनाए रखने में यह पूरी तरह असमर्थ होता है इसलिए पंप इस्तेमाल करने में श्रम व समय अधिक लगता है। अपेक्षित दबाव पाने के लिए बहुत सी सरकारी एजेंसियों ने दोहरी नोक वाली प्रणाली की सिफारिश की है परंतु इससे पूरा स्प्रे नहीं हो पाता।

श्री मोहन लांब ने 'क्रांति स्प्रे' नामक तीन गियर वाले पंप को डिजाइन करके इन सभी समस्याओं का हल निकालने का प्रयास किया है। इसमें कम लागत वाली शोधन इकाई है जिसकी मरम्मत व रखरखाव करना आसान होता है। इस स्प्रेअर का हैन्डल लम्बा और दबाव चैम्बर काफी बडा है और इसके साथ दोहरी नोक वाला भल्भ भी लगाया हुआ है।

नवाचार/तकनीक का असर

क्रांति स्प्रे पंप किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। आज तक इसे 300 किसान खरीद चुके हैं और लगभग 1000 किसान इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। इसकी रखरखाव लागत कम और इस्तेमाल करने में आसान है। स्प्रे करने की क्षमता बढ जाने से माल की लागत कम हो जाती है। इस उपकरण की बिक्री के फलस्वरूप किसान को ₹ 12,000 की अतिरिक्त आमदनी हुई है। यह पंप दिन में लगभग तीन घंटे की बचत करता है और प्रति दिन 5 एकड के क्षेत्रफल में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है जिससे कि 30 से 40 प्रतिशत लाभ मिल जाता है। मजदूरों की जरूरत 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। एक सामान्य पंप 2 एकड भूमि की सिंचाई कर सकता है जबकि क्रांति पंप उतने ही समय में 4 एकड भूमि की सिंचाई करने में सक्षम है। पानी के इस्तेमाल में 30 से 40 प्रतिशत की कमी आ जाती है। चूंकि इस पंप से स्प्रे करना बहुत ही फलोत्पादक है इसलिए इससे कीटनाशकों अथवा कीटनाशक दवाओं में 30 से 40 प्रतिशत तक बचत होती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कच्चे माल की उपलब्धता और उसकी पूर्ति, वित्तीय समर्थन।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गन्ने की खेती को बेहतर ढंग से जोतने के लिए सब सॉयलर का निर्माण

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान स्टेशन (RSRS) नवसरी कृषि विश्वविद्यालय
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान स्टेशन, (RSRS) नवसरी कृषि विश्वविद्यालय, नवसरी, गुजरात, फोन न.: 02637 282136, ई–मेलः sugarnau@gmail.com डा॰ डी.यू.पटेल (09725055214), ई–मेलः drdhansukhpatel@yahoo.in डा॰ एस.सी. माली (09725018791), ई–मेलः drshaileshmali@yahoo.in

बिजनैस मॉडल

वे सब सॉयलर का निर्माण करके सहकारी व कृषि संस्थाओं को बेचते हैं। इस उत्पाद की विक्रय लागत ₹ 10,000 से ₹ 12,000 तक होता है। इस उत्पाद का विक्रय नवसरी कृषि विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान केंद्र (RSRS) द्वारा किया जाता है।

नवाचार का विवरण

इस उपकरण का इस्तेमाल खेत में गहराई से हल चलाने के लिए किया जाता है। किसानों द्वारा सामान्य रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले पारंपरिक हल अधिक गहराई से जुताई नहीं कर पाते। गहराई से की गई जुताई के कारण पानी का रिसाव नीचे तक होता चला जाता है और पानी का बहाव भी बेहतर ढंग से हो जाता है। गन्ना व धान जलग्रस्त फसलें हैं। जलग्रस्त जमीन कमजोर होती है। बरसाती पानी से जमीन के नीचे वाले जरूरी लवण नष्ट हो जाते हैं। गहराई से हल जोतने के फलस्वरूप जड़ें जमीन के भीतर काफी गहरी चली जाती हैं जिससे कि फसलें जमींन से अधिक पोषक तत्व प्राप्त कर लेती हैं और मिट्टी पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखने के कारण भूमि के कटाव को रोकने में सहायक भी होती हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

इस उपकरण से हल चलाने पर मिट्टी नरम हो जाती है और उसकी शुष्कता खत्म हो जाती है। अन्य परिस्थितियां समान होने पर सामान्य रूप से हल चलाने की अपेक्षा इस उपकरण से खेत में हल चलाने से 10 से 15 प्रतिशत अधिक पैदावार मिलती है। इससे लगभग 15 से 20 टन प्रति हैक्टेयर (अथवा ₹ 37,500 से ₹ 50,000 प्रति हैक्टेयर) पैदावार में वृद्धि हो जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

दोहरे मीडिया स्प्रे के साथ नवाचारी स्प्रे पंप

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री बोरास्ते संपतराव वी
अनुभव	6 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	1 करोड प्रति वर्ष
विस्तार	200 पंप प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	15
संपर्क विवरण	पींपलगांव, राष्ट्रीय मार्ग के सामने, नासिक मोबाइल न.:. 09923588535

बिजनैस मॉडल

स्प्रे पंप का उत्पादन व बिक्री। वह एक साल के लिए मुफ्त परामर्श और रखरखाव सेवा प्रदान करता है।

नवाचार का विवरण

श्री संपतराव ने स्प्रे पंप का निर्माण किया है जिसका इस्तेमाल सभी प्रकार की फसलों के लिए किया जा सकता है। इस प्रणाली के साथ रसायन टैंक व गर्द हटाने का पंखा लगा होता है जिससे दोनों तरह के मीडिया से स्प्रे किया जा सकता है। स्प्रे पंप को ट्रैक्टर के साथ जोडा जा सकता है। यह 200 से 1000 लीटर की क्षमता वाले टैंक के साथ उपलब्ध होते हैं। स्प्रे पंप का इस्तेमाल सभी प्रकार की फसलों के लिए किया जाता हैं परंतु इसे मुख्य रूप से अनार व अंगूर की फसलों के लिए डिजाइन किया गया है।

इसमें दोनों प्रकार की स्प्रे सामग्री–तरल व पाउडर, का इस्तेमाल करने का विकल्प होता है जिससे इसकी कार्यक्षमता में काफी वृद्वि हो जाती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस पंप का इस्तेमाल करके किसान एक दिन में 20 एकड से अधिक कृषि क्षेत्र में स्प्रे कर सकते हैं। इस जबरदस्त गति के कारण समय व श्रम की बचत होती है। इससे लगभग 6 मजदूर–घंटे प्रतिदिन की बचत होती है। इसके कारण लगभग 50 प्रतिशत श्रम की बचत होने की संभावना है। इसके फलस्वरूप अन्य प्रकार की लागत में ₹ 160 प्रति एकड़ तक की बचत हो जाती है। इसके लिए बहुत ही मामूली रखरखाव की जरूरत होती है।

समान रूप से स्प्रे करने से आयातित गुणवत्ता वाले फल मिल सकते हैं जिसके फलस्वरूप शीत–गोदामों व आस–पास के गांवों में शराब फैक्टरियों की संख्या में भारी वृद्धि होने लगती है। इस पंप के कारण 30 से 40 प्रतिशत तक की लागत बच जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

श्री संपतराव के सामने सबसे बडा मुद्दा है, उत्तम योग्यता (ITI Grade) वाली मानवशक्ति की कमी। कुशल कारीगरों की कमी होने के कारण वे आसानी से नहीं मिलते।। हर बार काम करते हुए निरंतर गुणवत्ता बनाए रखना श्री संपतराव के सम्मुख सबसे बडी चुनौती है। उसने अनुसंधान एवं विकास के क्रियाकलापों में बहुत अधिक समय लगाया है और काफी मेहनत भी की हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बिजली चालित कृषि औजार

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री इशाभाई हरि माधविया
अनुभव	4 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 14 लाख
विस्तार	12 पंप प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	5
संपर्क विवरण	डाकखाना – संदरद, तालुक – महुआ, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09924314140

बिजनैस मॉडल

नवाचारक बाजार में ₹ 1,20,000 प्रति पंप के हिसाब से पंप बिक्री करता है। वह अपने पंप को ₹ 30 प्रति घंटे की दर से ठेके पर भी देता है।

नवाचार का विवरण

उसने समान दर से रसायन व पाउडर स्प्रे करने के लि मोटरबाईक से चलने वाली स्प्रे मशीन का निर्माण किया है। यह विशेषतौर पर छोटे किसानों के लिए किफायती विकल्प है। वे कम पूंजी निवेश करके इससे अपने छोटे आकार के खेत में स्प्रे कर सकते हैं और इसका रखरखाव आसान होता है। इससे पहले इसमें पूंजी निवेश अधिक होने के कारण छोटे किसान इतने मंहगे विकल्प का इस्तेमाल नहीं कर पाते थे और वैसे भी खेत का आकार छोटा होने के कारण ऐसा उपकरण काम नहीं आता था इसलिए सौदा घाटे का होता था।

नवाचार/तकनीक का असर

इस पंप से प्रयुक्त क्षेत्र में प्रतिदिन 25 एकड से अधिक क्षेत्र में स्प्रे किया जा सकता है जिसके फलस्वरूप ₹ 8,000 प्रति एकड का लाभ मिल जाता है। इसके कारण आठवें हिस्से तक मज़दूरी तो कम होती ही है साथ ही प्रतिदिन 8 घंटों की बचत भी हो जाती है तथा 100 लीटर प्रति एकड़ पानी का इस्तेमाल कम हो जाता है। इस नवाचार ने केंद्र बिंदु बन कर छोटे किसानों के समूचे वर्ग को प्रभावित किया है। हाल ही में इस उपकरण के बारे में स्थानीय किसानों में काफी जागरूकता आई है और जहां कहीं भी यह बात बताई जाए, यह सच है कि इसमें कुशल मज़दूरों को रोजगार देने की भी क्षमता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

वह स्वयं अपने घर से इसका प्रचार करता है क्योंकि इस पंप के बारे में लोगों को ज्यादा भरोसा नहीं है। अतिरिक्त पूँजी की कमी भी एक समस्या है। चूंकि यह पंप बिजली से चलता है और बिजली न होने के कारण कभी कभी यह समस्या पैदा कर देता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पौधों के लिए बिना छत वाले हरित घर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	(ARTI) उपयुक्त ग्रामीण तकनीक संस्थान
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	गणेश नगर (अलगुडेवाडी), फलटन बारामति रोड, तालूक – फलटन जिला – सतारा– 415523, महाराष्ट्र, फोन नः 02166 225200

बिजनैस मॉडल

स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल करके बनाए गए इस प्रकार के हरित घरों की लागत केवल ₹ 30 प्रति वर्ग मीटर आती है। बहुत से किसानों को इस प्रकार की तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया है। इस ARTI व अन्य प्रकार की तकनीकों के लिए ₹ 750 प्रतिदिन के हिसाब से प्रशिक्षण शुल्क तथा ₹ 1500 परामर्श शुल्क सहित अतिरिक्त यात्रा खर्चे वसूल करता है। आज तक इस प्रशिक्षण के लिए लगभग 250 किसानों को पंजीकृत किया गया है। DST (विज्ञान व तकनीक विभाग) ने भी इस परियोजना को वित्तीय सहायता दी है। ARTI बहुत से तकनीकी नवाचारों में शामिल है जो किसानों के विकास में मदद करते हैं।

नवाचार का विवरण

भारत में विभिन्न किस्मों की सब्जियों व अन्य फसलों का यह मॉडल हरित घर है। अधिकांशतः उपर से बंद पारंपरिक हरित घरों को केवल विदेशी सब्जियों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसके पीछे मूलभूत सोच है कि पूरे दिन पौधों को बढने के लिए सुबह से शाम तक ज्यादा कार्बन डॉयओक्साइड और धूप मिल सके। इसलिए ऐसे पौधों की पैदावार उपर से बंद हरित घरों में होना मुश्किल होता है। इस प्रकार के उपर से बंद हरित घर बनाने के लिए सबसे पहले खेत को 10 मीटर x 10 मीटर के दो छोटे–छोटे भागों में बांट देना चाहिए और जमीन के इन छोटे–छोटे हिस्से के चारों ओर बांस के डंडों के सहारे से इनके सीमारेखा के चारों ओर प्लास्टिक की बाड लगाई जानी चाहिए। जमीन को छोटे–छोटे खंडों में विभाजित करने का कारण है कि खेत में बडे तीव्र वेग से आने वाली संकटपूर्ण हवाओं/आंधियों के असर को कम किया जा सके। हरित घर के ढांचे का निर्माण करने से पूर्व यह अनिवार्य है कि स्थायीतौर पर उभरी हुई क्यारियां बनाईं जाएं क्योंकि बाड लगाने के बाद इन उभरी हुई क्यारियों को बनाने के लिए अपेक्षित सामग्री अंदर पहुंचाने में मुश्किल होगी।

नवाचार/तकनीक का असर

पारंपरिक उत्पादन की तुलना में इस प्रकार की खेती में 1.5 से 2 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है। चूंकि उभरी हुई क्यारियों में हल जोतने आदि की आवश्यकता नहीं होती इसलिए दो फसलों के बीच फसल के लिए जमीन तैयार करने में समय भी नष्ट नहीं होता और साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित होता है कि इस काम में मज़दूरों की बहुत कम जरूरत पड़ती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कुशल कारीगरों की कमी। दो वर्षो के बाद पोलीथीन का ह्रास हो जाता है और उसे बदलने की जरूरत पड़ती है। वर्तमान में पोलीथीन के विकल्पों की खोज की जा रही है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

त्रिशूल ट्रैक्टर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	हरेश भाई पटेल
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 6,90,00,000 प्रति वर्ष
विस्तार	300 ट्रैक्टर प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	40
संपर्क विवरण	त्रिशूल ट्रैक्टर प्राइवेट लिमिटेड, घोघा वडार रोड, गोंडल, राजकोट मोबाइल न.: 09879225000

बिजनैस मॉडल

नवाचारक इन ट्रैक्टरों को ₹ 2,30,000 प्रति ट्रैक्टर की दर पर बेचता है। वह 1 साल के लिए मुफ्त रखरखाव सेवा भी प्रदान करता है। वह अन्य पांच लोगों के साथ सांझेदारी करके इस काम को करता है। उसकी अपनी क्रय–विक्रय प्रणाली है, जिसके द्वारा वह अपने उत्पाद का प्रचार करता है और उसने अलग–अलग जिलों में अपने डीलर नियुक्त किए हुए हैं। वह राजकोट, अहमदाबाद व जूनागढ में होने वाले 'किसान मेलों' में भी भाग लेता है।

नवाचार का विवरण

श्री हरेष भाई पटेल ने स्थायी रूप से ट्रैक्टर खरीदने में छोटे व मध्यम किसानों के सामने पेश आने वाली कठिनाईओं को देखते हुए एक कृषि यंत्र की जरूरत महसूस की। इस उद्देश्य से उसने एक छोटे आकार के ट्रैक्टर का विकास किया जो कि स्थायी ट्रैक्टर की तरह सभी काम कर सकता है और छोटे आकार के खेतों में इस्तेमाल करने में किफायती भी है। नए मॉडल में आधुनिक व उच्च तकनीकी प्रकार की सभी विशेषताएं हैं जैसे स्वचालित कर्षण नियंत्रक द्रव–चालित प्रणाली आदि। उसने छोटे किसानों के लिए 10 एचपी का ट्रैक्टर इजाद किया है। इस ट्रैक्टर की इंधन क्षमता काफी बेहतर है और यह किफायती भी है। यह मुख्य रूप से छोटे किसानों और बागवानी विकसित करने वालों के लिए उपयुक्त है क्योंकि अपने आकार के बावजूद इसमें एक एकड प्रति घंटे के हिसाब से काम करने की क्षमता है। यह छोटा ट्रैक्टर अपने आकार के बावजूद उलट–पुलट कर खेत जोतने, खेती करने, छेनी वाला हल, भार लादने, लठ्ठा, फसल गहाने, गाडी खींचने जैसे सभी काम करने में सक्षम है और यह जनरेटर सैट का भी काम कर सकता है। इस ट्रैक्टर का परीक्षण CFMITI (केंद्रीय कृषि यंत्र प्रशिक्षण व परीक्षण संस्थान) द्वारा किया गया है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस ट्रैक्टर ने छोटे किसानों और कृषि मशीनीकरण के फासले को पाट दिया है। मांग में वृद्धि इसकी कार्यसाधकता की गवाही देते हैं। छोटे किसान अब हाथ से किसानी करने के बदले इस ट्रैक्टर का इस्तेमाल कर सकते हैं जिसके फलस्वरूप 5 घंटे प्रतिदिन समय की बचत भी होती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस ट्रैक्टर की मांग लगभग 3000 ट्रैक्टर प्रति वर्ष है परंतु वित्तीय मज़बूरी के कारण वे केवल 300 ट्रैक्टरों का ही निर्माण कर पाते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मिनी ट्रैक्टर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	कैप्टन ट्रैक्टर प्राइवेट लिमिटेड
अनुभव	17 साल
कार्य क्षेत्र	राजकोट
कुल बिक्री	₹ 30 करोड (मिनी ट्रैक्टर) 35 करोड कुल मिलाकर
विस्तार	1200
कर्मचारियों की संख्या	150
संपर्क विवरण	वेरवाल (शारपर) पूर्व, पडावला रोड, तालुक – कोटडा संगनी, राजकोट – 360024, गुजरात, भारत फोन नः 02827252547

बिजनैस मॉडल

इस यूनिट ने 4500 क्षमता वाली उत्पादन यूनिट की स्थापना की है। मिनी ट्रैक्टर का मूल्य ₹ 2,50,000 है। कम्पनी ने पिछले वर्ष भारतीय बाजार में 1200 मिनी ट्रैक्टरों की बिक्री करके 30 करोड का राजस्व प्राप्त किया है।

नवाचार का विवरण

कैप्टन ट्रैक्टर प्राइवेट लिमिटेड को पहले 'आशा एक्जिम प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से जाना जाता था, इसकी स्थापना 1994 में राजकोट के किसान श्री जी.टी.पटेल व श्री एम.टी.पटेल ने की थी। इस कंपनी ने 1998 में मिनी ट्रैक्टर का विकास करना आरंभ कर दिया था जिसे छोटे व मध्यम किसान खरीद सकते थे। इसके नवीनतम मॉडल में विशाल व उच्चतम एच.पी. आधुनिक ट्रैक्टर की सभी मूल विशेषताएं व लक्ष्ण हैं। यह आकार में छोटा है परंतु सभी प्रकार के कृषि कार्य करने में सक्षम है जिसे सामान्यतः उच्चतम एच.पी.ट्रैक्टर द्वारा किए जाते हैं जैसे फसल के लिए जमीन तैयारी करना, बुआई, अंतर–खेती, सिंचाई, कटाई, कटाई बाद के कार्य और परिवहन आदि। ट्रैक्टर का भार सामान्य मिट्टी–रोडी बिना 845 किलोग्राम है। इसके पेमाइश में लम्बाई 2286 एमएम, चौड़ाई 1016 एमएम/1168 एमएम, उंचाई 1955 एमएम (निकास नली सहित),पहिए का तला 1550 एमएम, जमीन की सतह से उंचाई 260 एमएम और ट्रैक की चौड़ाई 812 एमएम/965 एमएम (पिछले पहिए) और ट्रैक की चौड़ाई 902 एमएम (अगले पहिए)। इसका निर्माण राजकोट में लगाया गया है जिसमें आधुनिक औजारों एवं उपकरणों, उच्च कोटि के यंत्र, अनुसंधान व विकास सुविधा और प्रशिक्षित व योग्य इंजीनियरों द्वारा इसका संचालन किया जाता है ताकि ट्रैक्टरों का उत्पादन सही ढंग से हो सके। अन्य ट्रैक्टरों की तुलना में कैप्टन मिनी ट्रैक्टर लगभग 40 प्रतिशत अधिक इंधन की खपत करता है। इसके इंजन की जांच एवं परीक्षण ARIA द्वारा प्रदूषण नियंत्रण नियमानुसार किया गया है।

नवाचार/तकनीक का असर

छोटे ट्रैक्टर छोटे किसानों के लिए वरदान हैं – क्योंकि यह दस्ती तकनीकों की निष्फलता और बडे ट्रैक्टरों की अलाभकारी लागत के बीच की अत्याधिक महत्वपूर्ण दूरी को पाट लेते हैं। एक छोटे ट्रैक्टर का इस्तेमाल इसकी क्षमता से औसतन 80 प्रतिशत तक किया जा सकता है जबकि बडे ट्रैक्टर छोटे किसानों के लिए अपनी संपूर्ण क्षमता से केवल 20 प्रतिशत तक ही उपयोगी होते हैं।

पहचान/इनाम

- उत्तम उद्यमशीलता के लिए 2008 में – राष्ट्रीय पुरस्कार
- उत्तम अनुसंधान व विकास कार्यों के लिए 2008 में – राष्ट्रीय पुरस्कार

मुद्दे

छोटे किसान छोटे ट्रैक्टरों की गुणवत्ता पर कम कीमत पर ज्यादा ध्यान देते हैं – उन्हें दीर्घाकालीन स्थिरता के लाभों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।

उत्पाद चित्र

CAPTAIN

Dhadkan

भारत सरकार
MSME
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय
राष्ट्रीय पुरस्कार – 2008
उत्कृष्ट उद्यमिता
श्री मगनभाई टपुभाई पटेल
मै. कैप्टेन ट्रैक्टर्स प्राइवेट लिमिटेड
राजकोट, गुजरात
Government of India
Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises
NATIONAL AWARD - 2008
Outstanding Entrepreneurship
Micro & Small Enterprises (Manufacturing)
In recognition of outstanding performance
the Third Prize is awarded to
Shri Maganbhai Tapubhai Patel
M/s. Captain Tractors Pvt. Ltd.
Rajkot, Gujarat

नवाचार का सारांश

खर पतवार हटाने की मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	प्रफुल्ल भाई पटेल
अनुभव	2 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 52,00,000 प्रति वर्ष
विस्तार	80 मशीने प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	कृषि बिजनैस कारपोरेशन, रमण फार्म वासाड, आनंद गुजरात मोबाइल न.: 09898069418

बिजनैस मॉडल

नवाचारक ने पिछले साल ₹ 65,000 प्रति मशीन की दर से 80 मशीनों की बिक्री की। उसने किसानों को मुफ्त सलाह और एक साल के लिए मुफ्त रखरखाव सेवा भी प्रदान की। आज वह मशीन की बिक्री के लिए राज्य के बहुत से व्यापारियों के संपर्क में है। अपने उत्पाद की बिक्री बढाने के लिए वह ऑनलाइन मार्केटिंग का काम भी करता है।

नवाचार का विवरण

उसने शुष्क व अर्ध शुष्क खेती से खरपतवार निकालने की किफायती मशीन का नवाचार किया है ताकि अधिक पैदावार मिल सके। इन इलाकों में पानी और मज़दुरों की समस्या होती है। इस समस्या का असरदार हल निकालने के लिए ऐसे इलाकों में बहुत से किसानों ने खरपतवार निकालने वाली इस मशीन को अपना लिया है। हालांकि यह समय लेने वाली प्रक्रिया है और इसमें मज़दूरी करने की भी काफी जरूरत होती है। इस मशीन से खरपतवार निकालना बहुत आसान हो जाता है। खरपतवार निकालने से न तो जंगली घास पनपती है और न ही पानी भाप बन कर उडता है– जिसके फलस्वरूप पैदावार में 30 प्रतिशत तक की वृद्धि हो जाती है। इस मशीन के कारण खरपतवार निकालने की संपूर्ण लागत में भी कमी आती है। यह मशीन खासतौर पर उन किसानों के बीच अधिक लोकप्रिय हो रही है जिनके पास पानी के भरोसेमंद साधन नहीं हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

इस मशीन का रखरखाव करना बहुत आसान है और शुष्क इलाकों में फसल को घास–पात से ढक कर रखने से पानी के वाष्पित होने पर रोक लगने से पानी की बचत होती है जो कि ऐसे शुष्क इलाकों के लिए बहुत लाभकारी होता है। इससे मज़दूरी में एक छठे और समय में लगभग 4 घंटे प्रतिदिन की बचत होती है।

पहचान/इनाम

- राज्य सरकार द्वारा कृष्क रूसक पुरस्कार दिया गया।

मुद्दे

किसानों के लिए इस तकनीक को अपनाने में मशीन की लागत आडे आती है। नवाचारक चाहता है कि सरकार इस नवाचार पर कुछ आर्थिक मदद करे।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

संशोधित हल्दी पिसाई की कार्यविधि जिससे माल और बिजली की बचत होती है

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री वी.वी. घूरे
अनुभव	30 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 4.5 करोड
विस्तार	12 यूनिट
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	यंग टैक्नाक्रैटस प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट न.: 45, सैक्टर–1–ए, सिडको उद्योग, एरोली, नवी मुम्बई – 400708. फोन न.: 022 26151023, मोबाइल न.: 09819160599 ई–मेलः vasudevghurye@gmail.com

बिजनैस मॉडल

नवाचारक इस बिजनैस को मुख्यतः मौजूदा उपयोगकर्ताओं की सिफारिश से करता है। वह बडे पैमाने पर ऑनलाइन व व्यापारिक पत्रिकाओं में विज्ञापन देकर भी करता है।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक पिसाई प्रक्रिया में हथौडा चक्की (जिसमें 80 प्रतिशत से अधिक हल्दी पिसी जाती है) लगी होती है। हथौडा चक्की बहुत ही अपरिष्कृत तकनीक है जिसमें हल्दी की गांठों पर जोर से चोट मारकर पीसा जाता है। इससे पिसने पर तापमान (80°C तक) बढ जाता है। इसके लिए बहुत ज्यादा रखरखाव की जरूरत होती है क्योंकि इस प्रकार से पिसाई करने पर टूट–फूट अधिक होती है।

नवाचारक ने हथौडा चक्की के स्थान पर पिन–चक्की पेश की है। उसने पिन–चक्की डिजाइन करके इस कार्यविधि के लिए समन्वित किया है। यह चक्की कम तापमान (50°C से उपर नहीं जाता) पर काम करती है। इसके लिए कम रखरखाव की जरूरत पड़ती है और पारंपरिक कार्यविधि की तुलना में यह बिजली की खपत भी काफी कम करती है। इस उपकरण का इस्तेमाल करने से उत्पादन और बचत दोनों ही बहुत बेहतर हो जाते हैं। वर्तमान में वह 25 लाख (300 किलोग्राम प्रति घंटे का मॉडल) से 75 लाख (एक टन प्रति घंटे का मॉडल) की कीमत पर मशीन की बिक्री करता है। मशीन को 24 घंटे चलाया जा सकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

पारंपरिक पिसाई चक्की में उच्च तापमान के कारण पाउडर में से तेल और गंध दोनों का ह्रास हो जाता है। इस संपूर्ण कार्यविधि में तेल जल जाने के कारण लगभग 9 प्रतिशत (वजन) कम हो जाता है परंतु इस कार्यविधि से केवल 2 प्रतिशत वजन कम होता है। इस प्रकार सीधे–सीधे 7 प्रतिशत माल में बचत होती है। मान लें कि 300 किलोग्राम प्रति घंटे की क्षमता वाली मामूली केवल 12 घंटे (औसतन 24 घंटे चलने वाली चक्की के बदले) चलाने पर एक दिन में 252 किलोग्राम की बचत कर सकती है। यदि पिसी हुई हल्दी की कीमत ₹ 150 प्रति किलो हो तो एक साल में ₹ 37,800 की बचत हो सकती है। चूंकि तापमान कम होता है इसलिए पाउडर में तेल और गंध कुदरती मात्रा बनी रहती है। इससे बाजार में 5 से 10 प्रतिशत का मुनाफा हो जाता है। इसके अतिरिक्त बिजली की खपत में लगभग 30 प्रतिशत की निश्चित बचत होती है क्योंकि हथौडा चक्की के मुकाबले पिन–चक्की बिजली की खपत कम करती है। इस उत्पाद में किया गया निवेश एक साल में ही वापिस मिलने की संभावना होती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

हल्दी की गांठों में मिली कोई दूसरी चीज़ (उदाहरण के लिए लोहे के कील) इस कार्यविधि के लिए एक चुनौती है जो कि इस मशीन को पूरी तरह नष्ट कर सकती है। इससे बचने के लिए उसने सलाह दी है कि इस मशीन में पीसने के लिए हल्दी की गांठों को डालने से पहले चुम्बकीय विभाजक का इस्तेमाल किया जाए। दूसरी चुनौती है प्रचार। अच्छा उत्पाद होने के बावजूद इसने अभी तक बाजार में लोकप्रियता हासिल नहीं की है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बहुउद्देशीय यंत्र चालित बुआई मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	धरती एग्रो इंजीनियरिंग
अनुभव	15 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक
कुल बिक्री	₹ 6.3 करोड़
विस्तार	1500
कर्मचारियों की संख्या	165
संपर्क विवरण	सर्वे नः 35, प्लॉट नः 6, सौराष्ट्र पेपर मिल के पास, औलम्पिक पाइप के पीछे, गोंडल रोड, शापर, राजकोट – 360024, गुजरात, भारत फोन नः. 02827 252220

बिजनैस मॉडल

इस यंत्र चालित बुआई मशीन की कीमत ₹ 42,000 है और पिछले साल 2010–2011 में 1500 बुआई मशीने बेची गईं जिससे 6.3 करोड़ का राजस्व मिला। अब वे बिहार और उत्तर प्रदेश के बाजार को आकर्षित करके अपने बिजनैस को बढाने की योजना बना रहे हैं। बाजार/व्ययापार नीति में कृषि प्रदर्शनियों, समाचार पत्रों तथा जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार, रखराखाव सेवाएं समय पर सुनिश्चित करने के लिए पंजीकृत व्यापारियों के माध्यम से आपूर्ति करना शामिल है।

नवाचार का विवरण

बुआई मशीन से बीजों को बोने का काम किया जाता है – यह बीजों को जमीन में दबा कर उसे उपर से ढक देती है। इस उपकरण का इस्तेमाल करने से पूरे खेत में समान बुआई होती है, जिससे पौधों का आकार से एक जैसा होना निश्चित होता है और खेती में समानता बनी रहती है। धरती ऐग्रो ने बुआई मशीन के व्यवसाय में विशेषज्ञता हासिल करके पारंपरिक बुआई मशीन में संशोधन किए हैं ताकि अधिक लाभ मिल सके। नई यंत्र–चालित मशीन में किए गए संशोधनों के अनुसार लोहे की चादरों (जिनमें जल्दी जंग पकड़ लेता है) को बदल कर फाइबर का इस्तेमाल करना मशीन का डिजाइन बदल कर उसे प्रयोक्ता के लिए मैत्रीपूर्ण बनाना, जिसे चलाना आसान हो और सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि यह बहुविध खेती के लिए अधिक उपयुक्त है। 5 से 21 कतारों के विनिर्देशानुसार इस उपकरण का निर्माण किया गया है परंतु अन्य विभिन्न उपकरणों की तुलना में 9 कतार वाली बुआई मशीन की मांग बाजार में कहीं अधिक है। महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक के बाजार को इस मशीन ने पूरी तरह आकर्षित किया है।

नवाचार/तकनीक का असर

यंत्र चालित बहुउद्देशीय मशीन ने मज़दूरी कम करके परिचालन क्षमता में वृद्धि की है। यह भी देखा गया है कि इस उपकरण का इस्तेमाल करने से बीजों की 25 से 20 किलोग्राम प्रति एकड़ आपूर्ति कम हो जाती है, इस प्रकार उत्पादक सामग्री की लागत में भी कमी आ जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

यंत्र चालित बहुउद्देशीय बुआई मशीन खरीद पाने में छोटे किसानों को सक्षम बनाने के लिए सरकार को आर्थिक सहायता देनी चाहिए। कर्नाटक तथा आंध्रप्रदेश जैसी कुछ राज्य सरकारें इस मशीन को खरीदने पर 50 प्रतिशत की आर्थिक सहायता प्रदान कर रहीं हैं। परंतु महाराष्ट्र जैसे राज्य जहां कोई आर्थिक सहायता नहीं दी जाती वहां किसानों के पास न तो कोई साधन हैं और न ही कोई प्रोत्साहन जिस वहज से वे ऐसी यंत्र चालित व प्रभावशाली मशीन खरीद सकें। दूसरी ओर आर्थिक सहायता पर बेचे गए उत्पादों के कारण कभी कभी बिजनैस दुष्प्रभावित हो जाता है क्योंकि सरकार हमेशा कम कीमत पर खरीदती है और रईस किसान भी ऐसे उत्पाद को आर्थिक सहायता पर हासिल करने का प्रयास करते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गन्ने की कोंपल काटने की मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	सतीश भाई रावजी भाई पटेल
अनुभव	5 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	किराए से ₹ 5.5 लाख
विस्तार	1 मशीन
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	नया राजूवाडिया, राजपीपला, गुजरात, भारत मोबाइल नः 09825930112

बिजनैस मॉडल

इस उपकरण की कीमत ₹ 50,000 है। वह बाजार से इसके पुर्ज़े खरीद कर उन्हें एक–एक करके एकसाथ जोड़ता है। इस औजार का इस्तेमाल करने के पश्चात् खेती के लिए अतिरिक्त मज़दूरो की जरूरत नहीं पड़ती। इस मशीन के लिए सरकार की ओर से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं दी गई। उसने इस मशीन के पुर्ज़े खरीदने के लिए अपनी पूंजी निवेश की है। वह दूसरे किसानों को परामर्श भी देता है। वह मशीन किसानों को इस्तेमाल के लिए किराए पर देता है। अब तक पिछले 100 दिनों में 60–80 किसान इस मशीन का इस्तेमाल कर चुके है।

नवाचार का विवरण

गन्ने की खेती में फसल कटाई के बाद बचे हुए ठूंठ से गन्ने की कोंपल पैदा होने लगती है। इससे किसानों को अदला–बदली किए बिना एक खेती से तीन या चार फसलें मिल जाती हैं। सतीश भाई ने ऐसे औजार को डिजाइन किया है जो गन्ने की फसल की इस प्रकार से कटाई कर सकता है कि गन्ना फिर से उसी तरह पैदा हो जैसा कि वह पहली बार पैदा हुआ था, नई फसल के लिए किसी प्रकार के अतिरिक्त सहारे की जरूरत नहीं होती। इससे पूर्व फसल की कटाई सही ढंग से न करने पर गन्ने के ठूंठ से पैदा हुई कोंपल की गुणता पहली बार लगाई गई फसल के सामान नहीं होती थी। परंतु गन्ने को इस औजार से काटने के बाद दूसरी बार पैदा हुई फसल की पैदावार पहले जैसी ही दर्ज की गई है। गन्ने के ठूंठ की कटाई के कारण खेत तैयार करने और दूसरी बार फसल लगाने की लागत में कमी आती है। गन्ने के ठूंठ की कटाई करके तीन सालों के लिए नियमित पैदावार हासिल की जा सकती है। यह मशीन गन्ने की जड़ को जमीन से पूरी तरह निकाल देती है जिससे कि अगली फसल के लिए स्वस्थ पौधे पनप सकें। दूसरी फसल की गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि पायी गई है। गन्ने के कोंपलों का सबसे बड़ा फायदा यह है कि मौसम के हिसाब से गन्ने की फसल जल्दी से पक कर तैयार हो जाती है। गन्ने के ठूंठ की कटाई के कारण खेत तैयार करने और दूसरी बार फसल लगाने की लागत में भी कमी आती है। गन्ने के ठूंठ की कटाई करके तीन सालों के लिए नियमित पैदावार हासिल की जा सकती है।

नवाचार/तकनीक का असर

गन्ने की कोंपलों की खेती की सबसे बड़ी कमी है मजदूर न मिलना। इस मशीन ने इस जरूरत को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। इसके कारण मिलने वाले फायदों को देखते हुए बहुत से किसानों ने इस तकनीक को अपनाना शुरू कर दिया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस मशीन को बनाने के लिए कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है जो कि आसानी से नहीं मिलते।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गहराई से हल चलाने के लिए सब–सॉयलर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	भरत भाई ज़ावेर भाई पटेल
अनुभव	5 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	किराए से ₹ 5 लाख
विस्तार	1 मशीन
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	डाकखाना – धोरण पारडी, तालुक – कमरेज, जिला – सुरत, गुजरात मोबाइल न.: 09824384304

बिजनैस मॉडल

इस यंत्र का निर्माण करने में लगभग ₹ 25,000 प्रति मशीन लागत आती है। श्री भरत भाई इसका निर्माण व्यापारिक उद्देश्य से नहीं करते। इसके लिए किसी प्रकार की कोई सरकारी आर्थिक सहायता नहीं मिलती। वह अन्य किसानों को इसके पुर्ज़ों को जोड़ने तथा इस्तेमाल के बारे में मुफ्त सलाह देते हैं। वह अपनी मशीन किसानों को किराए पर देते हैं और पिछले 100 दिनों में 25–30 किसान इस मशीन का इस्तेमाल कर चुके हैं।

नवाचार का विवरण

बहुत वर्षों के अनुभव के बाद श्री भरत भाई ने खेत जोतने के लिए नए किस्म का यंत्र डिजाइन किया है। इससे खेत में गहराई से हल जोतने में मदद मिलती है। श्री भरत भाई पटेल ने इस यंत्र का निर्माण स्थानीय तौर पर किया है। उसने इस यंत्र को इस प्रकार तैयार किया है कि इसका इस्तेमाल ट्रैक्टर के साथ भी आसानी से किया जा सकता है और किसी भी ऑटोमोबाइल दुकान में जाकर इसके पुर्ज़ों को आसानी से एक साथ जोड़ा जा सकता है। इससे खेत को काफी गहराई से जोतने पर निचली सतह की मिट्टी उपर आ जाती है। इसके कारण जमीन अधिक उपजाऊ बन जाती है। और पौधों के विकास में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस नए उपकरण के नवाचार ने भूमि कटाव को कम करने में मदद की है। इससे खेत जोतने पर पानी जमीन के नीचे गहराई में चला जाता है जिससे ज़मीन में जल का पुनर्भरण हो जाता है और इस प्रकार भावी फसलों के लिए पानी की और ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती। जमीन की उवर्रक शक्ति में पूरी तरह से सुधार होता है जिसके फलस्वरूप फसल की पैदावार भी बढ जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस प्रोजेक्ट के विस्तार में वित्तीय कठिनाईयां आड़े आती हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बुआई मशीन व हल जोतने संबंधी औजारों में सुधार

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अभय मलैया
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	मध्य प्रदेश
कुल बिक्री	₹ 3 करोड़
विस्तार	4000 प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	55
संपर्क विवरण	मलैया ऐग्रो इंजिनियरिंग, 14/ए, सैक्टर डी–1, सांवेर रोड, औद्योगिक क्षेत्र, इंदौर, मध्य प्रदेश मोबाइल न.: 09893124686

बिजनैस मॉडल

मलैया ऐग्रो इंजीनियरिंग निर्माण यूनिट अपने उत्पाद के लिए खुदरा इकाई के रूप में भी काम करते हैं। उनके उत्पाद की मांग मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र से आती है। मध्य प्रदेश में उनकी दो और खुदरा इकाईयां हैं।

नवाचार का विवरण

लम्बी धारीदार बेलनाकार बुआई मशीन की शुरूआत भारत में 1960 में हुई उसके सभी पुर्ज़े ढलवां लोहे से बने होते हैं। उत्पादकता में वृद्धि होते देख लोगों ने बुआई मशीन से फसलों में उर्वरक बिखरने शुरू कर दिए क्योंकि इससे बीज भी बहुत कम बर्बाद होते है। उर्वरकों के अधिक इस्तेमाल से मशीन के रोलर में जंग लग जाता था जिससे कि मशीन तब तक काम नहीं करती जब तक कि उसके जंग लगे पुर्ज़े बदल न दिया जाए। वर्ष 1998 में श्री अभय मलैया ने बुआई मशीन के लिए नाइलोन का रोलर तैयार करके समस्या का हल निकाला और मशीन को ज़ंगरोधी बना दिया जिससे कि वह बरसात के मौसम में भी काम करने लायक हो गई। काबुली चने के बीज का आकार बड़ा होने के कारण उसे बोन के लिए बड़े छेद और अधिक ऊर्जा की जरूरत पड़ती है जो कि नाइलोन की मशीन में संभव नहीं हो पाता। इसके परिणामरूवरूप नवाचारक ने स्टेनलैस स्टील का चयन किया जो जंग रोधी भी है। इस उत्पाद का इस्तेमाल करने सें 20 प्रतिशत की बचत होती है क्योंकि इस उत्पाद का कार्यकाल भी लम्बा होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

निर्माण सामग्री में बदलाव आने के कारण कुल–मिला कर उत्पाद का कार्यकाल में बढोतरी हुई और टूट–फूट में भी कमी आई।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

किसानों को इस उत्पाद में किए गए सुधारों के बारे में बहुत कम जानकारी है – इसलिए वे अभी भी ढलवां लोहे की मशीन का ही प्रयोग करते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बेलदार पौधों के लिए तारों की चरखी

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री कल्लो घोरसे
अनुभव	14 साल
कार्य क्षेत्र	आस पास के गांव
कुल बिक्री	लागू
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	गांव – मिलान पुर, डाकखाना – बेतुल बाजार, जिला – बेतुल, मध्य प्रदेश मोबाइल न.: 08889705796

बिजनैस मॉडल

वह इस यंत्र को केवल अपने खेत में इस्तेमाल करता है, उसने अभी तक इसका व्यवसायीकरण नहीं किया है। परंतु बेलदार किस्म की सब्जियां उगाने वाले अन्य किसान जो इस यंत्र का प्रयोग करना चाहते हैं, उन्हें वह मुफ्त सलाह देता है, यदि कहीं यात्रा करके जाना हो तो उसकी यात्रा का खर्च उस किसान द्वारा उठाया जाता है।

नवाचार का विवरण

यह मूलतः चरखी पर लिपटी हुई तारें होती हैं जिन्हें हाथ से घुमाया जाता है। इसमें एक टेबुल के उपर हैंडल सहित रोलर लगा होता है जिससे रोलर को घुमाया जाता है। सभी पुर्ज़ों को टांका लगा कर आपस में जोड़ा जाता है जो एम एस ऐंगल और छड़ों से बने हुए होते हैं। टमाटर, करेला और लौकी आदि जैसे विभिन्न प्रकार के बेलदार पौधों को बढने के लिए सहारे की जरूरत होती है। इसलिए आमतौर पर बगीचे के किनारों के साथ–साथ एम एस तार लगाई जाती है और बेलदार पौधों को इस जाली के सहारे खड़ा किया जाता है। परंतु यदि क्षेत्र बड़ा हो तो इन तारों को संभाल पाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे मामलों को देखते हुए नवाचारक ने एक सरल तरीका ढूंढ निकाला है। इस चरखी को बगीचे के एक किनारे पर जमीन में गाड़ दिया जाता है और दूसरे स्थिर सहारे के साथ बांधने के लिए तार को दूसरे किनारे तक ले जाया जाता है। तारों में अधिकतम कसाव देने के लिए चरखी को बंद करके रखा जा सकता है – समय–समय पर जब तार ढीली पड़ने लगे तब यह विशेषकर उन्हे कसने के लिए उपयोगी होता है। खेती खत्म होने के बाद तारों को वापस अगली फसल के लिए सही ढंग से लपेट कर रखा जा सकता है। कुल–मिला कर इस मशीन से तारों को खेत और खेत के बाहर संभाल कर रखना बहुत ही आसान है।

नवाचार/तकनीक का असर

तार का सेवाकाल बढ जाता है और तार लगाने और खेती के बाद संभाल कर रखने में पहले के मुकाबले लगभग आधी मेहनत करनी पड़ती है। कहा जाता है कि इस प्रकार की मशीन 10–15 साल तक चल जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

वह इस सरल नवाचार का व्यवसायीकरण करना चाहता है परंतु उसे यह नहीं मालूम कि वह किस प्रकार इसे बाजार में लाए।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

इंजन चालित स्प्रेअर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मोहन सिंह
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	₹ 3 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	गांव व डाकखाना – सधरा, जिला – एस.बी.एस नगर, नवांशहर, पंजाब मोबाइल न.: 09463692244

बिजनैस मॉडल

इस मशीन की निर्माण लागत लगभग ₹ 45,000 प्रति मशीन है। नवाचारक ने अपने इस्तेमाल के लिए ऐसी एक ही मशीन का निर्माण किया है। उसके पास खेती के लिए 13 एकड़ जमीन है जिस पर वह इस मशीन से कीनू की फसल लगाता है।

नवाचार का विवरण

उसने यह सोचा कि यदि एक लंबी पाइप पंप के साथ लगा दी जाए तो इससे अनेक काम लिए जा सकते हैं और खेती के अन्य काम खत्म होने के बाद डीज़ल इंजन वाले छोटे ट्रैक्टर से इसे चलाया जा सकता है। इसके फ्रेम के ऊपर 750 लीटर का प्लास्टिक टैंक लगाया गया है जिसके दोनों ओर पहिए और हुक लगा है ताकि ट्रैक्टर के साथ इसे खींचा जा सके। ASPEE-HTP के त्रिविध पिस्टन वाले पंप का इस्तेमाल करते हुए इसे 5.6 एचपी 3600 आरएमपी के ग्रीवस डीजल इंजन से चलाया जा सकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

स्प्रे सामग्री भरने के लिए ऑटो टैंक सहित स्प्रे पाइप को संभालने के लिए हाथ से घुमाने वाली चरखी लगी होती है जो कुल–मिला कर मशीन की कार्यक्षमता में वृद्धि करने में सहायक होती है। इस मशीन से स्प्रे करने पर किसी प्रकार भी कीट व कीटाणू नाशक दवाएं बर्बाद नहीं होतीं। इस मशीन से मज़दूरी और समय दोनों की ही बचत होती है। शुरुआत में इस किसान के पास 4 मजदूर थे और अब उसे केवल एक मजदूर की ही जरूरत पड़ती है जिस कारण पैसे की बचत होती है। इस प्रकार की और मशीनें तैयार करके वह दूसरे किसानों की मजदूरी में बचत और पैदावार बढाने में मदद कर सकता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

और अधिक मशीने बनाने के लिए नवाचारक वित्तीय सहायता की इच्छा रखता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मशरूम खाद को उल्ट–पल्ट करने की मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री जितेन्द्र मलिक
अनुभव	14 साल
कार्य क्षेत्र	हरियाणा
कुल बिक्री	₹ 10 से 15 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	गांव – सींख, जिला–पानीपत, हरियाणा मोबाइल न.: 09813718528

बिजनैस मॉडल

नवाचारक ने केवल एक मशीन का निर्माण किया है जिसकी कीमत लगभग ₹ 25 लाख है। वह 2.5 एकड़ जमीन पर मशरूम की खेती करता है और गेंहूं की पैदावार से उसे अतिरिक्त आमदनी होती है। वह इस मशीन का इस्तेमाल केवल अपने खेत में करता है।

नवाचार का विवरण

अच्छी फसल के लिए अच्छी किस्म की खाद बहुत ही महत्वपूर्ण है। मशरूम को खाद में तबदील करने वाली इस मशीन ने खाद के सभी थक्कों को तोड़ने में मदद की है। यह अंदरूनी परत को बाहर और बाहरी परत को अंदर घुमा देती है इस प्रकार अमोनिया के निकास को आसान बनाती है। यह मशरूम की यूनिट/ट्रै को आसानी से फैलने देती है जिसके फलस्वरूप बड़े पैमाने पर मशरूम की खेती कर पाना संभव होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

यह मशीन प्रति दिन 50 मज़दूरों के बदले 20 मिन्ट में 100 किवन्टल खाद को पलट सकती है जिससे कि अत्याधिक पैसे और समय की बचत होती है। खाद पर समान प्रकार से पानी का छिड़काव करने के लिए स्प्रे नलकी का इस्तेमाल किया जाता है। अच्छी किस्म के मशरूम की अधिक पैदावार अच्छी किस्म की खाद से हासिल की जा सकती है इससे फसल नष्ट होने की संभावना कम हो जाती है। मशीन का इस्तेमाल आसानी से किया जा सकता है। किसान ने इससे लगभग ₹ 10 लाख का फायदा कमाया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नवाचारक समय और वित्तीय समस्यओं के कारण बंधा हुआ है। मशीन को बाजार में उतारने में असमर्थ है अतः उसे वित्तीय और मानव शक्ति की मदद चाहिए।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मक्का छीलने की संशोधित मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री सुरजीत सिंह
अनुभव	20 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	बताई नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	30 – 40
संपर्क विवरण	गांव – चगरान, तहसील और जिला – होशियारपुर, पंजाब मोबाइल न.: 09815082477

बिजनैस मॉडल

इस मशीन की कीमत लगभग ₹ 400 है और नवाचारक ने अभी तक इसे बाजार में नहीं उतारा है। वह किसानों को मुफ्त सलाह देता है और उसने किसानों के लिए बहुत से सहायक दस्ते तैयार किए हैं। मुख्य रूप से वह मक्का की फसल से आमदनी कमाता है और साथ ही साथ अन्य फसलों से भी आय प्राप्त करता है।

नवाचार का विवरण

इस किसान ने मक्का छीलने की मशीन में सुधार करके उसे एक छोटे स्टैंड पर उंचा करके रखा है जिस कारण इसकी कार्यक्षमता में 20 प्रतिशत की बढोतरी हुई है। यह मशीन सरल और चलाने में आसान है और मक्का के गुल्ले में से आसानी व असरदार ढंग से दाने निकाल देती है। यह यंत्र लोहे और स्थानीय तौर से मिलने वाली अन्य चीज़ों से बना होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

मक्का निकालने का संशोधित यंत्र किफायती, संभालने में आसान और कार्यक्षमता में बेहतर है। केवल एक आदमी ही इस मशीन को चला सकता है। चूंकि मक्का इस क्षेत्र की प्रमुख फसल है अतः इसका मशीनीकरण मक्का छीलने के लिए किया गया है परंतु यह यंत्र हाशिए पर रहने वाले किसानों और उन खेती मज़दूरों के बीच लोकप्रिय हो रहा है जो मक्के की फसल के रूप में अपना मेहनताना प्राप्त करते हैं। यह नवाचार सीमांत जोत भूमि वाले छोटे किसानों अथवा बीज के रूप में मक्का का इस्तेमाल करने वाले किसानों के लिए अतंयत लाभकारी है।

पहचान/इनाम

- राष्ट्रपति पुरस्कार
- किसान विज्ञान पुरस्कार

मुद्दे

कोई मुद्दा नहीं

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृमि खाद और कीड़े अलग करने की मशीन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अमरीक सिंह
अनुभव	22 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	₹ 15 से 20 प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	30–40
संपर्क विवरण	गांव – चगरान, तहसील और जिला – होशियारपुर, पंजाब मोबाइल न.: 09815082477

बिजनैस मॉडल

प्रत्येक मशीन की कीमत मोटर सहित ₹ 14,000 है। नवाचारक किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है। वह इस मशीन को पिछले 3 सालों से बेच रहा है और खेती व डेरी उत्पाद से भी वह अतिरिक्त आमदनी बना लेता है। उसके खेत में बॉयो–गैस संयंत्र भी लगा है।

नवाचार का विवरण

किसान द्वारा तैयार की गई इस मशीन से कृमि–खाद और केंचुओं को आसानी से अलग किया जा सकता है। मशीन में विभिन्न आकार की जालियां और कृमि–खाद व केंचुओं को अलग करने के लिए दो अलग–अलग निर्गम–द्वार बने हैं। मशीन का डिजाइन सामान्य, लागत कम और समय व मज़दूरी की बचत होती है। इसे लोहे की धुरी और छोटी मोटर तथा अन्य स्थानीय तौर पर उपलब्ध चीज़ों से बनाया गया है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस मशीन से कृमि–खाद से केंचुओं को आसानी व असरदार तरीके से अलग किया जा सकता है। चूंकि इससे समय और मज़दूरी में बचत होती है इसलिए इससे कृषि समुदाय में कृमि पालन को बढावा देने में मदद मिलती है। यह एक नई धारणा है और इसकी लोकप्रियता के कारण अन्य किसानों द्वारा इसके अपनाए जाने की पूरी गुंजाइश है।

पहचान/इनाम

- कृमि–खाद के लिए राज्य पुरस्कार

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

धान कूटने के लिए संशोधित रोलर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अवतार सिंह
अनुभव	18 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	₹ 3 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	15 से 20 मशीन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	गांव व डाकखाना – कंगरोड, जिला – एस.बी.एस. नगर, नवांशहर, पंजाब मोबाइल न.: 09463180285

बिजनैस मॉडल

मशीन का इस्तेमाल धान के मौसम में किया जाता है। प्रत्येक मशीन की कीमत लगभग ₹ 16,000 है और अब तक नवाचारक 300 मशीनें बेच चुका है। उसे एक मशीन बेचने पर ₹ 4,000 का फायदा होता है। उसे अतिरिक्त आमदनी गेहूं की खेती से आती है।

नवाचार का विवरण

टायर के साथ लोहे के घेरे से बने पहियों वाले ट्रैक्टर से जुडे हुए, जमीन जोतने के यंत्र में लगे धान कूटने के यंत्र को देखने से पता चलता है कि यह कल्पना ही होगी कि अधिक बौडम (पुडिंग) और सुविधाजनक कार्यविधि के लिए बड़े आकार के धान कूटने के रोलर को सीधे ट्रैक्टर के साथ जोड़ा जाए। तदानुसार 50 एमएम के नरम इस्पात एक्सेल शाफ्ट सहित नरम इस्पात के समकोणीय गोलाकार हिस्से पर इस्पात एंगल आयरन के चार विभिन्न हिस्सों को टांका लगा कर जोड़ा गया। लकड़ी के बेयरिंग लगाए गए और ट्रैक्टर को रोकने के लिए नरम इस्पात का फ्रेम बनाया गया।

नवाचार/तकनीक का असर

खेत जोतने में लगने वाले समय को कम करने के इरादे से मशीन के तख्ते में बड़े डायमीटर के रोलर लगा कर संशोधन किया गया। प्रवेश के लिए कम गहराई और पोखरे का मंथन करने के लिए बढे हुए क्षेत्र के कारण इस मशीन की कार्यविधि अधिक आसान हो गई है। बौडम (पुडिंग) कार्यविधि में तुलनात्मक तौर पर कम समय लगता है और डीज़ल की खपत भी कम होती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

गांव में कुशल कारीगरों की कमी के कारण नवाचारक को कठिनाई हो रही है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गन्ने की कोंपलें तोड़ने का यंत्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि यंत्र

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री रोशन लाल विश्वकर्मा
अनुभव	30 साल
कार्य क्षेत्र	मध्य प्रदेश
कुल बिक्री	₹ 4 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	700 मशीने प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	
संपर्क विवरण	गांव – मेख, ब्लॉक – गोटेगांव, जिला – नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश मोबाइल न.: 09300724167

बिजनैस मॉडल

नवाचारक ने सन् 2005 में इस मशीन को विकसित किया और इसकी लागत शुरू में ₹ 250 थी, परंतु आज इसकी कीमत ₹ 1200 है। श्री रोशन लाल अपनी मशीन के हर तरह के प्रचार के लिए पूरी तरह कृषि विज्ञान केंद्र पर निर्भर रहता है। नवाचारक गन्ना, गेंहू तथा अन्य फसलों की खेती भी करता है।

नवाचार का विवरण

श्री रोशन लाल ने गन्ने की कोंपलें तोड़ने वाले यंत्र का विकास किया है जिसका आकार चांद जैसा है और उसके साथ स्प्रिंग सिस्टम सहित लोहे के हैंडल में तेज धार का चाकू लगाया गया है। इस मशीन को हाथ से चलाया जाता है और इसका इस्तेमाल करना बड़ा आसान है। हैंडल दबाने से चिप्पर गन्ने की कोंपल को तोड़ देता है। इस मशीन को गन्ने की चौड़ाई के हिसाब से छोटा–बड़ा किया जा सकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

गन्ने की कोंपलो को तोड़ने वाला यह यंत्र सुबाह्य और चलाने में आसान है। चिप्पर का इस्तेमाल करके प्रत्येक घंटे में 300–500 कोंपलों को तोड़ा जा सकता है। इसके लिए 90 प्रतिशत कम बीज और पारंपरिक ढंग से गन्ना बोने में 125 क्विन्टल के स्थान पर 13 क्विन्टल कोंपलों की जरूरत होती है। कोंपलों को अलग करने के बाद बीजों के अपक्व माल का इस्तेमाल गुड़ और चीनी बनाने के लिए किया जा सकता है। पारंपरिक तरीके से किए गए बीज़ारोपण (30%) के मुकाबले इस यंत्र का इस्तेमाल करने से 40 प्रतिशत अधिक गन्ने की कोंपलें फूटती हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नवाचारक मशीन की जरूरतों को पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता की इच्छा रखता है।

उत्पाद चित्र

सिंचाई

नवाचार का सारांश

असरदार जल प्रबंधन के वेन मॉडल

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	डा॰ दत्तात्रय बाने
अनुभव	35 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 75,000 से 1 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	डाकखाना – मनोरी, तालुक – राहुरी, जिला – अहमदनगर, महाराष्ट्र मोबाइल न॰: 09822274226, ई–मेलः dr.dattatrayvane@yahoo.in

बिजनैस मॉडल

कृषि विभाग की मदद से वह महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में लेक्चर देता है। ऐग्रो–1 नामक कृषि दैनिक पत्रिका में उसकी सफलता की कहानी सन् 2007 में प्रकाशित हुई थी। अब उसने मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में दूसरे किसानों को परामर्श देना शुरू कर दिया है जिसके लिए वह यात्रा शुल्क और प्रति एकड़ खेत पर ₹ 500–1000 की फीस लेता है।

नवाचार का विवरण

श्री दत्तात्रय बाने ने प्याज, गेहूं, काबुली चना, गन्ने जैसी फसलों के अनुसार ड्रिप व छिड़काव यंत्र से सिचाई तकनीक को अपना कर पानी के दक्षतापूर्ण इस्तेमाल में वृद्धि की है। उसने कुशल प्रबंधन के लिए वेन मॉडल और बेहतर ढंग से खेती करने की तकनीक का विकास किया तथा अपने खेत का परीक्षण एवं खेती संबंधी प्रयोग किए। उसने फसल के चुनाव, आवर्तन और खेती आदि करने के वैज्ञानिक तरीकों को बेहतर बनाया। वह भण्डारण तकनीक का भी अभ्यास करता है और अपने खेत पर किसानों को बुला कर मार्गदर्शन करने की व्यवस्था के साथ–साथ जल प्रबंधन पर लैक्चर देता है। इससे काफी लाभ हुआ है – किसानों को लागत के अनुपात में महत्वपूर्ण बढोतरी दिखाई दी है।

नवाचार/तकनीक का असर

ज़मीन में लगातार पानी की आपूर्ति होने से गेहूं की पैदावार में 1.5 टन प्रति एकड़ से लेकर 2 टन प्रति एकड़ तक की बढोतरी होती है। मज़दूरों की जरूरत में छठवें हिस्से तक कमी आती है और भूमि की गुणवत्ता बढ जाती है। गेहूं के मामले में 30 प्रतिशत और प्याज के मामले में 40 प्रतिशत पानी की बचत होती है। इसे लगाना बहुत आसान है। बेहतर ढंग से खेती करने पर काम अधिक रूचिकर लगने लगता है।

पहचान/इनाम

- निदेशक, बाबू राव तानोपवर चीनी मिल
- गांव का सरपंच
- सदस्य, दूध सहकारी समिति तथा जल प्रबंधन समिति
- सहयादरी कृषि सम्मान पुरस्कार, 2008 में मुम्बई दुरदर्शन द्वारा
- जी 24 टास, मुम्बई द्वारा दिया गया जी सम्मान (कृषि) पुरस्कार, 2008

मुद्दे

कुशल कारीगरों की कमी एक समस्या है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

परिष्कृत ड्रिप सिंचाई प्रणाली

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री विश्वनाथ तात्यासाहेब पाटिल
अनुभव	23 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	लगभग ₹ 15 लाख
विस्तार	केला 30 टन, गन्ना 400 टन
कर्मचारियों की संख्या	12
संपर्क विवरण	डाकखाना – अंबाप, तालुक – हथकनंगले, जिला – कोल्हापुर, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09823183833

बिजनैस मॉडल

नवाचारक किसानों को मुफ्त सलाह देता है। उसने गांव में कृषि विज्ञान फोरम बनाया है। उसने नवारड और कृषि विश्वविद्यालय के साथ मिल कर तात्यासाहेब कोरे कृषि विज्ञान सहित्कारी मंडल की स्थापना भी की है। वह किसानों को हर महीने 5 दिन का प्रशिक्षण देता है और हर महीने 100 किसानों के खेतों का दौरा भी करता है।

नवाचार का विवरण

श्री विश्वनाथ तात्यासाहेब पाटिल ने विभिन्न प्रकार की फसलों की जरूरत के हिसाब से मौजूदा ड्रिप सिंचाई प्रणाली में सुधार किए हैं। ड्रिप लाइन और दो ड्रिपरों के बीच के अंतराल और ड्रिपरों के प्रकार, ड्रिप लाइन के डायामीटर तथा पानी छोड़ने के अनुपात को अनुकूलित करके विभिन्न प्रकार की फसलों के अनुरूप बनाया है। इसके कारण पैदावार में तो वृद्धि हुई ही साथ ही जमीन की उर्वरता भी बढ गई। उसने मशीन के संयोजन व अपेक्षित पानी के वेग में किसी प्रकार की छेड़–छाड़ किए बिना सुधार किए हैं। यह गन्ना, केला, सोयाबीन, मुंगफली, बंगाली चना, और सब्जियों जैसी फसलों के लिए उपयुक्त है जिन्हें सिंचाई के जरिए पोषक तत्व देना पूरी तरह आसान है। ड्रिप प्रणाली 10 वर्षों के कार्यकाल सहित 62,000/हैक्टेयर की लागत पर किफायती एवं सुबाह्य है। श्री विश्वनाथ ने अपने कुल लाभ में 55,000/हैक्टेयर की बढोतरी पायी है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस प्रकार के अभ्यास से मज़दूरी में बचत होती है और यह प्रयोक्ता मैत्रीपूर्ण व अनुकूलनशील हैं। इससे जल स्त्रोतों का उपयोग बहुत ही असरदार तरीके से किया जा सकता है जिससे कि पैदावार में बढोतरी हो जाती है। गन्ने के खेत में इसका प्रयोग करने से प्रति एकड़ 20 टन और केले की खेती में 5 टन प्रति एकड़ की वृद्धि हो जाती है। इस सिस्टम का इस्तेमाल करके उसने जो सफलता हासिल की है उसे देख बहुत से किसान सलाह लेने और अपने खेतों में भी इसी तकनीक को अपनाने के लिए खुद बखुद उसके पास आने लगे हैं।

पहचान/इनाम

- राज्य में गन्ने की सबसे अधिक पैदावार करने पर उसे राज्य स्तरीय 'उसभूषण' पुरस्कार से नवाजा गया।
- वसंतराव नायक कृषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया
- कृषि विकास के लिए छत्रपति साहू पुरस्कार प्रदान किया गया
- राष्ट्रपति, कृषि विज्ञान फोरम, केवीके, कोल्हापुर
- राष्ट्रपति, कृषि विज्ञान मंडल, अंबप
- MPKV, राहूरी की वर्धित परामर्श समिति के भूतपूर्व सदस्य

मुद्दे

नवाचारक के अनुसार किसान इस प्रकार से अपरंपारिक खेती करने के तरीकों को अपनाने की इच्छा नहीं रखते और उनकी सोच को बदलना आसान नहीं है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

किफायती ड्रिप सिंचाई के लिए कपास में बारी–बारी से अंतर देना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री घावटे अर्जुन सरजेराव
अनुभव	43 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	लगभग ₹ 13 लाख
विस्तार	16 एकड़ में कपास की खेती
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	सतना, जिला एवं तालुक – औरंगाबाद, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09422291285

बिजनैस मॉडल

वह इस विधि के बारे में किसानों को मुफ्त सलाह देता है। उसने इस तकनीक का इस्तेमाल करके 16 एकड़ जमीन पर कपास की खेती की है जिससे उसे ₹ 13 लाख की आमदनी हुई है।

नवाचार का विवरण

श्री घावटे अर्जुन ने ड्रिप सिंचाई वाले नवाचारी कपास के पौधों को अदल–बदल करके लगाने की योजना बनाई है जबकि पौधों की संख्या सिफारिश की गई संख्या के बराबर है। कपास की अदला–बदली के लिए 90 x 60 सेंटीमीटर की दूरी रखने की सिफारिश की है जिसके लिए प्रति हैक्टर 111 लेटरल की आवश्यकता होती है। उसने इसके स्थान पर पौधों में 180 x 30 सेंटीमीटर की दूरी रखी है जिसके लिए मात्र 55 लेटरल प्रति हैक्टेयर की ही आवश्यकता होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इसके परिणामस्वरूप पौधों के बीच की दूरी 180 x 30 सेंटीमीटर में बदलने से प्रति लेटरल लागत में लगभग 50 प्रतिशत की कमी आई है। इससे दो कतारों के बीच बेहतर वायुसंचारण होता है। चूंकि कतारों के बीच की दूरी काफी अधिक होती है अतः हरे छौलिए, काले चने, सोयाबीन आदि की फसलों को कपास की फसल के साथ आसानी से उगाया जा सकता है। इससे किसान को अतिरिक्त आमदनी मिलने के साथ–साथ जमीन की उर्वरकता में भी वृद्धि होती है। इस प्रकार की ड्रिप सिंचाई के ढांचे किफायती तो होते ही हैं साथ ही साथ पारंपरिक तरीके के मुकाबले अच्छी पैदावार (17 से 18 प्रतिशत ज्यादा) भी देते हैं। 400 से अधिक किसानों (लगभग 260 हैक्टेयर के समरूप) ने इस तरीके को अपनाने में कामयाबी हासिल की है। इससे मज़दूरों की जरूरत भी एक तिहाई कम हो जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस प्रकार के अभ्यास के लिए कुशल कारीगरों की आवश्यकता है जिसकी वजह से नवाचारक को कठिनाई होती है। समय पर बीज और उर्वरक मिलना भी नवाचारक के लिए समस्या पैदा करता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

सौर ऊर्जा चालित मध्य धुरी पर निरंतर घूमने वाला सिंचाई यंत्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	ब्राईट स्टार इलैक्ट्रॉनिक्स
अनुभव	35 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	लगभग ₹ 50 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	9
संपर्क विवरण	श्री पदमाकर केलकर 43/2, इरांडवान, कोणार्क उद्योग प्रेमिसेस, ऑफ कारवे रोड, पुणे – 411038 मोबाइल न.: 020 25430768, ई–मेल: brightsrare@dataone.in

बिजनैस मॉडल

सन् 2004 में उसने अपने उत्पाद को बाजार में उतारने की कोशिश की परंतु मशीन की कीमत बहुत उंची होने के कारण वह सफल नहीं हो पाया। उसने अपनी एक मशीन प्याज अनुसंधान केंद्र में लगाई है। यह मशीन अपेक्षाकृत आकार में बड़ी और इसकी कीमत ₹ 15 लाख है जो 25 एकड़ जमीन की सिंचाई कर सकती है।

नवाचार का विवरण

इस मशीन में बहुत से पाट अथवा चारों ओर टॉवर लगे हैं। इसमें 3, 4, 5, 6 और 7 टॉवर तक होते हैं प्रत्येक टॉवर की लम्बाई 90–130 फुट तक होती है जो कि खेत के आकार और बनावट पर निर्भर करती है। विभिन्न प्रकार के फव्वारों को जोड़–जाड़ कर पानी के छिड़काव में फेर–बदल किया जा सकता है। एक जगह पर स्थिर रखी धुरी से चारों और पानी का छिड़काव किया जाता है। रबड़ की वाशर की वजह से पानी कहीं से भी नहीं रिसता जबकि पानी से भरा यह यंत्र चारों ओर घूमता रहता है। सभी टॉवरों के साथ 'ए' फ्रेम, 48 वोल्ट, 100 वॉट, मजबूत गियर बॉक्स से जुड़ी गियर डीसी मोटर ट्रैक्टर टायरों सहित पहियों को चलाती है। टॉवर के अंत में अतिरिक्त 20 फुट की ब्रैकिट लगी होती है जो बिना किसी अतिरिक्त यंत्र फ्रेम अथवा अन्य घटक के अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई कर सकती है जिससे कि सिंचाई करना काफी किफायती हो जाता है।

पूरे ढांचे को नट व बोल्ट के साथ खेत में लगाया जाता है। सभी टॉवरों को लचीले रिसावरोधी युग्मक के साथ एक दूसरे से जोड़ा जाता है और इन सभी एक्स, वाई, जैड में समधरातल पर 7.5 से 9 डिग्री तक ढांचे की सिधाई में बिना किसी अस्थिरता के भिन्नता हो सकती है। यदि सिधाई में इस डिग्री से ज्यादा गड़बड़ी हो तो नियंत्रक अपने–आप मशीन बंद कर देता है। सुनियोजित पूर्वनिर्धारित बिंदुओं पर लगे तंग भाग के साथ फव्वारे को पकड़ने के लिए भारी लटकन लगाई जाती है। इस लटकन की लंबाई को फसल, फसल के स्वरूप एवं परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है। इन फव्वारों से पानी का छिड़काव करने की दूरी का निर्णय इस प्रकार लिया जाना चाहिए कि सारे खेत में एक समान पानी का छिड़काव हो जाए। फव्वारों के लिए कम वेग के पानी की जरूरत होती है जिससे कि पंप के उपरी खर्चे कम हो जाते हैं। धुरी बिंदु पर लगाई गई संगत नियंत्रक धुरी से जुड़ी सभी कार्यविधियों को नियंत्रित करता है। आमतौर पर मशीन नाम मात्र बिजली 60 वोल्ट डीसी से चलती है परंतु 52 से 70 वोल्ट के बीच ज्यादा सुरक्षित ढंग से काम करती है।

नवाचार/तकनीक का असर

पानी का छिड़काव बराबर होने के कारण (80–100 प्रतिशत से उपर) पैदावार में 180 से 220 प्रतिशत की बढोतरी हो जाती है। इस तकनीक का इस्तेमाल करने से पंप की लागत में बहुत ज्यादा कमी आने के साथ–साथ पानी की भी 50 प्रतिशत से ज्यादा बचत होती है। इस विधि का इस्तेमाल रात में पौधों को पानी देने के लिए भी किया जा सकता है जिससे पानी की बचत होती है। भूमि और वायुमंडलीय परिस्थितियों के अनुसार फसल विशेष के लिए उपयुक्त ज्यादा मात्रा ज्यादा अंतराल अथवा थोड़ी मात्रा कम अंतराल के हिसाब से पानी का इस्तेमाल किया जा सकता है। पानी का इस्तेमाल साल में कभी भी किया जा सकता है यहां तक कि बरसात के मौसम में पहली बारिश के बाद बीच के समय में भी किया जा सकता है। खेत के सभी पहाड़ी, असमतल भाग को भी खेती के योग्य बनाकर पैदावार बढाई जा सकती है। यह मशीन सौर ऊर्जा से चलती है अतः इसमें बिजली की जरूरत नहीं होती। उर्वरक और कीटनाशक दवाओं को पानी में मिला कर द्रव्य रूप में दिया जा सकता है जो भूमि के कटाव को रोकता है। एक सिंचाई मशीन का कार्यकाल 30 साल से अधिक होता है। सुविधाजनक जल व्यवस्था की परिवर्तनीय गति इसे अनुकूलनीय बनाती है।

पहचान/इनाम

- आई.आई.टी., मुम्बई भूतपूर्व छात्र संघ, पुणे द्वारा 2008 के नवाचारी प्रतियोगिता में चुना गया
- अखिल भारतीय एकता सम्मेलन में उत्तम उद्योग पुरस्कार

मुद्दे

- मशीन के निर्माण के लिए आर्थिक समस्या उनके सम्मुख सबसे बड़ा मुद्दा है।
- मशीन के लाभांशों के बारे में जागरूकता की कमी भी उनके लिए समस्या है।
- मशीन की लागत अधिक होने के कारण छोटे किसान आर्थिक सहायता के बिना इसे खरीदने में असमर्थ है।
- पिछले 2 सालों से उसने इस मशीन को बाजार में उतारने का कोई प्रयास नहीं किया है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

नवाचारी पवन चक्की के जरिए सिंचाई करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री कालू भाई गोंदलिया
अनुभव	3 साल
कार्य क्षेत्र	गांव के आस–पास
कुल बिक्री	₹ 2,00,000
विस्तार	11 एकड़
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	डाकखाना – रजवाडार, तालुक – महुआ, भावनगर, गुजरात, मोबाइल नः 09979186981

बिजनैस मॉडल

श्री कालू भाई के पास 5 एकड़ खेती की जमीन और 6 एकड़ बागवानी की जमीन है, जिसकी सिंचाई के लिए वह पिछले 3 साल से नवाचारी पवन चक्की का इस्तेमाल कर रहा है जिसके लिए उसे गुजरात ऊर्जा विकास बोर्ड से वित्तीय सहायता भी दी गई है। खेती से उसकी सालाना कुल बिक्री ₹ 2 लाख है।

नवाचार का विवरण

भरपूर पानी उपलब्ध न होने, जमीन के जलस्तर में भारी उतार–चढाव और बिजली की अनुपलब्धता का एहसास होने पर श्री कालू भाई के दिमाग में तेजी से यह विचार आया कि सिंचाई और पशुओं के पीने का पानी मुहैया कराने के लिए वैयकल्पिक हल निकाला जाना चाहिए। इस प्रकार उसने हवा की ताकत को पहचानते हुए उसका नल के रूप में इस्तेमाल कर इस समस्या का हल ढूंढ निकाला। उसने इस मांग को ध्यान में रखकर अपेक्षित पवन चक्की पंप की कल्पना की और इस यंत्र को लगाने के लिए निर्धारित आर्थिक सहायता पाने के लिए सरकार से संपर्क किया ताकि 5 एकड़ खेती और 6 एकड़ बागवानी वाली जमीन की सिंचाई इस पर्यावरण अनुकूलन विधि से की जा सके।

नवाचार/तकनीक का असर

भरपूर पानी की आपूर्ति होने के कारण प्रतिदिन 0.5 एकड़ भूमि की अतिरिक्त सिंचाई की जा सकती है। इससे श्रम की आवश्यकता में भी 50 प्रतिशत कमी आती है। इसका रखरखाव बहुत ही आसान है। चूंकि इस पवन चक्की को चलाने के लिए बिजली की जरूरत नहीं होती अतः यह पर्यावरण अनुकूलित यंत्र है जो सिंचाई के लिए 24 x 7 बार पानी की आपूर्ति करने मे सक्षम है। जिससे किसान ₹ 4000 प्रति वर्ष ज्यादा लाभ कमाता है।

इसके अतिरिक्त भूमि, ऊर्जा व पर्यावरणीय संरक्षण के बारे में गांव वासियों को जागरूक बनाने के लिए वह गांव के स्कूल में कार्यशालाएं भी चलाता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस मशीन की उंची कीमत होने के कारण लोग इसे खरीदने में रूचि नहीं रखते। इसके अतिरिक्त इस मशीन के लिए कुशल कारीगरों की जरूरत पड़ती है। परंतु इसके अतिरिक्त पुर्ज़े आसानी से मिल जाते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पौधों की दूरी में सुधार करके किफायती ड्रिप सिंचाई करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सिंचाई

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नारण भाई मोरी
अनुभव	3 साल
कार्य क्षेत्र	पदरघडा गांव (बोरदा कुगबी)
कुल बिक्री	₹ 25,20,000
विस्तार	70 एकड़ भूमि
कर्मचारियों की संख्या	45
संपर्क विवरण	पदरघडा, डाकखाना – बोरदा, तालुक – तलौउजा भावनगर, गुजरात, मोबाइल न॰ 09426456588

बिजनैस मॉडल

ड्रिप सिंचाई के लिए उसे केंद्र सरकार ने 50 प्रतिशत की आर्थिक सहायता प्रदान की है। उसने अपने खेत की व्यवस्था के लिए 45 कर्मचारियों को नियुक्त किया है, परंतु उसने किसी के साथ भी सांझेदारी नहीं की है। इन खेतों में उपजाई गई कपास की फसल को बाजार में बेचने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि वह इसे अपनी कपास फैक्टरी में तैयार करता है और अपने सुव्यवस्थित बाजार संपर्कों के कारण स्थानीय मांग की पूर्ति भी करता है।

नवाचार का विवरण

वर्तमान में उसके पास 70 एकड़ खेती की भूमि है जिस पर वह मुख्यतौर पर कपास, मुंगफली और प्याज की फसल लगाता है। श्री नारण भाई अपने खेतों में पिछले कई सालों से ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल कर रहा है। परंतु पैदावार में कमी और संसाधनों के अपर्याप्त उपयोग का एहसास होने पर उसने इसके डिजाइन में छोटे पैमाने पर कुछ संशोधन करके इसका परिणाम हासिल किया। लगातार कई प्रयासों के बाद उसने ड्रिप सिंचाई के लिए पौधों की पारंपरिक दूरी में फेर–बदल किया, पहले यह दूरी 4 x 1 फुट थी, उसे बढा कर अधिकतम 6 x 2.5 फुट कर दिया। यह एक असरदार विधि साबित हुई जिससे बीजों व अन्य संसाधनों की लागत में कमी आई। दूरी बढाने से यह सुनिश्चित हो गया कि पौधों पर अधिक मात्रा में फूल आने से पैदावार में बढोतरी होती है। उदाहरण के लिए कपास की औसत वृद्धि 1300 किलोग्राम प्रति एकड़ दर्ज की गई। दूसरी ओर सामान्यतौर पर पहले इन खेतों से 800 किलोग्राम प्रति एकड़ की पैदावार मिलती थी।

नवाचार/तकनीक का असर

उसके इस नवाचार से मिले लाभ को देख कर बहुत से बड़े, मध्यम और छोटी जोत भूमि वाले किसान इस विधि को अपनाने लगे हैं। इस नवाचार के फलस्वरूप पैदावार में 300 से 500 किलोग्राम प्रति एकड़ की बढोतरी पाई गई है जबकि निवेश लागत में बचत हुई है।

पहचान/इनाम

- तलौउजा तालुक कृषि विभाग द्वारा करूस्का रूस्का पुरस्कार प्रदान किया गया
- गुजरात राज्य बीज कारपोरेशन ने उत्तम बीज उत्पादक का पुरस्कार दिया

मुद्दे

दूसरी ओर उस क्षेत्र में और अधिक भूमि का विकास करने के लिए वह ₹ 8 लाख का ऋण लेना चाहता है। इसके अतिरिक्त थोड़े समय में मजदूर न मिलना एक समस्या है और कभी–कभी खेती के लिए जरूरी यूरिया जैसी चीजें उस क्षेत्र में नहीं मिलती।

उत्पाद चित्र

कृषि परंपरा एवं
खाद्य संसाधन

नवाचार का सारांश

प्रसारण खेती एवं जैविक कृषि

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री महेंद्र भाई गोटी
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	भावनगर
कुल बिक्री	₹ 1.5 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	3 टन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	तालुक – तलाजा, डाकखाना – अनिंदा, जिला – भावनगर, मोबाइल नः 09879639737

बिजनैस मॉडल

वह किसानों को मुफ्त सलाह देता है। कपास को स्थानीय APMC बाजार में लगभग 1200–1300 प्रति क्वींटल पर बेचता है। गुजरात सरकार से ड्रिप सिंचाई के लिए आर्थिक सहायता भी लेता है।

नवाचार का विवरण

इस किसान ने प्रसारण खेती की तकनीक विकसित की है। इस तकनीक में एक ही खेत में अलग–अलग समय पर दो या अधिक फसलें उगाई जा सकती हैं। कम समय वाली फसल की कटाई के बाद दूसरी फसल को पनपने के लिए ज्यादा जगह मिल जाती है। जब दूसरी फसल फल देने लगती है तब तीसरी फसल लगाई जाती है। वह अपने खेत में कपास और कुछ सब्जियों की फसल उगाता है। वह फसलों की अदला–बदली करके भी खेती करता है जिसमें मौसम के उपयुक्त काल में विभिन्न फसलों का क्रमिक रोपण करना शामिल है। हर मौसम में संपूर्ण पैदावार में वृद्धि करने के लिए जैविक तकनीक (कोई रसायनिक उर्वरक नहीं) और अंतर फसल (मुख्य फसल की रोपण लाइनों के बीच की जगह में विभिन्न फसलें रोपणा) लगा कर संपूर्ण खेती की जाती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस तकनीक से लगभग ₹ 2500–3500 प्रति एकड़ की लाभ में वृद्धि और मजदूरों की 50 प्रतिशत आवश्यकता कम हो जाती है। इसके कारण पैदावार में लगभग 2 क्विंटल प्रति एकड़ की वृद्धि के साथ–साथ प्रतिदिन किए जाने वाले प्रयासों में 2–3 घंटे समय की बचत होती है। ड्रिप सिंचाई के परिणामस्वरूप पानी की 80 प्रतिशत तक बचत होती है और जैविक खेती से भूमि के उपजाउपन में भी बढोतरी होती है।

पहचान/इनाम

- करूषी रूषी पुरस्कार (जूनागढ विश्वविद्यालय)

मुद्दे

इस तकनीक में जैविक खेती के बारे में लोगों की जागरूकता में कमी बहुत भारी समस्या है। ट्रैक्टर खरीदने के लिए उसे ऋण की भी जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

अनार की पैदावार में सुधार (पानी के जरिए पोषक तत्व देना व फसल का संरक्षण करने की तकनीक)

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री दिलीप अहिरकर
अनुभव	18 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 2.5 करोड़ प्रति वर्ष
विस्तार	200 टन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	15–20
संपर्क विवरण	मोनिका गार्डेनस, बी–3, लक्ष्मी नगर, फलटन मोबाइल न.: 09822756192

बिजनैस मॉडल

श्री दिलीप अहिरकर के पास 35 एकड़ खेती की जमीन है जिसमें वह अनार और गन्ने की फसल लगाता है। वह अनार की फसल से अधिकतम लाभ कमाता है। खेत में पैदावार को बढाने के बारे में वह किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक ने पौधों को पानी में मिलाकर दवाएं देने व फसल संरक्षण सहित अनार की पैदावार बढ़ाने के लिए व्यवस्थित तरीके से खेती करने की तकनीक तैयार की है। उसने उर्वरकों के मिश्रण व उसके प्रयोग की एक तकनीक विकसित की है। आमतौर पर अनार की खेती करने वाले किसान प्रति वर्ष उर्वरक की 3–4 बार दवा का इस्तेमाल करते हैं और उसमें से केवल दवा की एक मात्रा में आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। इसके स्थान पर किसान सालाना 5 बार दवा का इस्तेमाल करता है। प्रत्येक दवा की मात्रा में NPK, मुख्य पोषक तत्व, नीम पाउडर के साथ माइक्रो पोषक तत्व मिलाए जाते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

श्री अहिरकर अनार की अधिक पैदावार (10 टन प्रति एकड़ बनाम भारतीय औसत 4.5 टन प्रति एकड़) और अच्छी किस्म (90 प्रतिशत निर्यात की ए श्रेणी) के लिए मानक बन चुके हैं। उसने अनार का ऐसा फल पाने की व्यवस्था की है जिसका वजन प्रति फल 1 किलोग्राम से अधिक होता है और जो अन्य किसी पैदावार की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक लाभ पा सकता है। उसकी आय ₹ 7 लाख प्रति एकड़ प्रति वर्ष है। उसके सभी फलों को निर्यातक उसके खेत से ही उठा लेते हैं वहां अच्छी बोली लगाई जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कच्चे माल और मजदूरों की कमी एक मुद्दा है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

सूखाग्रस्त इलाकों में जैविक खेती

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	पाटिल विश्वासराव आनंदराव
अनुभव	33 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 8 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	डाकखाना – लोहाडा, तालुक – पचोरा, जिला – जलगांव, महाराष्ट्र फोन नः 02596 272240, 0257 2233325, मोबाइल नः 09763475764

बिजनैस मॉडल

किसान जलगांव में जैविक उत्पाद की दुकान में अपनी फसल की सीधे बिक्री कर देता है। वह गन्ने की फसल को भी महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में बिक्री कर देता है। वह इस विधि के बारे में किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक जैविक खेती के साथ–साथ फसल की अदला–बदली, अंतर/मिश्रित फसल पद्धति, कीड़े–मकौड़ों व रोगों के बचाव के लिए जाल डालने की व्यवस्था, फसल को खर–पतवार से ढकने, सर्वोत्तमुखी पोषक तत्वों का प्रबंधन, पेड़–पौधों में खाद डाल कर तथा पीएसबी राइजोबीयम एजोटोबैक्टर आदि का प्रयोग करके फसल उगाने का अभ्यास करता है। उसने अपना खुद का बीज बैंक तैयार किया है, वह ITKs और कृमि व कैंचुओं की खाद का इस्तेमाल करता है। नवाचारक के पास भेड़, बकरियों का बाड़ा भी है और वानस्पतिक खाद के जरिए वह कृषि जैव–ईंधन का पुनरावर्तन करता है।

नवाचार/तकनीक का असर

उसने न केवल फसल की पैदावार को बनाए रखा है अपितु यथा संभव पैदावार में बढोतरी भी की है। इससे उत्पादन लागत में 40 प्रतिशत (रसायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशक दवाओं की लागत करीब–करीब शून्य ही रही) की कमी हुई है। गन्ने व मौसमी की जैविक खेती के परिणाम पैदावार व गुणवत्ता दोनों में ही विशेषकर उत्कृष्ट पाए गए हैं। उसकी फसल के लिए बाजार में ज्यादा कीमत लगाई जाती है। उसके खेत की पहचान 'जैविक खेती' के नाम से होती है और निसर्ग शेटी मंडल, जामनर ने पर्यावरणीय प्रमाण पत्र जारी कर इसे प्रमाणित किया है। यह मंडल यूरोप में गुड़ (मिट्ठा) का निर्यात करता है। उसने भी जापान में कपास का निर्यात किया है।

महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के बहुत से किसान तथा सरकारी अधिकारी हर साल उसकी खेती–बाड़ी को देखने आते हैं। इस फार्म ने यह साबित कर दिया है कि जैविक खेती सभी प्रकार की फसलों के लिए काम करती है और सूखाग्रस्त इलाकों में पारंपरिक खेती से बेहतर होती है। इस विधि से फायदा अधिक और निवेश बहुत कम होता है। इससे सिंचाई में 50 प्रतिशत की बचत और पानी की बचत में भी मदद मिलती है।

पहचान/इनाम

- भारत करूषक समाज, नई दिल्ली के परिषद सदस्य।
- 2001 से 2005 तक महात्मा फूले कृषि विश्वविद्यालय, राहुरी की विस्तार परिषद के सदस्य।
- कृषि भूषण पुरस्कार तथा स्वर्ण पदक – 1997
- ICAR 2006 द्वारा एम.जी.रंगा पुरस्कार प्रदान किया गया।
- पदमश्री डा॰ अप्पासाहेब पवार कृषि तकनीक पुरस्कार।

मुद्दे

जैविक खेती के बारे में किसान ज्यादा जागरूक नहीं है। नवाचारक को पानी की ड्रिप टंकी के लिए आर्थिक सहायता पाने में मुश्किल हो रही है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि खाद और खाली जगह का अधिकतम इस्तेमाल करके कपास की पैदावार बढाना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अक्का भाई जावेर भाई जासनी
अनुभव	7 साल
कार्य क्षेत्र	ओमेर गांव, सिहोर व तलौउजा क्षेत्र
कुल बिक्री	₹ 2,10,000
विस्तार	4200 किलोग्राम प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	डाकखाना – मोटा सुडका, तालुक – सिहार, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09426925745

बिजनैस मॉडल

श्री अक्का भाई कुल 4200 किलोग्राम सालाना कपास की पैदावार करके भावनगर में APMC बाजार में बेच देते हैं। ₹ 5,000 प्रति किलो की दर से कपास की बिक्री करके वह लगभग ₹ 20,000 प्रति एकड़ का मुनाफा कमाते हैं। वह उन सभी किसानों को मुफ्त सलाह देते हैं जो इस विधि को अपनाना चाहते हैं।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक तरीके से खेती करने वाले किसान पौधों में 4 x 1 फुट की दूरी बनाते हैं। अपने खेत में बहुत से प्रयोग करने के बाद अंत में श्री अक्का भाई ने गजब का कृषि खाद मिश्रण बना डाला और कपास की पैदावार बढाने के लिए रसायनिक उर्वरकों व पौधों में 5 x 1.5 फुट की अधिकतम दूरी बना दी। इसके अतिरिक्त उसने कपास की पैदावार के लिए F-1 संकर किस्म के बीजों का इस्तेमाल किया जिससे पैदावार में 1400 किलोग्राम प्रति एकड़ की और वृद्धि हुई।

नवाचार/तकनीक का असर

इस नवाचार के कारण कपास की पैदावार में 100 किलोग्राम प्रति एकड़ की बढोतरी पायी गई। कृषि खाद का इस्तेमाल करने से जमीन की उर्वरकता में भी इजाफा हुआ। इसके अतिरिक्त मज़दूरों की 30 प्रतिशत तक कमी पायी गई और दिन में 2 घंटे की समय में बचत हुई। इस प्रकार यह विधि आसान है। परंतु इससे पानी की जरूरत में कोई कमी नहीं होती क्योंकि इसमें जलमय सिंचाई की विधि अपनानी पड़ती है।

उसकी सफलता देख कर करीब 26 किसानों ने इस विधि को अपना लिया है। कीटनाशक दवाओं और बीज बंटाई व्यापार में उसकी विश्वसनीयता के कारण लोग उसकी इस नवाचार के बारे में दी गई सलाह पर भरोसा करते हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

आजकल बहुत से किसान इस विधि की जानकारी रखते हैं। बाजार, मजदूर, कुशल कारीगर तथा कच्चे माल की उपलब्धता को लेकर ऐसा कोई मुद्दा सामने नहीं आया जिससे यह तकनीक तैयार हुई है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

शुष्क भूमि पर जैविक खेती करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री रामजी भाई बेचार भाई
अनुभव	20 साल
कार्य क्षेत्र	पीपल गांव
कुल बिक्री	₹ 3,50,000
विस्तार	7 टन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	पीपल, डाकखाना – गाधडा, तालुक – वल्लभीपुर, जिला – भावनगर मोबाइल न.: 09925263151

बिजनैस मॉडल

किसानों को मुफ्त सलाह देता हैं। आज तक बाहर से किसी प्रकार का कोई निधिकरण अथवा सांझेदाार नहीं की।

नवाचार का विवरण

इस इलाके में जल आपूर्ति की कमी है जो कृषि के लिए भारी समस्या पैदा करता है। इस समस्या का हल निकालने के लिए जैविक खेती के साथ–साथ शुष्क भूमि पर खेती करने की इस तकनीक का सहारा लिया गया। शुष्क जमीन पर बुआई का काम बरसात के मौसम से पहले कर लिया जाता है और पानी को रोक कर रखने के लिए पौधों में बाद में खाद डाली जाती है। पानी के वाष्पीकरण को कम करने के लिए पौधों को खर–पतवार से ढक कर रखा जाता है। जैविक खेती के लिए कृषि खाद (FYM) का इस्तेमाल किया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

पैदावार लगभग 2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर बढने के साथ–साथ ₹ 5000 प्रति हैक्टेयर का लाभ भी मिला है। इस विधि से मजदूरी में 20 प्रतिशत और पानी के इस्तेमाल में काफी बचत होती है। इस तकनीक का इस्तेमाल करने से 2 घंटे प्रति दिन समय की बचत होती है। इससे जमीन का उर्वरकता भी बेहतर हो जाती है। गांव के बहुत से किसानों ने इस तकनीक को अपनाया है जिसके फलस्वरूप उस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर शुष्क भूमि पर खेती कर पाना संभव हो गया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

चूंकि जैविक खेती की पैदावार कम होती है इसलिए जैविक तथा अजैविक पैदावार का मूल्य बाजार में लगभग बराबर ही मिलता है। इसके अतिरिक्त लोगों को इसके बारे में अधिक जागरूक करने की जरूरत है। संपूर्ण भूमि विकास के लिए किसान को वर्तमान में ₹ 3,00,000 के ऋण की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

सूखाग्रस्त इलाकों में फसल के लिए विविधीकरण तथा जैविक तकनीक

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री हरजीभाई भीखाभाई
अनुभव	45 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 12 लाख
विस्तार	40 एकड़ खेती की जमीन
कर्मचारियों की संख्या	20
संपर्क विवरण	डाकखाना – मालपाडा, तालुक – गधाडा, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09327572297

बिजनैस मॉडल

वह इस विधि के बारे में किसानों को मुफ्त सलाह देता है।

नवाचार का विवरण

इससे पूर्व इस इलाके में कपास मुख्य फसल हुआ करती थी जो कि कीटनाशक दवाओ और रसायनिक उर्वरकों पर निर्भर थी जिसके फलस्वरूप पैदावार की लागत बढ जाती थी। इस इलाके में पानी की भी काफी कमी है। दीर्घावधि में रसायन अपना असर छोड़ने लगते थे और संपूर्ण खेती और पौधों का स्वास्थ्य गिरने लगता था। जमीन के उपजाउपन में एवं अन्य प्राकृतिक लक्षणों में कमी आ जाती थी जिसके कारण खेती कर पाना मुश्किल हो जाता था।

इस समस्या का हल निकालने के लिए श्री हरजीभाई ने फसल का आवर्तन एवं अंतर/मिश्रित तरीके से फसल तैयार करने की कोशिश की। उसने स्वयं कृमि व कैंचुओं की खाद तैयार की। उसने असरदार सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल किया। फसल आवर्तन तथा विविधीकरण से जमीन की उर्वरकता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। फसल आवर्तन करने से पैदावार में 2 क्विंटल प्रति एकड़ की वृद्धि हुई जिससे ₹ 17,500 प्रति एकड़ का लाभ मिला। इससे पैदावार लागत में लगभग 40 प्रतिशत (रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक दवाओं की लागत करीब–करीब शून्य हो गई) की कमी आई।

नवाचार/तकनीक का असर

जैविक खेती करने से विशेषकर तिलहन और मूंगफली दोनों की पैदावार व गुणवत्ता अति उत्तम रही। उसकी फसल को बाजार में अच्छी कीमत मिली। व्याख्यान देने के लिए बहुत सी संस्थाओं ने उसे निमंत्रित किया। उसकी खेती ने यह साबित कर दिया कि सूखाग्रस्त इलाकों में फसल विविधीकरण सभी प्रकार की फसलों के लिए पारंपरिक तरीके से बेहतर है। इस विधि में लाभ अधिक और निवेश कम है। इस विधि से सिंचाई करने पर 60 प्रतिशत समय की बचत होने के साथ–साथ पानी की भी बचत होती है।

पहचान/इनाम

- सरदार वल्लभभाई कृषि संस्थान पुरस्कार
- स्नातक मित्र मंडल, भावनगर द्वारा धरती पुत्र पुरस्कार दिया गया
- राज्य सहकारी बैंक द्वारा नवाचारक किसान पुरस्कार दिया गया
- मोन्टेक सिंह आहुलवालिया द्वारा वडोदरा FCI पुरस्कार दिया गया
- लोक भारती विद्यापीठ द्वारा झुडना–फडना फल प्रति पुरस्कार दिया गया
- भूलचंद द्वारा कृषि पथदर्शक पुरस्कार प्रदान किया गया

मुद्दे

कुशल कारीगारों की बड़ी भारी किल्लत है। बताया गया है कि बाजार तक फसल पहुंचाना बड़ा मुश्किल काम है। लोगों को इसके बारे में पूरी जानकारी नहीं है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

प्याज के साथ पत्ता गोभी की अंतर–फसल लगाना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री देविंद्र सिंह
अनुभव	20 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	₹ 4 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	बताया नहीं
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	गांव व डाकखाना – नकोदर, जिला – जालंधर, पंजाब मोबाइल न.: 09872440130

बिजनैस मॉडल

श्री देविंद्र सिंह के पास 0.72 हैक्टेयर खेती की जमीन है। पत्ता गोभी और प्याज की फसल के साथ–साथ वह फूल गोभी, मिर्च, टमाटर, खीरा आदि की फसल भी उगाता है। इस विधि से उसने 300 टन प्रति हैक्टेयर पत्ता गोभी की पैदावार हासिल की। वह इस तकनीक के बारे में अन्य किसानों को मुफ्त सलाह देता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक ने पत्ता गोभी के साथ प्याज की अंतर–फसल लगाने की तकनीक विकसित की। इस कार्यविधि में उसने दिसम्बर में पत्ता गोभी और जनवरी के दूसरे सप्ताह में प्याज की फसल लगाई। पत्ता गोभी के बीजों का मूल्य 375 ग्राम/हैक्टेयर और प्याज का @2 किलोग्राम/हैक्टेयर था। उसने पत्ता गोभी की फसल 2 फुट के आकार की उभरी हुई क्यारियों के दोनों ओर लगाई। प्याज की फसल 15 सेंटीमीटर की दूरी पर पत्ता गोभी की क्यारियों के बीच लगाई। उसने 15 किलोग्राम को दो खुराकों में बांट कर ड्रिप सिंचाई के जरिए केवल 30 किलोग्राम/हैक्टेयर यूरिया की खुराक दी। उसने घास–फूस नाशी दवा का प्रयोग करके खेत में केवल दो बार हाथ से निराई की।

नवाचार/तकनीक का असर

आमतौर पर किसान पत्ता गोभी और प्याज की अलग–अलग फसल लगाते हैं। इस तकनीक से पत्ता गोभी की पैदावार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आई अपितु श्री देविंद्र सिंह ने इसके साथ–साथ प्याज की फसल भी ले ली। इस तकनीक का इस्तेमाल करने से किसान को दुगनी आमदनी हुई और एक फसल की बचत भी हुई। इस तकनीक से किसान ने मजदूरी और बीज दोनों में बचत कर ली।

पहचान/इनाम

- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से सुरजीत सिंह ढिल्लों पुरस्कार प्राप्त किया

मुद्दे

नवाचारक आर्थिक सहायता लेना चाहता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

उभरी हुई स्थिर क्यारियों संबंधी तकनीक

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री सनत कुमार दास
अनुभव	7 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 5.5 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	8 एकड़ खेती की जमीन
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	गोवर्धन इको गांव, गलतारे, हमरापुर, (डाकखाना), वाडा (तालुक), थाणे जिला – 421303 महाराष्ट्र, भारत, मोबाइल न.: 09930141781

बिजनैस मॉडल

संस्थापक से 80जी ट्रस्ट में मिलने वाले कर लाभ के तहत इस परियोजना के लिए धन राशि प्राप्त की जाती है। मुम्बई के सार्वजनिक कार्यक्रमों में इस उत्पाद का प्रदर्शन करके बाजार में इसकी बिक्री करता है। वह दूसरे किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है। मुम्बई में रसायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाओं को इस्तेमाल करके उगाई गई फसलों के मुकाबले जैविक फल, सब्ज़ी और औषधीय धान बाजार में 30 से 40 प्रतिशत अधिक कीमत पर बेचे जाते हैं। लगभग ₹ 150 से 300 प्रति वर्ग मीटर का कुल सलाना मुनाफा होता है जो काश्त की गई किस्म पर निर्भर करता है।

नवाचार का विवरण

फसल के लिए इस विधि से जमीन तैयार करने में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यह मंहगी और ज्यादा समय लेने वाली प्रक्रिया है। इस कड़ी मेहनत से बचने के लिए श्री सनत कुमार दास ने उभरी हुई स्थिर क्यारियों की कल्पना को अंजाम दिया। फसल लगाने से पूर्व जमीन तैयार करना बहुत ही महत्वपूर्ण काम है। इसके लिए मानवश्रम, ट्रैक्टर, ऊर्जा और समय की जरूरत होती है। प्रत्येक फसल के लिए इस कार्यविधि को दोहराया जाता है। अतः इस मेहनत से बचने के लिए उसने गोबर खाद, पत्ती और मिट्टी का इस्तेमाल कर उभरी हुई स्थिर क्यारियां तैयार कीं। यह उभरी हुई क्यारियां यांत्रिक विधि से तैयार की गई जमीन के मुकाबले अधिक उपजाऊ होती हैं। पानी का पूरा इस्तेमाल व बचत के लिए माईक्रो फव्वारों का प्रयोग किया जाता है। गोबर खाद के लिए उसके पास 20 देशी गायें हैं। इन गायों का आहार वहीं तैयार होता है। किसानों व गैर–सरकारी संस्थाओं से कच्चा माल प्राप्त किया जाता है। उभरी हुई स्थिर क्यारियां केवल एक बार तैयार करनी पड़ती है तत्पश्चात् उन पर बहु–विध तरीके की खेती की जा सकती है। सब्जियों और औषधीय किस्म के चावलों की खेती इन उभरी हुई स्थिर क्यारियों पर की जाती है।

उभरी हुई स्थिर क्यारियां विशेषकर चावल–गेंहू की खेती की बुनियादी प्रणाली का असरदार पर्याय है। इसका असर भूमि की बढी हुई उर्वरकता और मजदूरी में कमी, रसायनिक उर्वरको व कीटनाशक दवाओं व जमीन तैयार करने की लागत में हुई कटौती में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

उभरी हुई स्थिर क्यारियां बनाने की तकनीक से खेती के लिए जमीन तैयार करने में कम मेहनत पड़ती है। पैदावार में 50 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है। इस तकनीक के कारण पैदावार, जल वितरण व कार्यक्षमता और गोबर खाद के सही इस्तेमाल में सुधार व खर–पतवार की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बिजली आपूर्ति नियमित नहीं रहती

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

हरा–भरा बगीचा – किफायती जैविक खेती के लिए परियोजना का समूचा विकास व प्रबधन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नितिन भोरे
अनुभव	25 साल
कार्य क्षेत्र	पुणे
कुल बिक्री	₹ 75 लाख
विस्तार	100 एकड़
कर्मचारियों की संख्या	15–20
संपर्क विवरण	54, श्री शिवाजी हाउसिंग सोसाइटी, सेनापति बापत मार्ग, पुणे – 411016 ई–मेलः bhorenitin@rediffmail.com, मोबाइल न.: 09822604275, 09967042751

बिजनैस मॉडल

वह भारत में किफायती जैविक खेती के सलाहकार के रूप में विभिन्न सरकारी तथा गैर–सरकारी परियोजनाओं का संचालन करते हैं।

नवाचार का विवरण

श्री भोरे ने जैविक खेती में ऐसी काबलियत दिखाई है जो अत्याधिक किफायती है और उसने इसके लिए बाजार संपर्कों को भी विकसित किया है और आजकल वह जैविक खेती के सलाहकार के रूप में भी काम करता है। रसायनिक निवेश पर आधारित खेती की तुलना में जैविक खेती में विशेषकर पाई गई कम पैदावार से अपेक्षाकृत कम लागत पर अधिक लाभ मिलता है।

सलाहकार के रूप में काम शुरू करने से पहले उसने तीन साल के लिए स्वयं जैविक खेती करने का प्रयास किया ताकि इस प्रक्रिया को पूरी तरह समझा जा सके और फसल की लागत व मार्केटिंग का पता लगाया जा सके। उसने पुणे जिले में 100 एकड़ भूमि पर उत्तम जैविक खेती का इस्तेमाल करके घास–पात से ढक कर अंतर–फसल सहित ड्रिप सिंचाई प्रणाली के तहत उभरी हुई स्थिर क्यारियों मे अधिक पैदावार वाली चुनी हुई विभिन्न फसलों की खेती की। इन तीन सालों में 20 प्रकार की भारतीय सब्जियां, 15 विदेशी सब्जियां, 25 फल, 7 मसाले, 4 किस्म के तिलहन और कुछ अन्य फसलें लगाईं। उसने पहले साल में ₹ 30 लाख का राजस्व प्राप्त किया। दूसरे साल उसने दूसरी फसलें और विभिन्न तकनीकें अपना कर ₹ 56 लाख का राजस्व प्राप्त किया। तीसरे साल में उसके राजस्व में ₹ 75 लाख की वृद्धि हुई। श्री भोरे ने न केवल उत्तम जैविक खेती पर ध्यान दिया अपितु बाजार में जैविक वस्तुओं की मांग को पूरा करने के साथ–साथ मार्केट में संपर्क भी बढाए। सफल अनुभव प्राप्त करने के बाद उसने सलाहकार के रूप में अपना नया काम शुरू कर दिया। इस प्रोजेक्ट में महत्वपूर्ण कार्यकलाप, भूमि का विकास और बेहतर गतिशीलता की रूपरेखा बनाते हुए कृषि कार्यप्रणाली व निवेश का मशीनीकरण, बीज, कीटनाशक दवाएं, उर्वरक, माइक्रोपोषक तत्व, जैविक उर्वरक, उपकरण, मशीनरी जैसे वास्तविक जैविक उत्पादों की एजेंसियों की समयबद्ध गतिविधियां एवं साधन शामिल है। जैविक खेती के विभिन्न पहलुओं पर काम करने के लिए उसके साथ बहुत से ऐसे प्रगतिशील किसान, फार्म हाउस मालिक, गैर सरकारी संस्थाएं तथा ट्रस्ट जुड़ चुके हैं। सालाना आपूर्ति, गुणवत्ता, मात्रा एवं सही किस्म के कच्चे माल के प्रापण, योजना, व कृषि संबंधी विभिन्न संस्थाओं के साथ उसने काम भी किया है।

नवाचार/तकनीक का असर

श्री भोरे ने सलाह दी है कि इस विधि से उत्पादन लागत में 30 प्रतिशत की कमी आती है और यह भू–क्षरण को कम करके भू–संरक्षण प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण विकास में भी इससे योगदान मिलता है। किसानों की आर्थिक स्थिति

में सुधार लाने के उद्देश्य से उसने जैविक खेती को संकेंद्रित करके 'बहु प्रोजैक्ट अवसरों' के बारे में जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन किया।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

श्री भोरे के अनुसार लोगों को जैविक खेती की अवधारणा के प्रति और इसके अगले–पिछले दोनों प्रकार के संपर्कों से होने वाले लाभों के प्रति लोगों को जागरूक बनाना अत्यंत अनिवार्य है। उपभोक्ताओं को यह जानने की जरूरत है कि जैविक खेती की फसल में किसी प्रकार के परिरक्षक अथवा नुकसानदेह रसायन नहीं होते अतः खरीदते समय ऐसे उत्पादों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसी प्रकार फसल उत्पादकों को भी इस विधि को अपनाना चाहिए जो न केवल जैविक खाद्य बाजार का लाभ उठाएगी अपितु भूमि की गुणवत्ता को सुरक्षित रखने तथा अधिक पैदावार देने में सहायक भी होगी। चूंकि जैविक खेती से लाभ धीरे–धीरे प्राप्त होता है अतः किसानों को परिणाम पाने के लिए धैर्य रखना होगा ताकि समय पर लाभ दिखाई देने लगे। बाजार में वास्तविक एवं प्रमाणिक जैविक खेती में निवेश करना बड़ी चुनौती है, जिसकी कमी कभी–कभी किसानों को निरूत्साहित कर देती है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

जैविक खेती से बंजर भूमि को खेती योग्य बनाना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अशोक संघवी, श्री भास्कर सावे
अनुभव	40 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र, गुजरात
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	संघवी फार्मस,– पत्राचार कार्यालय, 23 ए, सैंट्रल चौपाट्टी बिल्डिंग, चौपाट्टी, मुम्बई फोन न.: 02223615184

बिजनैस मॉडल

उनसे मिलने आने वाले किसानों को वे मुफ्त में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। उन्होंने वलसाड में अपने फार्म में एक प्रशिक्षण केंद्र भी खोला है।

नवाचार का विवरण

श्री भास्कर सावे ने अपने बंजर फार्म को खेती योग्य बनाने के लिए 40 साल पहले जैविक खेती की ऐसी तकनीक विकसित की जिससे रसायनों के अत्याधिक प्रयोग के कारण बंजर हुई जमीन खेती योग्य बन गई। इन सालों के दौरान इस तकनीक को और बेहतर बना कर उसने जमीन के उपजाऊपन और पैदावार में भारी सुधार किया जो लम्बे समय तक कायम रहने वाला था। इनकी यह तकनीक आस–पास के किसानों के बीच काफी प्रचलित हो गई और उनमें से बहुत से किसानों ने अपने खेतों में इस तकनीक को कार्यान्वित कर लिया विशेषकर उन खेतों में जो बंजर हो चुके थे। श्री संघवी जो एक व्यापारी हैं, जब उन्हें इस तकनीक की जानकारी मिली तो वह वलसाड (गुजरात) में खरीदी हुई अपनी बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए श्री भास्कर सावे से मिले। उन्होंने इस बंजर भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल करना आरंभ कर दिया।

इस तकनीक के मूलतः 6 मुख्य पहलु हैं :

कैंचुओं के जरिए खेत की जुताई करना : चट्टानों को जमीन से हटाना ताकि जड़ें जमीन के नीचे तक जा सकें इसके लिए पहले पांच सालों में केवल हाथ से जुताई की जाती है। इसके बाद हाथ से जुताई करने का काम कभी नहीं किया जाता क्योंकि यह मौजूदा जड़ों को नष्ट कर सकती है, इसकी अपेक्षा जमीन को भरपूर जैविक सामग्री के साथ गीला रख कर कैंचुओं की आबादी बढाने के लिए अधिक बेहतर बनाया जाता है।

रसायनिक खेती की अपेक्षा जैविक खेती : रसायनों के स्थान पर केवल जैविक खाद का ही प्रयोग किया जाता है। इस्तेमाल की जाने वाली अधिकांश जैविक सामग्री आंतरिक स्त्रोतों से प्राप्त की जाती है जैसे फसल के अवशेष, पत्तियां, खर–पतवार और विशेषकर बॉयोगैस गारा, गोबर एवं कुक्कुट अपशिष्ट, शहरी कूड़ा–करकट यहां तक कि पोखरों की गाद का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

पौधों का नहीं अपितु भूमि का प्रत्यक्ष पोषण : जैविक खाद और सिंचाई जल दोनों को पौधों से कुछ दूरी पर रखा जाता है। खाद पौधों का नहीं अपितु भूमि का भोजन है। ऐसे वातावरण वाली जमीन पर पनपकर कैंचुए जमीन को खाद, NKP, माइक्रोपोषक तथा अन्य महत्वपूर्ण तत्वों से भरपूर बना देते हैं। खाद मिट्टी को सोख कर नमी बनाए रखती है जिससे मिट्टी पौधों के पोषक तत्वों को घुलकर बहने से रोक लेती है। जड़ें नमी और पौधों के पोषक तत्व दोनों को सोख कर पत्तियों तक पहुंचाती हैं। पेड़ों की सिंचाई उनके तनों से कुछ दूरी पर की जाती है। इस तरह पौधों को पोषित करने से उनकी जड़ें मजबूत हो जाती हैं।

एक कृषि फसल नहीं : कम, मध्यम तथा लम्बे समय वाले पौधों के साथ क्रमशः छोटी, मध्यम व लम्बी जड़ों को इस प्रकार रोपा जाए कि लम्बे, छोटे व मध्यम काल वाले पौधों के बड़े होने पर उनकी कटाई की जा सके। जब नए बगीचे की शुरूआत

करते समय सब्जियां (लघु काल) केला व पपीता (मध्यम काल) तथा चीकू अथवा नारियल (दीर्घ काल) आदि को एक साथ लगाया जाता है। तीन महीने बाद सब्जियों की कटाई, दो या तीन साल में केले को निकाल कर इसका प्रयोग पौधों को घास–पात से ढकने के लिए किया जाए तथा चीकू व नारियल के पौधौं को पनपने के लिए खुली जगह छोड़ी जाए। पेड़ों की अन्य बहुत सी किस्मों को कम संख्या में रोपा जा सकता है।

प्राकृतिक कीट नियंत्रण : इस प्रकार से पोषित पौधे बहुत ही सेहतमंद होते हैं और रोगों के प्रति शक्तिशाली प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेते हैं जिससे कि कीटनाशक दवाओं की जरूरत नहीं पड़ती। इसके बाद भी कुछ पौधे जैसे मीठी नीम (करी पत्ता) भी कीड़े–मकौड़ों पर नियंत्रण रखने में मदद करते हैं। अन्य तरीकों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है जैसे एक हिस्से गाय के पेशाब में आठ हिस्सा पानी मिला कर पौधों पर छिडकाव करना। मृत घास–फूस की निराई न की जाए क्योंकि यह भूमि को शक्तिशाली विकिरणों से सुरक्षित रखने के साथ–साथ जमीन में नमी बनाए रखती हैं तथा इनसे अतिरिक्त खाद भी मिलती हैं।

कम मजदूरी : चूंकि इस तकनीक में कम क्रियाकलापों की जरूरत होती है और रसायनों का प्रयोग नहीं किया जाता अतः इस प्रक्रिया में अधिक मेहनत की आवश्यकता नहीं होती।

नवाचार/तकनीक का असर

इस नवाचार का असर अत्याधिक नज़र आता है – क्योंकि इसका सत्यापन इन तथ्यों से किया जा सकता है कि उनके खेतों को देखने आने वाले किसानों को बताने व प्रशिक्षित करने के लिए उन्होंने अपने फार्म में प्रशिक्षण केंद्र खोल दिया है। विभिन्न प्रकार की फसलों पर इस तकनीक के पर्याप्त असर से मिडिया वालों ने इसका व्यापक रूप से प्रचार किया – उदाहरण के लिए नारियल के पौधे 7 सालों के बदले मात्र 3 साल में फल दे सकते हैं इसी प्रकार लीची पर भी इसके प्रभाव देखे गए है।

पहचान/इनाम

- 1993 में लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड, मुम्बई से 'वर्ष का व्यक्ति' नामक पुरस्कार मिला
- 2000 में माननीय श्री कृष्ण कांत, भारत की जैविक खेती, विज्ञान व तकनीक व 'ग्रामीण विकास कार्य' के उपाध्यक्ष द्वारा 'जमनालाल बजाज' पुरस्कार प्रदान किया गया।
- 2008 में ' कृषि विज्ञान केंद्र – अहमदनगर' से 'राज्य करूषी पुरस्कार' मिला
- 2010 में 'IFOAM जर्मनी' से 'One World' सफल जीवनकाल' पुरस्कार प्राप्त किया।

मुद्दे

श्री सावे और श्री सिंघवी की लम्बे समय की कामयाबी को देख कर किसान उनके पास आने लगे। परंतु वह दोनों यह महसूस करते हैं कि यद्यपि उनकी जैविक खेती की तकनीक की शुरूआत के लिए उन्हें बहुत से पुरस्कार मिले हैं लेकिन जैविक खेती को उत्साहित करने के लिए सरकार की ओर से वास्तविक साथ नहीं दिया जा रहा। इसकी कमी महसूस की गई जो इस प्रकार की खेती को लोकप्रिय बनाने में बाधक है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पहाड़ी इलाकों में बागवानी

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अरूण गवित
अनुभव	14 साल
कार्य क्षेत्र	थाणे
कुल बिक्री	नही बताया
विस्तार	7.75 एकड़
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	वानवसी, एपी नहले बुडरूक, तालुक – जवाहर, जिला – थाणे, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09225862368

बिजनैस मॉडल

आम, अन्नास, फूल, अमरूद, काजू, केला, सब्जियां और चावल उसकी आमदनी के मुख्य स्रोत हैं। पिछले साल इन सभी स्रोतों से उसकी कुल आमदनी ₹ 3.12 लाख थी। उसे डीजल इंजन, बिजली की मोटर एवं पाइपों पर 100 प्रतिशत आर्थिक सहायता मिलती है। ड्रिप सिंचाई यंत्र पर भी उसे 50 प्रतिशत की आर्थिक सहायता मिली है।

नवाचार का विवरण

पहाड़ी इलाकों में मिट्टी की परत बहुत ही पतली होती है। पूर्व में वराई (चावल की देसी किस्म) एवं अन्य फसलों की खेती की जाती थी। परंतु पहाड़ी इलाकों में ढलान के कारण पैदावार बहुत कम होती थी। वास्तव में पैदावार केवल इतनी ही होती थी जो किसान के परिवार के लिए पर्याप्त हो। इसके कारण गरीबी बढने लगती थी और बहुत से किसान शहरों की ओर पलायन कर अपने पारंपरिक कृषि कार्य को पीछे छोड़ देते थे। श्री गवित ने महसूस किया कि केवल पारंपरिक धान की खेती पर निर्भर रहने से समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता। इसके परिणामस्वरूप उसने ऐसी बहुत सी फसलों के बारे में जानकारी हासिल की जिन्हें पहाड़ी इलाकों में पारंपरिक ढंग से उगाया जा सकता था। मुख्य रूप से फूल और नर्सरी ही लम्बे समय तक चलने वाली फसलें निकली, जबकि फलों के पेड़ों से मिलने वाली आमदनी मौसम के अनुकूल होती थी। आम की विभिन्न किस्में जैसे केसर, हापस, राजपुरी, तोतापुरी, नीलम, पायरी मलगावों, आदि को ढलान पर उगाया जा सकता था। नर्सरी में इन किस्मों के लिए बीज तैयार किए गए। इसी प्रकार उसने 150 वेनगुरला, 4 किस्म के काजू, अमरूद की 30 स्थानीय किस्में, बारडोली किस्म के 30 जामबुल पेड़ लगाए। गर्मियों और सर्दियों के मौसम में सब्जियां और बरसात के मौसम में धान लगाए।

नवाचार/तकनीक का असर

उसकी कामयाबी को देख 43 दूसरे किसानों ने भी कृषि की इस परंपरा को अपनाया जिससे पलायन काफी हद तक कम हो सका।

पहचान/इनाम

- BAIF द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।

मुद्दे

इन उत्पादों के लिए अच्छे बाजार की आवश्यकता है। खेत से सीधे फसल उठाने वाले व्यापारी बहुत कम कीमत लगाते हैं। दूसरी ओर किसानों की अभी भी बहुत कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वे दूरस्थ बाजारों तक अपनी फसल पहुंचाने में असमर्थ हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

लीची के बगीचों को ठंडा रखने के लिए कूलर के रूप में फव्वारों का इस्तेमाल

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री सुधांशु कुमार
अनुभव	23 साल
कार्य क्षेत्र	बिहार
कुल बिक्री	₹ 45 लाख़ प्रति वर्ष
विस्तार	लीची के लिए 50 टन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	10
संपर्क विवरण	गांव व डाकखाना – नयानगर, जिला – समस्तीपुर, बिहार – 848208 फोन नः 06275 223183, 09934917017 (मोबाइल), ई–मेलः sudhanshu5506@gmail.com

बिजनैस मॉडल

श्री सुधांशु कुमार के पास 200 एकड़ खेती की जमीन है जिस पर उसने आम और लीची के बाग लगाए हैं। इसके अतिरिक्त वह गेहुं तथा बहुत सी अन्य फसलों की भी खेती करता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक ने लगभग 15 एकड़ जमीन पर लगभग 1100 लीची के पेड़ लगाए हैं। आमतौर पर नवाचारक प्रत्येक पेड़ के नीचे 4 ड्रिप लगाता था परंतु जब उसे यह महसूस हुआ कि लीची की अच्छी पैदावार के लिए उसे माइक्रो जलवायु नियंत्रण प्रणाली की जरूरत है। तब उसने मौजूदा ड्रिप प्रणाली के साथ प्रत्येक पेड़ के नीचे 1 फव्वारा भी लगा दिया। गर्म लू चलने पर उसने फव्वारों को लगातार 3–4 दिन तक रूकने नहीं दिया। इस प्रणाली ने बगीचे में 1100 माइक्रो फव्वारों सहित एक बड़े शीतल यंत्र के रूप में काम किया।

नवाचार/तकनीक का असर

बिहार क्षेत्र में गर्म जलवायु होने के कारण लीची फट जाया करती थी जिससे पैदावार कम हो जाती थी। 15 एकड़ के लीची के बगीचे से इस विधि से काम करने पर उसे ₹ 5 लाख का मुनाफा हुआ। इससे प्रारंभिक अवस्था में फूल गिरने भी कम हो गए जिससे लीची की अच्छी किस्म मिलने लगी। नवाचारक निर्यात किस्म के फल भी हासिल करने में सक्षम हो गया। इस क्षेत्र में बहुत से किसानों ने अपने लीची के बगीचों में इस तकनीक को पहले से ही अपनाना शुरू कर दिया है।

पहचान/इनाम

- किसान भूषण पुरस्कार से सम्मानित
- ग्राम पुष्कर पुरस्कार से सम्मानित

मुद्दे

नवाचारक अपनी जमीन को लेकर बहुत सी प्रशासनिक समस्याओं का सामना कर रहा है।

भविष्य में निर्यातकों को लीची की बेहतर फसल उपलब्ध कराने के लिए वह एक पिछवाड़ा बनाने की योजना बना रहा है जिसके लिए उसे आर्थिक सहायता की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

आम के बगीचे (बीज बोना एवं उसी स्थान पर पौधे की कलम लगाना)

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री वसंत फूटाने
अनुभव	37 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 2 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	25 क्विंटल से 50 क्विंटल
कर्मचारियों की संख्या	
संपर्क विवरण	संवाद रावला, डाकखाना – सतनूर, तालुक – वरूद, जिला – अमरावती

बिजनैस मॉडल

श्री वसंत फूटाने के पास फलदार पेड़ो वाली 10 एकड़ जमीन है। उसमें से लगभग 6 एकड़ जमीन पर आम के पेड़ लगे हैं। हर साल उसे ₹1.5 लाख का मुनाफा होता है। वह अपने आमों को स्थानीय बाजार में बेचता है और अपनी फसल के लिए मौखिक प्रचार पर निर्भर रहता हैं।

नवाचार का विवरण

इस इलाके में चूंकि संतरे की खेती होती है इसलिए पानी का स्तर जमीन के बहुत नीचे चला गया है और संतरों को डिब्बों में बंद करने के लिए लकड़ी की जरूरत को पूरा करने के लिए पेड़ों को बड़े पैमाने पर काटा जाता है जिसके कारण पर्यावरणीय प्रणाली पूरी तरह असंतुलित हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में केवल एक फसल ही पर्यावरणीय प्रणाली को सही रख सकती है और वह है आम। नवाचारक ने अपने बाग में 50 विभिन्न किस्मों के आम उस वक्त लगाए जब लोग केवल अल्फांसो किस्म के आम लगाया करते थे। इनमें से कुछ किस्में स्वाद, रंग व आकार में बहुत बढिया थीं और उसे अच्छा मुनाफा हुआ परंतु कुछ किस्मों का स्तर सही नहीं था। श्री वसंत ने तब कुछ ऐसी किस्मों की क़लमें तैयार की जो नई किस्म की पैदावार करने मे इतनी बढिया नहीं थी। आज उसके पास आमों के 250 पेड़ हैं जिनमें से आधे की क़लमें बनाई गईं और अन्य आम की जानी पहचानी किस्में हैं जैसे राजपुरी, दशहरी एवं रत्ना आदि।

नवाचार/तकनीक का असर

आम के पेड़ पर्यावरणीय प्रणाली को संतुलित करते हैं और आम पर्यावरण–अनुकूल है। इलाके में जैव–विविधता लाने में सहायक होते हैं। आम ही एक ऐसा पेड़ है जो बहुत लंबे समय तक चलता है और लंबे समय बाद लाभ देता है। बहुत से लोगों ने इसके महत्व को समझा और उसके आम के बाग का मुआइना करने आए।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

पूरे इलाके में यही एक इकलौता आम का बाग है और इसे भी बहुत सी समस्याओं से निपटना पड़ता है जैसे तोते, बंदर आदि। नवाचारक अपनी माली हालत के कारण अपने बागान को आगे बढाने में असमर्थ है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बहु फसल ढांचा

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

कृषि परंपरा

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री आनंद सिंह ठाकुर
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	मध्य प्रदेश
कुल बिक्री	₹ 5 से 6 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	1 स्थायी, 5–10 दिहाड़ी पर
संपर्क विवरण	गांव – उमारीया खुर्द, डाकखाना – दूधिया, तहसील व जिला – इंदौर, मध्य प्रदेश मोबाइल नः 09301301901

बिजनैस मॉडल

पूरे साल सभी प्रकार की आवश्यक सब्जियां, फल, दालें, सरसों, गन्ने आदि की फसल लगाई जाती है। वह खाद्य सामग्री खरीदने के लिए बाजार पर निर्भर नहीं रहता। अपने परिवार की जरूरत का सामान वह अपने खेत से ही लेता है और बची फसल को अपने किसान ग्रुप (परंपरा ऑरगैनिक ग्रुप) द्वारा अच्छे ढंग से तैयार की गई बाजार श्रृंखला में ऑरगैनिक नाम से बेच देता है। वह 1 से 1.5 लाख प्रति वर्ष का लाभ कमाता है।

नवाचार का विवरण

7 हैक्टेयर भूमि पर बाजार संचालित फसल प्रणाली के तहत एक फसल लगाने के स्थान पर उसने फसल का ऐसा स्वरूप तैयार किया जो पहले उसकी सभी मांगो को पूरा करे। अपने आप में यह किसानों की आत्म निर्भरता का अति उत्तम उदाहरण है। वह 10 से 15 किस्म की सब्जियां, गन्ना, सरसों, मक्का, गेंहु आदि की विभिन्न फसलें और शरीफ़े, केला, आम, नींबू, खजूर, आमला आदि, दालें, औषधीय पौधे, ईंधन की लकड़ी जैसी सभी फसलों की पैदावार करता है। वह जैविक तरीके से खेती करता है। कई सालों के कृषि अनुभव के बाद उसने यह पाया कि संभवतः 2–3 फसलें नाकाम हो सकती हैं परंतु इससे कुल मिला कर उसकी कमाई में कोई खास फर्क नहीं पड़ता। सभी मौसम के फल व सब्जियां पूरे साल उसकी रोजाना की मांग तो पूरी करती ही हैं और उसे मुनाफा भी होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

बहुत से किसान उसकी नवाचारक खेती के तरीके के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए उसके फार्म पर सलाह लेने आते हैं और उससे प्रेरित भी होते हैं। जैविक खेती से 40 प्रतिशत लागत में कमी आती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बिजली की कटौती भारी समस्या है। वह कृषि के इस तरीके के बारे में बहुत से किसानों को यह संदेश देना चाहता है और ऐसे विभिन्न अवसरों के बारे में जानना चाहता है जहां उसे अपनी रचनात्मकता दिखाने का मौका मिल सके। मजदूरों की भी बड़ी भारी समस्या है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

शीत जल धान संसाधन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फसल प्रक्रमण

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री वी.पी.गांगल
अनुभव	20 साल
कार्य क्षेत्र	जिला – रायगढ
कुल बिक्री	
विस्तार	225 क्विंटल प्रति दिन
कर्मचारियों की संख्या	5
संपर्क विवरण	डाकखाना – जनभीवली, तालुक – करजात, जिला – रायगढ फोन न.: 02148 226604

बिजनैस मॉडल

कच्चा धान किसानों से ₹ 900 प्रति क्विंटल पर खरीदकर संयंत्र में ₹ 125 क्विंटल के हिसाब से संसाधित किया जाता है। प्रतिदिन 300 क्विंटल धान को संसाधित किया जाता है और 20 से 30 प्रतिशत तक कच्चे धान का वजन कम होने की संभावना रहती है। रत्ना धान की मुख्य किस्म है जिसको संसाधित करना पड़ता है। संसाधित धान को घर–घर ₹ 1600 प्रति क्विंटल की कीमत पर बेचा जाता है।

नवाचार का विवरण

कच्चे धान को सामान्य क्रिया की तरह भाप दे कर उबालने की बजाय इस विधि से 300 क्विंटल क्षमता वाले बर्तन में धान को प्रतिदिन 6 घंटे तक भिगो कर रखा जाता है। उसके बाद अगले 6 घंटों तक धान को जमीन पर बिछा दिया जाता है ताकि फालतू पानी सूख जाए, तत्पश्चात इन्हें पकने के लिए भट्टी में रख दिया जाता है। पकने के बाद अनुभवी कारीगर कच्चे धान में नमी का जायजा लेता है और सही नमी और तापमान सुनिश्चित करके धान को भूसी निकालने वाली मशीन में डाल देता है, इसके बाद धान को पॉलिशिंग मिलों में भेजा जाता है। कच्चे धान को अधिकांशतः वाहक पट्टी (कन्वेयर वेल्ट) से लाया–लेजाया जाता है। अंत में धान में 20 प्रतिशत अतिरिक्त तेल की मात्रा और नाममात्र चावल के टूटे हुए दाने रह जाते हैं। आखिर में पॉलिश किए हुए चावलों को 50 किलोग्राम के बोरों में भर कर बेचा जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

यंत्रीकरण की इस प्रक्रिया से 50 प्रतिशत मजदूरी में बचत होती है। धान को भाप के बदले ठंडे पानी में भिगोने से 50 प्रतिशत तक बिजली की बचत होती है। 30 गांववासी इस संयंत्र का लाभ उठा चुके हैं।

पहचान/इनाम

- वर्ष 1995 के लिए वसंत राव प्रतिष्ठान पुरस्कार
- स्टार माजा टीवी साक्षात्कार

मुद्दे

बिजली की कटौती मुख्य समस्या है। काम करने वाले मजदूर अधिक भरोसेमंद नहीं होते क्योंकि वे अक्सर गैर–हाजिर हो जाते हैं। ऐसे मामले में बदलाव करना बहुत मुश्किल हो जाता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

बूरा/गुड़ बनाने का लघु संयंत्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

खाद्य संसाधन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नागेश एम. स्वामी
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 1,10,500
विस्तार	700 किलोग्राम गुड़, 600 किलोग्राम काकवी
कर्मचारियों की संख्या	2 पुरूष, 3 महिलाए
संपर्क विवरण	शेवाड़े (उम्बराज) , तालुक – कराड, जिला – सोलापुर – 415109 मोबाइल न.: 09822848432, 09423341861

बिजनैस मॉडल

नवाचारक के पास गन्ने की 1 एकड़ खेती है जिसमें गुड़ बनाने के लिए उसने लघु संयंत्र लगाया है। गुड़ बाजार में ₹ 55 प्रति किलोग्राम की दर पर बिक्री होता है जबकि काकवी ₹ 120 प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेची जाती है। इस प्रक्रिया में बचे अपशिष्ट का इस्तेमाल उसी खेत में हरित खाद के रूप में तथा प्रक्रिया संयंत्र में इंधन के रूप में किया जाता है। संयंत्र की प्रक्रिया लागत ₹ 30,000 प्रति मौसम आती है। नवाचारक अपने उत्पाद को मौखिक प्रचार के माध्यम से बेचता है और हर साल वह 100 प्रतिशत बिक्री करने में सफल हो जाता है।

नवाचार का विवरण

श्री स्वामी ने गुड़ बनाने के इस लघु प्रक्रिया संयंत्र को डिजाइन किया है जिसे वह ही इसे चला सकते हैं। पूरे संयंत्र को लगाने की लागत ₹ 1,22,000 है। नवाचारक संयंत्र में इस्तेमाल किए जाने वाले गन्ने की पैदावार जैविक खेती से करता है जिससे निवेश लागत न्यूनतम हो जाती है। इस संयंत्र को इस प्रकार से डिजाइन किया गया है कि इसमें बहुत कम मजदूरों की जरूरत पड़ती है क्योंकि गन्ने का कोल्हू बिजली ट्रैलर से चलता है। इस छोटी परियोजना के लिए सरकारी लाइसैंस नहीं लिया गया। अगले मौसम के लिए पहले से ही आदेश ले लिए गए हैं। सभी उत्पादों की सामग्री और गुणवत्ता की जांच प्रयोगशाला में की जाती है। अपने खेत में पैदावार बढाने के लिए गन्ने की फसल को बोते समय वह पंक्ति व कॉलम की दूरी रखता है ताकि अंतर–फसल के रूप में अधिक सब्जियां उगाई जा सकें। इस खेत से उसे 30 टन प्रति एकड़ की पैदावार मिलती है।

नवाचार/तकनीक का असर

बाजार में रासायनिक प्रक्रिया से तैयार गुड़ के मुकाबले जैविक गुड़ व काकावी से बहुत से स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। चूंकि इसमें कोई रक्षक व स्थायीकारक इस्तेमाल नहीं किया जाता अतः निवेश काफी कम हो जाता है। बहुत से किसान उसका खेत का मुआइना करने आते हैं। महाराष्ट्र राज्य में श्री स्वामी अन्य बहुत से किसानों के वास्ते इस डिजाइन के बारे में परामर्श करते हैं। वह इस काम की कोई फीस नहीं लेते अपितु इसे सामाजिक कार्य के रूप में करते हैं। इस प्रकार की गन्ने की खेती आत्म निर्भरता का सबसे अच्छा उदाहरण है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

दूसरे किसान जल्दी से लाभ कमाने के बहुत ज्यादा इच्छुक हैं इसीलिए गुड़ बनाने के लिए वे उर्वरकों एवं कीटनाशक दवाओं का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। वह सरकार से अपील करना चाहता है कि उर्वरकों व कीटनाशक दवाओं के इस्तेमाल पर रोक लगाई जाए और इस नवाचारी फार्म प्रोजैक्ट मॉडल को आजमाया जाए जो पर्यावरण व समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पैदावार का मूल्यवर्धन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

खाद्य संसाधन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नागेश एम. स्वामी
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 1,10,500
विस्तार	चना दाल 550 किलोग्राम प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	5–10 अस्थायी महिलाएं
संपर्क विवरण	शेवाड़े (उम्बराज), तालुक – कराड, जिला – सोलापुर – 415109 मोबाइल न.: 09822848432, 09423341861

बिजनैस मॉडल

अक्सर पारंपरिक सभ्य ग्राहक घर में बनी दाल की मांग करते हैं। यह ग्राहक अधिक पैसा देकर इसे थोक में खरीद लेते हैं। वह ₹ 50 से 55 प्रति किलोग्राम के हिसाब से दाल की बिक्री करता है। सूखी सब्जियों जैसे अन्य जैविक उत्पादों की भी अच्छी खासी मांग है। वह अपने उत्पादों की बिक्री घर से ही करता है। अधिक लाभ कमाने की बजाय वह केवल अपने परिवार के भरण–पोषण भर के लिए धन कमाना चाहता है। वह इस तकनीक के बारे में बहुत से अन्य किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

श्री नागेश स्वामी के पास केवल 3 एकड़ जमीन है। उसका परिवार इसी पैदावार पर आश्रित रहता है। अतः अपनी आमदनी बढाने के लिए उसने मूल्यवर्धित जैविक खेती की पैदावार का काम शुरू कर दिया। चना दाल उसकी मुख्य फसल है जिसे वह छोले रोप कर तैयार करता है। वह इसे हस्त चालित रोलर से संसाधित करके तैयार करता है। उसने उत्पादक सामग्री के स्थान के पुनर्डिजाइन करके इन रोलरों को तैयार किया जिससे यह आसानी से चना दाल तैयार कर सकते हैं। शेष सब्जियों को छाया में सुखाने के बाद पैक करके बाजार में बिक्री के लिए भेज देता है। वह सभी प्रकार की फसलों की खेती जैविक तरीके से करता है जिससे कि उर्वरकों, कीटनाशक दवाओं पर की जाने वाली निवेश लागत काफी कम हो जाती है। उसकी पत्नी भी इन सभी कार्यों में उसकी मदद करती है। उन्होंने ग्राहकों के ऑडर का पूरा रिकार्ड रखा हुआ है। इससे उन्हें अगामी मौसम में ज्यादा या कम फसल उगाने का अंदाजा लगाने में मदद मिलती है।

नवाचार/तकनीक का असर

चूंकि रोलर हाथ से चलाए जाते हैं अतः रोलर व सुखाने के यंत्रों पर बिजली के खर्च में कमी आती है। उसने उस इलाके में महिला कामगारों को हस्त चालित रोलरों पर काम करने का रोजगार दिया है। बहुत से किसान उसके खेत का मुआइना करते हैं और उससे प्रेरित भी होते हैं। छोटे किसानों के लिए आत्म निर्भरता का यह सबसे अच्छा उदाहरण है।

पहचान/इनाम

2011 में उसकी पत्नी को 'प्रगतिशील महिला किसान' की उपाधि दी गई

मुद्दे

नवाचारक रोलरों के लिए आर्थिक सहायता लेना चाहता है क्योंकि कभी कभी मांग अधिक होने के कारण वह उसे पूरा करने में असमर्थ रहता है।

उत्पाद चित्र

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील पदार्थ

नवाचार का सारांश

कैंचुओं का इस्तेमाल करके बंजर भूमि का कृमि उपचार करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील पदार्थ

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री डा॰ सुनीत वी. दबके
अनुभव	9 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 15 लाख
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	एफएफ/42, हीरावंती कोम्पलैक्स, आर्यकन्या विद्यालय के सामने, करेलीबाग, बडोदरा, (बरोदा) गुजरात–390018 मोबाइल न॰: 09824091307, ई–मेलः svdabke@yahoo.com, वेबसाइटः www.conceptbiotech.in

बिजनैस मॉडल

विषैले जैविक अपशिष्ट का उपचार कर उसे गैर विषैली खाद में तबदील करने के उद्देश्य से विशेषकर कपड़ा उद्योग, तेल शोधशाला, गोशाला, शराब की भट्टी, लुगदी व कागज मिल, खाद्य संसाधन इकाईयां, सड़े–गले मशरूम तथा कृषि से होने वाले अन्य प्रकार के कचरे आदि को सही ढंग से व्यवस्थित करने के लिए संयंत्र लगा कर उसने जैव प्रोद्योगिकी की धारणा को तेजी से पूरा करने का बीड़ा उठाया है।

नवाचार का विवरण

हाल ही के दशकों में रासायनिक सामग्री उद्योग में तेज़ी से हो रहे विकास के कारण वातावरण में बड़े पैमाने पर जमा हो रहे विषैले प्रदूषकों का हानिकारक असर पड़ रहा है। इस प्रकार के प्रदूषकों का उपचार व निपटान करने के विकल्प बहुत ही सीमित हैं। कचरे को ठिकाने लगाने के लिए जला कर नष्ट किया जाता है जिसका इस्तेमाल जमीन के भराव के लिए किया जाता है। इस निषेधात्मक कचरे का निपटान जमीन के भराव में करने से यह वातावरण में घुल कर फैल जाता है जबकि जलाया हुआ कूड़ा दूषित गैस में तबदील हो जाता है। दूसरी और इस कचरे की जगह निश्चित करने अथवा स्थिर रखने के लिए कचरे के ढेर को इक्कठा करने की जरूरत होती है परंतु उसकी भी हवा में घुल जाने की संभावना होती है। यह सभी प्रक्रियाएं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जमीन की उर्वरक शक्ति को नुकसान पहुंचाते हैं।

डा॰ दबके ने कैचुओं (2005 में) के जरिए से दूषित भूमि को साफ करने की विधि ढूंढ निकाली। उसने जमीन को ठोस बिषैले कचरे से खाली करके उसमें जीवाणुओं का संचार कर दिया। जीवाणुओं को पालने के लिए उसने कुछ पोषक तत्व डाले। उसके बाद उसने उस जमीन पर पशुओं के लिए हरा चारा लगाया तत्पश्चात उसे ट्रैक्टर का इस्तेमाल कर खत–पतवार से ढक दिया। उसके बाद उसने उस भूमि पर कैंचुए (कृमि छोड़ना) छोड़े क्योंकि भूमि में नमी बनाए रखने की क्षमता में उनसे वृद्धि होती है। इसके बाद उसने उस जमीन पर घास उगा कर फिर से कैंचुए छोड़ दिए। इस क्रम में उसे पूरे तीन साल लगे और अंत में जमीन पूरी तरह उपजाउ बन गई।

इस तकनीक दो मुख्य पहलु थे :

(क) जीवाणु पालन – सब्जियों के बचे हुए छिलकों (विशेषकर पालक, हरी शाक–सब्जी) आदि से जीवाणु पैदा होते हैं। इस कचरे में खमीर उठा कर इसमें से जीवाणुओं को अलग कर दिया गया। फिर विशेष प्रकार की फफूंद मिलाने के बाद जीवाणुओं के इस घोल को जमीन में डाल दिया।

(ख) कैंचुए पालना – कैंचुओं का इस्तेमाल कर विषैले कचरे का उपचार करने के लिए वास्तव में विशेषज्ञता की जरूरत होती है। कैंचुए इस प्रकार के विषैले वातावरण में पल नहीं सकते, उनके जीवन चक्र को बनाए रखना बहुत कठिन है। कैंचुओं को पहले औद्योगिक/बिषैले कचरे की प्रयोगशाला में जलवायु के अनुकूल बनाया जाता है। तब इन कैंचुओं का इस्तेमाल खेतों में किया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस कलाविधि के परिणाम वास्तव में अच्छे रहे। एक साल के अंदर जमीन के प्रदूषण में 60 प्रतिशत से ज्यादा कमी हुई। विषाणुयुक्त व बंजर जमीन वास्तव में पूरी तरह उपजाउ जमीन में तबदील हो गई। भूमि का N-P-K अंश प्रत्येक में 1 प्रतिशत तक बढ गया जो उपचार से पहले लगभग शून्य था। सीसा व अन्य भारी धातुएं 10 ppm से बढकर 500 ppm तक कम हो गईं। इस विधि से जमीन के पानी की मलिनता में लगभग 10 प्रतिशत तक की कमी पायी गई।

पहचान/इनाम

- उसके पहले प्रोजैक्ट को ब्लैकस्मिथ (अमरीका की गैर–सरकारी संस्था) तथा एशियन डेवलपमैंट बैंक द्वारा धनराशि प्रदान की गई और उसके इस प्रौजैक्ट GIDC की जमीन पर लगाया गया।
- CNN द्वारा उत्तम पर्यावरणीय समाधान पुरस्कार प्रदान किया गया।
- अमरीका सरकार ने 'फुल ब्राइट छात्रवृति' प्रदान की।

मुद्दे

कोई नहीं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृमिखाद, असरदार पैदावार के लिए डिजाइन की गई प्रक्रिया

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील सामग्री

नवाचारक का विवरण

नाम	उपयुक्त ग्रामीण तकनीमी संस्थान (ARTI)
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	40 वर्ग फुट क्षेत्र से ₹ 10,000 प्रति वर्ष
विस्तार	500 वर्ग फुट
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	गणेश नगर (अलगुडेवादी), फलटन बारामती रोड, तालुक – फलटन, जिला – सतारा– 415523 महाराष्ट्र फोन नः 02166 225200

बिजनैस मॉडल

वे कृमि खाद तकनीक से तैयार किए गए जैविक उर्वरक ₹ 5 प्रति किलोग्राम की दर से सीधे किसानों को बिक्री करते हैं।

नवाचार का विवरण

आजकल कृमिखाद लोकप्रिय हो रही है क्योंकि बॉयोगैस से तैयार किए गए जैविक उर्वरक की तकनीक रसायनिक उर्वरकों का किफायती विकल्प है। ARTI ने ज्यादा असरदार उत्पादन प्रक्रिया बनाने के लिए कृमि खाद तकनीक को विशेषरूप से तैयार किया है।

बहुत से प्रयोग करने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि लगभग 40 वर्ग फुट आकार की खाद की क्यारियों से अधिकतम पैदावार ली जा सकती है। यह 40 वर्ग फुट की क्यारियां सीमेंट व इंटों से बनाई जाती हैं। सभी सीमाओं को कीट रोधी तरीकों से चारों ओर से सील कर दी जाती हैं। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इस प्रक्रिया के दौरान खाद सामग्री कीड़े–मकौड़ों को आकर्षित करती है। तत्पश्चात क्यारियों को बॉयोगैस व कैंचुओं से भर दिया जाता है। खाद भण्डार को सूरज की रोशनी से बचाने के लिए क्यारियों को उपर से ढक दिया जाता है। पूरी प्रक्रिया के दौरान क्यारियों में उपयुक्त नमी बनाए रखी जाती है। प्रत्येक खाद भण्डार में 3 महीने के बाद लगभग 400 से 500 किलोग्राम कृमि खाद तैयार हो जाती है।

नवाचार/तकनीक का असर

संस्थान में उपलब्ध जैविक उर्वरकों ने उस इलाके में जैविक खेती को बढावा देने में मदद भी की है। तकनीक की सहजता को देखते हुए बहुत से किसानों ने इस तकनीक को सीखने में रूचि दिखाई है और खुद अपने लिए इसे तैयार भी करने लगे हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नमी के स्तर को स्थिर रखने के लिए सावधानी बरतने की जरूरत है। इस प्रक्रिया में मानव श्रम को कम करने के लिए मशीनीकरण की खोज की जा रही है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

अनार में संक्रमण, अंगूर के आकार का अनुसंधान

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील सामग्री

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री भगवान नैने
अनुभव	13 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 25,60,000
विस्तार	1,100 लीटर
कर्मचारियों की संख्या	5
संपर्क विवरण	डाकखाना – वाडियक, पुलपर, तालुक – कलवान, नासिक, मोबाइल नः 09423255024

बिजनैस मॉडल

बिक्री आदि का काम पूरा करने के बाद वह किसानों को मुफ्त सलाह देता है। फफूंद नाशी सामग्री की कीमत लगभग ₹ 580 प्रति लीटर और उत्पादन नियंत्रक की लगभग ₹ 3200 प्रति लीटर कीमत रखी गई है।

नवाचार का विवरण

उसने अनार, अंगूर व टमाटर के रोगों के बारे में गहन अध्ययन किया है। उसके अनुसंधान का मुख्य केंद्र बिंदु अंगूर का आकार बढाना और चिकने धब्बे के रोग से अनार को बचाना था। इस अनुसंधान से फलों के इन रोगों पर काबू पाने के लिए कुछ प्रभावशाली सूत्रों की उत्पत्ति हुई जिसके परिणामस्वरूप इन्हें केवल रोगों से बचाने में ही सक्षम नहीं हुए अपितु उपचार भी किया जा सका।

यह उत्पाद अनार के लिए फफूंदनाशी व जीवाणुनाशक है तथा अंगूर के लिए विकास नियंत्रक रसायन का काम करता है। दोनों प्रकार के उत्पादों का परीक्षण गहनता के साथ नासिक के आस–पास के खेतों में किया गया। अनार में चिकने–धब्बे वाले रोग के निदान के लिए इस रासायन के रोगनाशी गुणों का सफल परीक्षण भी किया गया। वर्तमान में इन उत्पादों को केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड (CIB) के पास पंजीकृत कराने पर विचार किया जा रहा है। उसने अपनी निर्माण यूनिट भी लगा ली है।

नवाचार/तकनीक का असर

अनार और अंगूर के फल में लगने वाले रोगों ने उस इलाके के किसानों को काफी परेशान कर रखा था। इन सूत्रों ने किफायती तरीके से रोगों का मुकाबला करने में उनकी असरदार ढंग से मदद की। उस इलाके में युवाओं के लिए रोजगार मुहैया कराने के साथ–साथ इन उत्पादों पर किसानों का पूरा भरोसा भी कायम हो गया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

उसे चिंता है कि केंद्रीय कीटनाशी बोर्ड तथा पंजीयन समिति (CIBRC) से उत्पाद का अनुमोदन होने से पूर्व दूसरी कंपनियों को उसके इस ज्ञान की पहले से ही जानकारी दी जा रही है। उन्होने ये भी अहवान किया कि CIBRC से उत्पाद रजिस्ट्री कराना कठिन है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कीट, फंगस व विषाणुजनित रोगों का जैविक हल ECOGOLD 999 PLUS

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील सामग्री

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री प्रदीप भाटिया
अनुभव	47 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	120 करोड़
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	मैट्रो एक्सपोर्टर प्राइवेट लिमिटेड, 132, ककड़ चेम्बर, डा॰ एनी बेसंट मार्ग, वोरली मुम्बई – 400018 फोन न॰: 022 24916500 / 6530, ई–मेल: kamdar@metroexporters.net

बिजनैस मॉडल

पाकस कृषि उत्पादों व फसल के इन संरक्षकों की बिक्री स्थानीय बाजार में की जाती है। वह अपने विभिन्न एजेंटों के जरिए इनका वितरण ग्रामीण इलाकों में करते हैं। मैट्रो एक्सपोर्टर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा इनका निर्यात किया जाता है।

नवाचार का विवरण

जैविक फसल संरक्षक स्प्रे है जो हमें कीड़े–मकोड़ो फंगस तथा विषाणुजनित रोगों की व्यवस्था एवं रोकने के लिए यह एक संपूर्ण हल है। विशिष्ट प्रकार से असरदार तरीके से खेती करते समय यह रासायनिकों के किसी प्रकार के इस्तेमाल की जरूरत को पूरी तरह हल का देता है। यह कृत्रिम कीटनाशकों को हल्के पादपविषाक्त के साथ कीटनाशक दवाओं की ताकत को बेहतर ढंग से संतुलित कर देते हैं। इसमें विशेष प्रकार के भौतिक गुणों का मिश्रण है जैसे बाह्य परत में कम तनाव (बाह्य परत को बेहतर ढंग से ढकना व स्वचालन करना) कम परिवर्तनशीलता (कल्पित प्रयोगों में पतली सतहों व कम से कम बहाव के साथ देर तक चिपके रहना) और पानी की कम घुलनशीलता (बारिश से न मिटने देना)। पौधों को किसी प्रकार का नुकसान पहुचाए बिना बेहतर ढंग से पत्तों व कीड़ों की परतों में अंदर तक जाने के लिए इस स्प्रे में सुधार करके इन कीटनाशक रसायनों की क्षमता में वृद्धि की जाती है।

नवाचार / तकनीक का असर

यह स्प्रे भुरभुरी फंगस, काला गुलाबी धब्बा, खट्टास के चिकने धब्बे, खट्टास वाली मैली फफूंद, लोमयुक्त फफूंदी, बॉट्राइटिस फंगस आदि पर सफलतापूर्वक काबू पाने में सक्षम है। इस स्प्रे का इस्तेमाल करने से किसानों को कम बार स्प्रे करना पड़ता है क्योंकि यह एक ही समय में विभिन्न प्रकार के कीड़ों व रोगों पर काबू पा सकता है।

पहचान / इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

ग्रामीण इलाकों में इसका वितरण करना इस उत्पाद की सबसे बड़ी समस्या है। बड़े पैमाने पर स्थापित बड़ी कंपनियों के साथ मुकाबला करना बहुत कठिन है जिनका ग्रामीण इलाकों में बहुत व्यापक जाल फैला हुआ है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

जैविक कीटनाशक दवाओं को तैयार करना आसान है

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील सामग्री

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री आनंद सिंह ठाकुर
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	आस–पास के गांव
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	गांव उमरिया खुर्द, डाकखाना – दूधिया, तहसील व जिला – इंदौर, मध्य प्रदेश मोबाइल नः 09301301901

बिजनैस मॉडल

अभी तक व्यवसायिक नहीं किया गया। किसानों को मुफ्त सलाह दी जाती है।

नवाचार का विवरण

यह वास्तव में विभिन्न प्रकार की पत्तियों तथा अन्य प्रकार की जैविक सामग्री का काढा होता है। इस सामग्री में नीम, सफेदे जैसे पेड़, शरीफा, शकरकंद, विशालकाय अर्क प्रजाति के पेड़ (जिन्हें आमतौर पर मेडर के नाम से जाना जाता है) प्रत्येक की 1 किलो पत्तियां + 200 ग्राम लहसुन (पीसा हुआ) + 10 लीटर पानी + 10 लीटर गाय का मूत्र आदि शामिल होता हैं। इसे तब तक उबाला जाता है जब तक कि कुल मात्रा (10 लीटर) की आधी मात्रा न रह जाए और बाद में इस काढे को छान लिया जाता है। 10 लीटर के इस काढे को 600–700 लीटर पानी में मिला कर लगभग 1 हैक्टेयर भूमि पर इस्तेमाल (स्प्रे) किया जाता है। यदि खेत में यह सारी सामग्री उपलब्ध हो तो जैविक कीटनाशक दवा बनाने में कोई लागत नहीं आएगी। इसका इस्तेमाल करने से ₹ 2000 से 2500 प्रति एकड़ तक रासायनिक कीटनाशक दवाओं की बचत की जा सकती है। इस प्रकार सालाना लगभग ₹ 32,000 की रासायनिक कीटनाशक दवाओं में बचत होती है। रोगमुक्त व अच्छी पैदावार के कारण इस फार्म के उत्पाद की बिक्री में 20 से 30 प्रतिशत से ज्यादा इजाफा हुआ है।

नवाचार/तकनीक का असर

आस–पास के गांवों के किसानों ने इस जैविक कीटनाशक दवा का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। 40 एकड़ से अधिक भूमि पर इन जैविक कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल किया जा रहा है। इन जैविक कीटनाशक दवाओं के बारे में कहा जाता है कि यह कुछ लाभकारी कीड़ों को नुकसान नहीं पहुंचाते और कृषि लागत कम करने में यह किसानों के सहायक भी हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

व्यवसायिक उत्पादन करने के लिए निर्माण संयंत्र लगाने के बारे में तकनीकी जानकारी लेना चाहते हैं। कीट–पतंगों की यह प्रतिरोधी प्रक्रिया बहुत धीमी है – इसलिए इनका असर दिखने तक किसानों को धैर्य रखने की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

जैविक कीटनाशक दवाओं के लिए पत्तियों का काढा बनाना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

उर्वरक, कीटनाशक व योगशील सामग्री

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री आनंद सिंह ठाकुर
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	मध्य प्रदेश
कुल बिक्री	₹ 1.5 से 2 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	17 एकड़ के लिए 40 लीटर
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	गांव उमरिया खुर्द, डाकखाना – दूधिया, तहसील व जिला – इंदौर, मध्य प्रदेश मोबाइल नः 09301301901

बिजनैस मॉडल

वह अपनी भूमि के लिए जैविक कीटनाशक दवाएं तैयार करते हैं जिस पर वह आलू, गेंहू और अन्य किस्म की फसलें लगाते हैं। वह इसके बारे में भारतीय किसान संघ के 3 दिन के सम्मेलन में दूसरे किसानों को मुफ्त में जानकारी देते हैं। उसके खेत का मुआइना करने के लिए आने वाले बहुत से किसानों से वह सलाह मशवरा करता है।

नवाचार का विवरण

श्री आनंद सिंह ठाकुर पत्तियों व गाय के मूत्र से 'पत्तियों व अन्य जैविक सामग्री' का काढा होता है। इसमें इस्तेमाल की जाने वाली पांच विभिन्न प्रकार पत्तियों में नीम, सफेदे जैसे पेड़, शरीफा, शकरकंद, विशालकाय अर्क प्रजाति के पेड़ (जिन्हें आमतौर पर मेडर के नाम से जाना जाता है) प्रत्येक की 1 किलो की मात्रा में 250 ग्राम लहसुन, पानी और गाय का मूत्र मिलाया जाता है। इसे तब तक उबाला जाता है जब तक कि कुल मात्रा (10 लीटर) की आधी मात्रा न रह जाए और बाद में इस काढे को छान लिया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस काढे को बनाना और इस्तेमाल करना बहुत ही आसान है। अपेक्षित सभी सामग्री ग्रामीण स्तर पर मुफ्त में सहजता से उपलब्ध होती है जिससे कृषि लागत कम हो जाती है। यह जैविक कीटनाशक दवा सोयाबीन तथा अन्य प्रकार की फसलों के (शोषक कीड़ों,, पत्तों पर पोषित कीट आदि) कीटाणुओं और कीट–पतंगों पर काबू पाने के लिए बहुत ही असरदार है। इस जैविक कीटनाशक दवा का इस्तेमाल करने से लाभकारी कीट–पतंगो को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। इन कीट नाशक दवाओं का प्रयोग करने से गेंहू की पैदावार 10 क्विंटल से बढ कर 11 क्विंटल हो जाती है। इससे दानों का वजन बढने के साथ–साथ उनमें चमक भी बरकरार रहती हैं। इन जैविक कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करने से 20 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

पहचान/इनाम

- 2003 में सोयाबीन की सर्वोच्च पैदावार के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया

मुद्दे

जब रासायनिक कीटनाशक दवाएं बाजार में उपलब्ध हैं तब किसान इन कीटनाशक दवाओं को घर पर तैयार नहीं करना चाहते क्योंकि वे इनके लाभों से वाकिफ नहीं हैं।

उत्पाद चित्र

आई॰टी॰ और मोबाइल
अनुप्रयोग

नवाचार का सारांश

चल कृषि : मोबाइल कृषि परामर्श सेवाएं

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	डा॰ अरूण पांडे – टीसीएस नवाचारी प्रयोगशाला के प्रमुख
अनुभव	2 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, राजस्थान
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	20
संपर्क विवरण	9वीं मंजिल, निर्मल भवन, नारीमण प्वाइंट, मेरीन लाइन्स, आर एन गोयंका मार्ग, नारीमण प्वाइंट फोन न॰: 022 67788035

बिजनैस मॉडल

मोबाइल कृषि से संबंधित बहुत से लेख इंटरनैट पर उपलब्ध हैं। इसी प्रकार बहुत से मामलों के अध्ययन लेख समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं। टीसीएस कंपनियों को इस परिकल्पना से संबंधित नोट भेज कर यह स्पष्ट करते हैं कि कैसे मोबाइल कृषि उनके सामरिक लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करती है। दोनों संगठन व्यवसायिक व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर करने से पहले कृषि से होने वाले लाभ को देखने के लिए कुछ निवेश करते हैं। आमतौर पर टीसीएस कृषि निवेशक कंपनियों, कृषि विश्वविद्यालयों, पशु व मुर्गी पालन उद्योग, ग्रामीण बैंक, जीवन बीमा कंपनियों आदि जैसे अपने सांझीदारों के माध्यम से किसानों तक पहुंचता है। टीसीएस प्रोजैक्ट का निधिकरण करने के लिए मुख्य स्रोत है।

नवाचार का विवरण

मोबाइल कृषि किसानों को व्यक्तिगत तथा सर्वत्तोमुखी संवेदक तथा मोबाइल फोन पर आधारित नवाचारी मंच प्रदान करती है। यह एक ऐसा नवाचार है जो मोबाइल फोन पर किसानों को उनके प्रश्नों के उत्तर उनकी भाषा में देता है और उन्हीं की भाषा में सलाह अथवा प्रासंगिक सूचना सहित निजी तौर पर जबाव देता है। यह अशिक्षित किसानों की मदद भी करता हैं जो अपनी आवाज में एसएमएस भेज कर इन सेवाओं का इस्तेमाल कर सकते हैं। मोबाइल कृषि बहु–तकनीकों का इस्तेमाल करता है और भूमि, फसल और मौसम संवेदक तकनीकों के बारे में असरदार तरीके से जानकारी देते हुए व्यक्तिगत सलाह भी देता है। यह मंच किसानों के सांझीदारों को भी एक साथ इकठ्ठा करता है और इस प्रकार समन्वित सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

किसी रोग की भविष्यवाणी करना इस नवाचार की सबसे बड़ी विशेषता है। रोग के भविष्यवाणी मॉडल के लिए यह मानव सहभागी बोध की धारणा का इस्तेमाल करता है, जिसमें नमी, तापमान, पत्तों में गीलेपन जैसे बहुत से संवेदक आंकड़ों पर आधारित फसल शामिल होती हैं। बहुत से मॉडलों द्वारा सुनियोजित मिश्रित जोखिम यदि किसी निश्चित सीमारेखा को लांघ जाए तो यह स्वतः ही किसान के मोबाइल पर इस अनुप्रयोग को झट से सक्रिय कर देता है। इस अनुप्रयोग के माध्यम से किसानों से उनकी भाषा में उनकी खेती में पाए गए रोगों के लक्ष्णों से संबंधित बहुत से प्रश्न पूछे जाते हैं। साधारण से हां या ना के उत्तर से विशेषज्ञ को कृषि के जोखिमपूर्ण सूचकांक का पता चल जाता है। यदि दोनों सूचियां आपस में मिल जाएं तो विशेषज्ञ किसान को सुरक्षात्मक उपायों के बारे में आसानी से सलाह दे सकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

सही उर्वरक (उदाहरण के लिए NPK 19–19–19 के स्थान पर 13–0–45 के अनुपात में नाइट्रोजन फासफोरस तथा पोटैशियम) की पहचान करने से पैदावार में लगभग 1.5 क्यू/एकड़ लगभग (₹ 4000) की वृद्धि हो सकती है।

बाजार की कीमतें तय कर दी गई हैं ताकि किसान स्वंय यह चुनाव करें कि 'कहां और कब' 'कितनी कीमत पर'अपनी पैदावार की बिक्री करनी चाहिए। इससे मोल–भाव करने में छोटे और मध्यम किसानों को बल मिलता है। आजकल NLDEX के लिए मौजूदा कीमतें, भावी कीमतें और विश्वव्यापी कीमतें भी उपलब्ध हैं।

बैंक और बीमा कंपनियां भी मोबाइल कृषि का प्रयोग कर सकती हैं इससे किसानों के लिए क्रमशः अधिक तेज़ी से ऋण और ज्यादा व्यक्तिगत बीमा पैकेज दिए जा सकते हैं। इससे निश्चित ही बचत होती है भले ही यह बचत समय की हो अथवा पैसे की।

पहचान/इनाम

- क्वालकोम का वायरलैस रीच ग्रैंड पुरस्कार 2007
- स्वर्ण मयूर तकनीक नवाचारी पुरस्कार 2008
- वाल स्ट्रीट पत्रिका तकनीक नवाचारी पुरस्कार 2008
- वर्ष 2008 के लिए नैसकोम का सर्वोच्च 50 नवाचार
- भारतीय नवाचार प्रस्ताव (i 3) पुरस्कार 2009
- नैसकोम सामाजिक नवाचार सम्मान 2010
- व्यापार में उत्कृष्टता पुरस्कार समुदाय (BITC) बिग टिक
- ऐगिस एलैक्जैंडर ग्राहम बैल पुरस्कार 2010
- वर्ष 2010 में ई–भारत उत्तम निजी क्षेत्र प्रस्ताव पुरस्कार

मुद्दे

इससे होने वाले लाभ का आभास करने के लिए व्यवसायिक सांझीदारों को समय की जरूरत है जो बुनियादी चुनौती है। किसान पैसा देकर सेवाएं पाने के आदि नहीं हैं। इसलिए मिलने वाले इन लाभों के लिए किसानों को राजी करने की जरूरत है ताकि वे सेवाओं को लाभों के साथ जोड़ कर देख सकें। ऐसे ग्रामीण उद्यमी/उत्पादक कंपनियां बनाई जाएं जो 1000 से 5000 किसानों को सेवाएं उपलब्ध करा कर अतिरिक्त आमदनी के रूप में अच्छा खासा राजस्व पा सकें।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

रूयटर बाजार लाइट (RML) : मोबाइल फोन पर किसानों को निजी माइक्रो कृषि सूचना सेवाएं प्रदान करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री थोमसन रूयटर
अनुभव	परिचालन 2007 से
कार्य क्षेत्र	भारत भर में 17 राज्य
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	पांच लाख से अधिक सक्रिय ग्राहक
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	रूयटर मार्किट लाइट, पेनीनसुला क्लब, भूतल, पेनीनसुला कारपोरेट पार्क, गणपतराव कदम मार्ग, निचला पारेल (पश्चिम) मुम्बई – 400013 फोन न.: 02267431583 ई–मेल: amit.mehra@thomsonreuters.com

बिजनैस मॉडल

सैंकड़ों व्यवासयिक और भारत वर्ष में ग्रामीण मार्किट रिपोर्टरों की आंतरिक टीम के अतिरिक्त RML की प्रमुख कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि अनुसंधान संस्थानों, सार्वजनिक व निजी क्षेत्र भले वह मौसम का पूर्वानुमान लगाने वाली एजेंसी हो अथवा अन्य प्रासंगिक ग्रामीण/प्रासंगिक, वास्तविक व व्यवहार विषय सूची बनाने के लिए कृषि सूचना देने के स्रोत सभी से साझेदारी है।

नवाचार का विवरण

जागरूकता लाने तथा भौगोलिक तौर पर दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण उपभोगताओं तक पहुंचने के लिए RML के पास बिक्री व वितरण दल भी है जो भारत के सबसे प्रमुख कृषि क्षेत्रों में सैंकड़ों RML वितरकों व थोक–व्यपारियों के साथ व्यस्त रहता है। RML की उन प्रतिष्ठित चैनल साथियों के साथ वितरण सांझेदारी भी है जो ग्रामीण भारत में पुख्ता खबर देने के लिए मौजूद रहते है। रूयटर बाजार लाइट (RML) : थोमसन, रूयटर के प्रथम अन्वेषक तथा यू एन व्यापार पुरस्कार विजेता हैं जो किसान समुदाय को मोबाइल फोन पर निहायत व्यक्तिगत कृषि माइक्रो–सूचना प्रदान करते हैं। यह सेवा किसी ओपरेटर अथवा मोबाइल फोन पर एसएमएस के जरिए दी जाती है। RML की सूचना में रोजमर्रा के आधार पर फसलों की कीमतें, निर्धारित स्थान के मौसम संबंधी पूर्वानुमान, फसलों के बारे में परामर्श, किसान समुदाय से संबंधित समाचार एवं सूचनाएं शामिल होती हैं। सभी मुख्य इलाकों में समयोचित, सही व व्यक्तिगत सूचनाओं का प्रचार करके अच्छी पैदावार हासिल करने तथा बेहतर कीमतें पाने के लिए RML किसानों की मदद करता है। किसान फसल चक्र की अवस्था, तालुक संबंधी मौसम पूर्वानुमान, स्थानीय बाजार कीमतों संबंधी सूचनाएं, स्थानीय व अंतर्राष्ट्रीय सामग्री तथा किसान समुदाय से संबंधित अन्य किसी प्रकार की कोई भी सूचना सीधे उनके मोबाइल पर उनकी भाषा में उनकी व्यक्तिगत रूचि के अनुसार दी जाती है। सूचना के स्वरूप के अनुसार लिया गया ठोस निर्णय किसानों की जीविका पर सीधा असर डालता है। वर्ष 2007 से पूरे भारत वर्ष में RML प्रत्यक्ष मोबाइल फोन सक्रियण द्वारा अथवा दूसरे किसानों के साथ सांझेदारी करके 30,000 गांवों में लाखों किसानों तक पहुंचा है।

नवाचार/तकनीक का असर

RML सेवाएं किसानों की विपदाओं को कम करके, उनकी आमदनी बढाते हुए, देश की खाद्य सुरक्षा में वृद्धि करता हैं। ICRIER द्वारा किए गए स्वतंत्र अनुसंधान में यह बताया गया है कि RML कृषि सूचनाओं का इस्तेमाल करने से किसानों की आमदनी

में 25 प्रतिशत प्रति फसल चक्र की वृद्धि हुई है। कुछ किसानों ने ₹ 999 की सेवा का इस्तेमाल करके व्यक्तिगत रूप से 12 माह में ₹ 4,00,000 तक कमाए हैं। USAID –ACDI/VICA द्वारा किए गए अध्ययन् में RML सेवाओं का इस्तेमाल करने के बाद सूचना प्राप्त करने संबंधी किसानों के व्यवहार में हुई भारी तबदीली पर प्रकाश डाला गया है। RML सेवाओं का इस्तेमाल करने से पहले 90 प्रतिशत से अधिक किसान अपनी कृषि सूचना संबंधी जरूरतों के लिए अपने साथी किसानों पर भरोसा करते थे। इस सेवा का इस्तेमाल करके 80 प्रतिशत किसान अब मोबाइल फोन सेवा के जरिए दी गई सही व व्यवहार सूचना पर भरोसा करते हैं। उपलब्ध सूचना के कारण किसान अपने आप को समर्थ मानने लगे हैं और मंड़ी में सीधे कमीशन एजेंटों को फोन करके उन्होंने और अधिक सूचनाएं (RML सेवाओं से दी गई सूचनाओं के अलावा) एकत्रित करनी शुरू कर दी है। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान जब नए उत्पादों का प्रदर्शन किया जा रहा था तब किसानों ने थोक–व्यापारियों से भी सूचनाएं लेना आरंभ कर दिया था।

पहचान/इनाम

इनाम

- वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में विश्व व्यापार एवं विकास (WBDA) पुरस्कार
- वर्ष 2010 में फनैन्शल टाइम्स द्वारा सामाजिक नवाचार के सही मायने– पुरस्कार
- वर्ष 2010 में RMAI – ग्रामीण मार्किटिंग पुरस्कार
- वर्ष 2010 में दक्षिण एशिया का अरबवां मोबाइल पुरस्कार
- कॉफी अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 2010

पहचान

- डा॰ सी.के. प्रहलाद का 'फारचून एट द बोटम ऑफ द पिरामिड' नामक चार पृष्ठों का लेख
- नंदन नीलेकणी की 'इमैजनिंग इंडिया' में उल्लेख
- एक्सेंचुअर रिपोर्ट – ग्रामीण मार्केटिंग के मास्टर : उच्च निष्पादन के प्रमाण चिंह' में मामले के अध्ययन् के रूप में पेश किया गया।
- केप टाउन में विश्व आर्थिक मंच' पर RML का प्रदर्शन किया गया
- लंदन बिजनैस स्कूल केस स्टडी : 20 पन्नों की केस स्टडी जिसमें RML को आदर्श सामरिक व्यापार नवाचार के रूप में प्रदर्शित किया गया
- RML को कैम्बरीज विश्वविद्यालय में व्यापार एवं गरीबी संचालन के हिस्से के रूप में केस स्टडी में पढाया गया
- बीबीसी, इक्नोमिस्ट, फनैन्शल टाइम्स, इक्नोमिक टाइम्स, न्यूयोर्क टाइम्स, इंटरनेशनल हैरलड ट्रिब्यूट, फोक्स न्यूज, द डब्लयूएसजे, यूएसए टुडे, टाइम्स ऑफ इंडिया, बिजनैस स्टैंर्ड, सीएनबीसी तथा इटी नाओ सहित सभी प्रमुख संचार माध्यमों ने RML पर महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किया है।

मुद्दे

मोबाइल कृषि सूचना सेवाओं की बड़े पैमाने पर मुख्य चुनौतियां:

1. व्यक्तिगत एवं व्यवहार विषय वस्तु तैयार करना : भारत में उपलब्ध अधिकांश कृषि संबंधी विषय सूची पुरानी, गलत अथवा वह किसी अकेले किसान के लिए नहीं अपितु बड़े पैमाने पर उपयुक्त है। व्यक्तिगत, सही व व्यवहार कृषि विषय वस्तु तैयार करने के लिए अत्याधिक संसाधनों व समय के निवेश की आवश्यकता होती है। यथासमय विषय वस्तु तैयार करने के लिए सभी क्षेत्रों में आंतरिक विषय वस्तु दल की मैदान में मौजूदगी अनिवार्य है जो किसानों के लिए लाभदायक व उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। भारत वर्ष के सुदूर ग्रामीण इलाकों में बड़े पैमाने पर इस प्रकार के दल तैयार करना बहुत भारी चुनौती है।

2. ग्रामीण इलाकों में वितरण नेटवर्क स्थापित करना : चूंकि ऐसे किसान अक्सर सुदूर इलाकों में रहते हैं अतः यथोचित लागत पर उन तक पहुंचने में वितरण व तार्किक चुनौतियां हैं। इसके लिए सहारे एवं नवाचारी बिजनस मॉडल की जरूरत है जिसे विभिन्न चैनल सांझेदारों के साथ सहयोग करके प्राप्त किया जा सकता हैं।

3. जागरूकता लाना : अनुभव से पता चला है कि संपूर्ण फसल के लाभों को काम में लाने के लिए किसानों को कम से कम छः माह के निधिकरण अंशदान की जरूरत होती है। इससे वह सेवा जारी रखने संबंधी फैसले समझदारी से ले सकते हैं। सरकारी एजेंसियां, गैर–सरकारी संगठन, विकास निधिकरण एजेंसियां तथा प्राइवेट सैक्टर और निजी क्षेत्र की CSR पहल से साझेदारी मॉडल जानकारी के इस फासले को कम कर सकते है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

असरदार कृषि प्रबंधन के लिए ERP सॉफटवेयर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री शिवराय तकनीकी प्राइवेट लिमिटेड
अनुभव	9 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 2.5 करोड़ उत्पादों की बिक्री एवं सेवाएं का राजस्व
विस्तार	100 + पिछले वर्ष सॉफटवेयर लाइसैंस
कर्मचारियों की संख्या	25–30
संपर्क विवरण	ओमकार, प्लॉट न.:. 14, सेवानंद सोसाइटी, वालवेकरनगर सतारा रोड, स्वरगते, पुणे फोन न.: 02024216370

बिजनैस मॉडल

वर्तमान में वे माइक्रोसॉफट तथा इनटैल के साथ तकनीकी साझेदारी कर रहे हैं। तकनीकी सहायता तथा सॉफटवेयर में सुधार सहित उत्पादों की बिक्री तथा AMC से राजस्व प्राप्त करते हैं। वे कृषि संस्थानों तथा गैर–सरकारी संस्थाओं के साथ साझेदारी करने पर विचार कर रहे हैं ताकि इस उत्पाद को अगले स्तर पर ले जाया जा सके।

नवाचार का विवरण

फार्म ERP से खेती संबंधी आंकड़ों के प्रबंधन की चिंता कम, पैसे की बचत, समय की बचत, संसाधनों का अधिकतम उपयोग, प्रबंधन कुशलता में वृद्धि तथा और तत्काल निर्णय लेने में आसानी हो जाती है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इसे स्थानीय भाषा में पेश किया गया है। फार्म ERP V2.1 फार्म ERP सॉफटवेयर का सबसे अधिक विकसित प्रारूप है जो कि कृषि, खाद्य आपूर्ति क्रम तथा आइटी उद्योग के विशेषज्ञों के सामूहिक प्रयासों का फल है। निकट भविष्य में यह मोबाइल यंत्रों पर उपलब्ध हो जाएगा जो भारतीय किसानों को कृषि संबंधी निर्णय लेने में मदद करेगा।

फार्म ERP कृषि व आइटी उद्योग के विशेषज्ञों द्वारा की गई कड़ी मेहनत का फल है। ERP सॉफटवेयर समूहों का इस्तेमाल करके लागत व समय की बचत जैसे अतिरिक्त लाभों सहित सफल खेती और कृषि संबंधी आंकड़ों का प्रबंधन किया जा सकता है। इससे प्रयोक्ता पूरे विश्व में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार हो जाता है। डाटा का रिकार्ड रखना तथा निर्णय लेना यह दो महत्वपूर्ण कार्य हैं जिनका ध्यान फार्म ERP में रखा गया है। विश्लेषण तथा बेहतर लाभ कमाने के लिए किसान प्रति क्षण के विवरण सहित कृषि संबंधी विभिन्न गतिविधियों का रिकार्ड रख सकता है। फार्म ERP सॉफटवेयर समूह में प्रत्येक रिकार्ड एवं मिन्ट विवरण सहित ऐसी प्रत्येक गतिविधि तथा अंकेक्षण व प्रयोक्ता अनुकूलन रिपोर्ट की सुविधा होती है। फार्म ERP के इस्तेमाल से कृषि प्रबंधन कौशल और निर्णय लेने की सक्षमता में वृद्धि होती है। फार्म ERP मोबाइल किसानों को कृषि कैलकुलेटर, अनुसूचक तथा विषय वस्तु संबंधी निर्णय लेने में मदद करता है और मोबाइल फोन पर जनोपयोगी सेवाएं प्रदान करता है।

नवाचार/तकनीक का असर

फार्म ERP फसल अनुसूचक के रूप में विभिन्न फसलों के लिए बेहतर कृषि कार्यप्रणाली (GAP) प्रदान करता है जिसे किसान अपने इलाके की परिस्थितियों के अनुकूल बना सकते हैं। GAP संबंधी ज्ञान को अपनाने से पैदावार में वृद्धि होती है। यह विज्ञान पर आधारित कृषि को प्रोत्साहित करता है और इससे सभी फसलों के पोषक तत्वों के लिए MIS रिपोर्ट के जरिए विशलेषण करके जमीन की उर्वरकता बढाने के बारे में निश्चित निर्णय लिए जा सकते हैं।

किसान स्टॉक सूचना पर भी पूरा नियंत्रण रख सकता है। यह सूचनाएं कृषि संसाधनों को अनुकूलतम बना परिचालन लागत को असरदार तरीके से कम करके, पैदावार के साथ–साथ लाभ में वृद्धि करती हैं। निर्यात करते समय किसान मोल–भाव करने के लायक हो जाता है तथा वित्तीय संस्थानों के समक्ष उसकी ऋण पात्रता में भी वृद्धि हो जाती है।

पहचान/इनाम

- सामुदायिक विकास के लिए ICT के प्रयोग में दिए गए योगदान के लिए डा॰ बालासाहेब सावंत कोणकण कृषि विद्यापीठ , दापोली द्वारा सम्मानित किया गया
- सामुदायिक विकास के लिए ICT के प्रयोग में दिए गए योगदान के लिए महात्मा फूले कृषि विद्यापीठ, राहुरी द्वारा सम्मानित किया गया
- विजेता मंथन पुरस्कार 2005 – 'इ विद्या' की स्वर्ण श्रेणी मंथन पुरस्कार
- विजेता दक्षिण एशिया प्रशांत महासागरीय 2009 –''फार्म ERP मोबाइल'' के लिए 'मोबाइल विषय वस्तु' श्रेणी मंथन पुरस्कार अंगूर कीटनाशक चयनकर्त्ता

मुद्दे

प्रगतिशील किसानों तक पहुंचना बड़ी चुनौती है क्योंकि इसके लिए विज्ञापन अभियान तथा प्रचार पर भारी खर्च करने की जरूरत होती है।

इस बारे में सार्वजनिक जागरूकता बहुत ही कम है। हाथ से अथवा सिस्टम का प्रयोग करके कृषि संबंधी रिकार्ड रखने की संस्कृति भारत में व्यापक रूप से दिखाई नहीं देती।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि उत्पादों का पता लगाना एवं प्रबंधन करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	करोपएक्स टेकनोलोजी सोलूयशनस प्राइवेट लिमिटेड
अनुभव	1 साल
कार्य क्षेत्र	हरियाणा, कर्नाटक
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	साल के अंत तक 5000 खेत
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	न.: 83, तालाकवेरी लेआउट, बासवानगर, कार्यालय पुराना बंद हवाई अड्डा मार्ग, मर्थाहाल्ली, बंगलुरू – 560037 फोन न.: 080 22715409, 25227581 कृष्ण कुमार मोबाइल न.: 09986079552, कुणाल प्रसाद, मोबाइल न.: 07829149000

बिजनैस मॉडल

प्रत्येक किसान को अपनी पैदावार का प्रदर्शन करने के लिए एक विंडो दी जाती है जिसमें ऑन लाइन प्रारूप सहित बिक्री के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्म उपलब्ध कराया जाता है। किसानों का विवरण बैब प्लेटफार्म पर दिया जाता है इस प्रकार वे सभी साझेदारों (थोक व्यापारी, वित्तीय संस्थान आदि) के संपर्क में आ जाते हैं और अपनी फसल के आधार पर दाम बताते हैं ताकि इन पर विचार किया जा सके। थोक व्यापारी, कारपोरेट तथा स्रोत एजेंसियां भी प्रदर्शित पैदावार को खेतों से सीधे खरीदने के लिए हमारे प्लेटफार्म का प्रयोग करते हैं।

राजस्व नमूना :

1. संविदा फार्मों का पता लगाने व उनकी निगरानी करने के लिए प्लेटफार्म का इस्तेमाल करने के हिसाब से कारपोरेट से दाम वसूले जाते हैं।
2. स्वतंत्र किसानों से नाम मात्र पंजीयन शुल्क लिया जाता है
3. खरीददारों (कारपोरेट, निर्यातक, थोक व्यापारी) से सेवा शुल्क के रूप में दाम वसूले जाते हैं।

नवाचार का विवरण

करोपएक्स तकनीक पर आधारित कंपनी सही समय पर कृषि प्रबंधन तथा फसल का पता लगाने के लिए ऑन लाइन प्लेटफार्म उपलब्ध कराती है। प्लेटफार्म में फसल का संपूर्ण जीवन चक्र दिखाया जाता है और फसल की सेहत, कीड़ों, कटाई का विवरण और वास्तविक समय के आधार पर बहुत सी सही सूचनाएं दी जाती हैं। फसल का आयोजन करके मांग के अनुसार उपलब्धता, सही गुणवत्ता और को विशेष रूप से मात्रा दर्शाते हुए आपूर्ति क्रम की असरदार ढंग से योजना बनाने व प्रबंधन में मदद की जाती है। सही समय पर सही सूचना मिलने से व्यर्थ बर्बादी से बचा सकता है, किसानों को अच्छा मुनाफा होता है और फसल में ताजगी बनी रहती है जिससे अच्छी कीमत मांगी जा सकती है।

इस नवाचार से कई प्रयोजन सिद्ध होंगे, यह सभी साझेदारों की कृषि मूल्य श्रृंखला में मदद करेगा। किसान बेहतर मुनाफा कमा सकेंगे और सुनिश्चित मुनाफे सहित बेहतर मार्किट संपर्क स्थापित हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त किसान समुदाय को बेहतर कृषि व्यवसाय व हाल ही में किए गए विकास, प्रभावशाली संसाधन प्रबंधन, स्थानीय रोजगार मुहैया कराना, कीट प्रबंधन, प्रमाणीकरण आदि के प्रति जागरूक बनाया जाता है। कारपोरेट साझेदार अपनी संविदा कृषि का बेहतर प्रबंधन करने और अपने उत्पाद का प्रदर्शन करने में सक्षम होंगे – इस प्रकार नई भूगौलिक विद्यायों का पता लगाने में मदद मिलेगी। थोक व्यापारी अपने उत्पाद के ब्रांड को सुरक्षित व पता लगने योग्य बना सकते हैं तथा नए बाजार के अवसर तालाश सकते हैं। मानवरूपी रोबोट प्लेटफार्म मोबाइल अनुप्रयोग के साथ ऑन लाइन प्रयोग को जोड़ा जाता है जो फसल की प्रभावशाली डाटा एंट्री सुनिश्चित करता है और वास्तविक समय पर आधारित कृषि संसाधनों की बेहतर ढंग से खोज व प्रबंधन कर करता है।

नवाचार/तकनीक का असर

किसानों के लिए: व्यापार बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है और पता लगने योग्य पैदावार के मूल्यवर्धन के कारण अपनी फसल की बिक्री सीधे बाजार में करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। उनकी पता लगने योग्य पैदावार से उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में और अधिक स्पष्टता मिल सकती है। ऑन लाइन प्लेटफार्म उन्हें प्लेटफार्म की दर्जा प्रणाली के आधार पर वित्तीय ऋण पाने के लिए संस्थानों के साथ जोड़ सकता है।

कारपोरेट साझेदारों के लिए: यह प्लेटफार्म कारपोरेट साझेदारों की अधिक उपयोगिता सुनिश्चित करके उन्हें विश्वीय नक्शे पर पता लगाने योग्य हल के साथ गौरवपूर्ण ढंग से प्रतिष्ठित करता है। प्रभावशाली निर्णय लेने के साथ–साथ वास्तविक समय पर आधारित दूरस्थ व यथासमय कृषि क्रियाकलापों को इकठ्ठा करने के लिए मोबाइल तथा GPS तकनीक के साथ जोड़ता है। इससे पैदावार में वृद्धि, बढे हुए संसाधनों का प्रबंधन, आपूर्ति क्रम, नुकसान कम, और नई निर्यात मार्किट तय होती है जो अनुमार्गणीयता की मांग करता है।

पहचान/इनाम/ग्राहक

पहचान

- सीएनबीसी टीवी 18 – युवा तुर्क कार्यक्रम, युवा उद्यमियों के लिए एक प्लेटफार्म
- माइक्रोसॉफट बिजस्पार्क स्टार्टअप
- टेक स्पार्क – उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार – पूरे भारत वर्ष में 400 प्रविष्टियों के बीच 20 चोटी के स्र्ाटअप

ग्राहकों द्वारा उपार्जित :

- भारी – डेलमोट (फील्ड फ्रैश)
- भारती – वालमार्ट
- ओमनीएक्टिव

कर्नाटक (चिकवल्लापुर, हसन) तथा पंजाब, हिमांचल प्रदेश व हरियाणा में प्रोजैक्ट चलाए जा रहे हैं

- भारती – वालमार्ट के साथ काम कर रहे हैं ताकि उनके किसानों को ऑनलाइन अनुमार्गणीयता तथा ऑन लाइन कृषि निगरानी की सुविधा प्रदान की जा सके। (अनुबंध कृषि)
- भारती – डेलमोन्ट (फील्डफ्रेश) के साथ काम कर रहे हैं ताकि उनके किसानों को ऑनलाइन अनुमार्गणीयता तथा ऑन लाइन कृषि निगरानी की सुविधा प्रदान की जा सके। (अनुबंध कृषि)
- ओमनीएक्टिव के साथ काम कर रहे हैं ताकि उनके किसानों को ऑनलाइन अनुमार्गणीयता तथा ऑन लाइन कृषि निगरानी की सुविधा प्रदान की जा सके। (अनुबंध कृषि)

मुद्दे

सामने आने वाले मुख्य मुद्दे हैं बुनियादी सुविधाएं (इंटरनेट व बिजली), नई तकनीक को अपनाने में साझेदारों की आनाकानी और कुशल संसाधनो की उपलब्धता। वर्तमान में वे ऐसी तकनीक में निवेश कर रहे हैं जो बुनियादी सुविधाओं की अड़चन को दूर कर सकती है। इस तकनीक का इस्तेमाल करने के लिए वह स्थानीय लोगों को भी प्रशिक्षित कर रहे हैं और ग्रामीण इलाकों में रोजगार मुहैया कराने में मदद कर रहे हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

जल विभाजन प्रबंधन कार्यक्रम – जल विभाजन ए से जैड तक के लिए आइटी समाधान

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री भूषण अम्बेडकर
अनुभव	7 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 3 लाख
विस्तार	अब तक 25 यूनिटों की बिक्री की जा चुकी है
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	ग्रामीण विकास के लिए साफटवेयर संस्थान वंदन, 30, शिवाजी हाउसिंग सोसाइटी, कन्वेंशन केंद्र के पास, सेनापति बापत मार्ग, पुणे – 411016 फोन नः 020 65240715, 09850037817 (मोबाइल) ई–मेलः bhushan.ambadkar@sirdpune.com, वेबसाइटः www.sirdpune.com

बिजनैस मॉडल

श्री भूषण की अधिकांश बिक्री जल विभाजक प्रबंधन करने वाली गैर–सरकारी संस्थाओं के बीच नेटवर्किंग के माध्यम से होती है। वेबसाइट के जरिए से भी उसे कुछ मार्गदर्शन मिल जाता हैं।

नवाचार का विवरण

जलविभाजक प्रबंधन से स्थानीय कृषक आबादी को बड़े पैमाने पर लाभ मिल सकता है क्योंकि इससे सिंचाई पर निर्भरता कम हो जाती है और फसल को हद से ज्यादा होने वाली अनियमित बारिश से बचाया जा सकता है। इससे लम्बे समय तक जमीन की उर्वरकता मे वृद्धि होगी क्योंकि इससे भूमि के कटाव की व्यवस्था सही ढंग से की जा सकेगी। प्रत्येक जल विभाजक परियोजना के लिए परिकल्पना और बजट का होना जरूरी है। इसके साथ ही कार्रवाई योजना की तैयारी भी की जानी चाहिए। एक बार उपचार का ढंग व संख्या निश्चित होने पर परियोजना की जटिलताओं को समझने के लिए प्रत्येक ढांचे का विस्तारपूवर्क अनुमान लगाना आवश्यक हो जाता है।

जल विभाजक ए से जैड सॉफटवेयर का इस्तेमाल परिकल्पना, बजट अनुमान एवं जलविभाजक के लागत अनुमान के साथ–साथ सम्मोच नक्शा, एल–भाग व अनुप्रस्थ काट के लिए किया जाता है। इस सॉफटवेयर का सबसे अच्छा पहलु यह है कि मंहगे ऑटोकैड सॉफटवेयर का प्रयोग किए बिना यह सब काम करता है। हर एक जमीन और जल–निकासी लाइनों के ढांचे कुछ ही दिनों में पूरे किए जा सकते हैं जबकि यदि इसी काम को हाथ से किया जाए तो 4 से 5 महीने लग सकते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

स्वचालित डिजाइन व अनुमान द्वारा इस सॉफटवेयर से काम करना आसान हो जाता है। इससे विवरणात्मक योजना रिपोर्ट की जांच करने में होने वाली अनावश्यक देरी से बचा जा सकता और इस प्रकार मानव शक्ति और समय दोनों की बचत की जा सकती है। तैयार की गईं रिपोर्ट में एकरूपता व सटीकता के साथ–साथ लागत और समय की बहुत अधिक बचत इस सॉफटवेयर का सबसे बड़ा फायदा है। इस अंतरापृष्ठ के अतिरिक्त इन्होंने इसे प्रयोक्ता के अनुकूल भी बनाया है। इससे अनुमान तैयार करने की लागत में (₹ 60,000 से ₹ 70,000 प्रति परियोजना) काफी बचत होती है और यह अधिक सटीक रिपोर्ट पेश करता है। इस नाजुक काम को करने के लिए तकनीकी मानवशक्ति की अत्याधिक कमी के कारण बहुत से कार्यालयों में आने वाली तकलीफों को जल्दी दूर कर दिया जाएगा।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस साहसिक कार्य को पूरा करने की मुख्य चुनौतियां और मूलभूत रूप से सबसे बड़ी सीमा यह है कि इस सॉफटवेयर के मुख्य लक्ष्य ग्राहक अर्थात ऐसे गैर–सरकारी संगठन जो ग्रामीण इलाकों में जलविभाजक प्रबंधन कार्य करते हैं वे इस तकनीक में रूचि नहीं रखते। सरकार की ओर से अधिक प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

उत्पाद चित्र

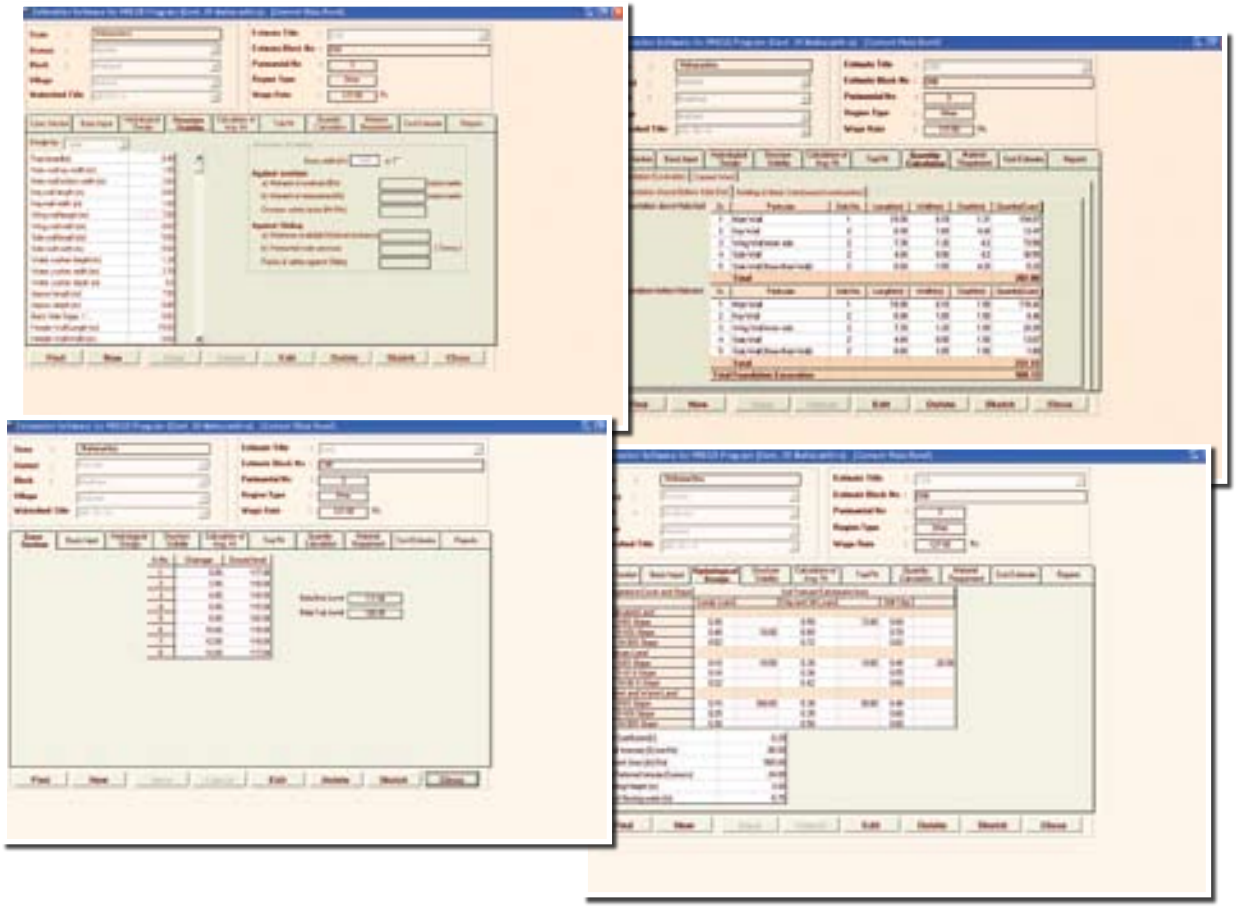

नवाचार का सारांश

नैनो गणेश

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	ओशियन एग्रो ऑटोमेषन
अनुभव	14 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 6,90,00,000 प्रति वर्ष
विस्तार	अब तक 10,000 यूनिटों की बिक्री की जा चुकी है
कर्मचारियों की संख्या	16
संपर्क विवरण	305, मूनीसुवरात एवेन्यू, तीसरी मंजिल, 1089 शुक्रवार पेथ, शिवाजी रोड स्वरगते कोरनर, पुणे – 411002 फोन नः 02024472277

बिजनैस मॉडल

नवाचारक किसानों को मुफ्त सलाह देता है। बाजार में बिक्री के प्रयोजन से वह अपने उत्पाद का प्रदर्शन करने के लिए प्रदर्शनियां लगाता है। किसानों के बीच जागरूकता लाने के लिए गांवों में बहुत से अभियान चलाए जा रहे हैं।

नवाचार का विवरण

नैनो गणेश GSM मोबाइल आधारित रिमोट कंट्रोल प्रणाली जिसका प्रयोग विशेषकर कृषि क्षेत्रों में पानी के पंप सैट के साथ किया जाता है। किसानों द्वारा पंप चलाने में आने वाली दैनिक समस्याओं के कारण नैनो गणेश की जरूरत पड़ने लगी थी। पंप चलाने में बिजली आपूर्ति में उतार–चढाव, दुर्गम इलाके, रास्ते में जानवरों का डर, नदी अथवा पानी से भरे नदी तल के पास खतरनाक स्थान पर स्थित पंप, दहशत, वारिश आदि रूकावटें आती थीं।

नैनो गणेश यंत्र को मौजूदा आरंभक के साथ जोड़ा जाता है। किसान को नैनो गणेश सैट के लिए मात्र दिए गए नः पर डायल करके पंप सैट के नियंत्रण के लिए ऑन या ऑफ कोड डालना होता है। इसे किसी भी मौजूदा बिजली के स्टार्टर और मोटर पंप के साथ जोड़ा जा सकता है। इसलिए पंप सैट को बदलने की आवश्यकता नहीं होती। उंचे एचपी पंप सैटों के लिए इन्हें सुरक्षा प्रणाली के साथ जोड़ा जा सकता है। नैनो गणेश मोबाइल मोडम की मदद से किसान पानी के पंप पर कितनी भी दूरी से नियंत्रण एवं निगरानी रख सकता है। वह पंप के सिरे पर बिजली आपूर्ति की जांच कर सकता है। वह पंप के ऑफ–ऑन स्थिति के बारे में भी पता लगा सकता है। यदि पंप अथवा केबल की चोरी करने का कोई प्रयास करे तो नैनो गणेश मोबाइल मोडम की मदद से कुछ मॉडलों में किसान को संकट सूचना भी मिल जाती है। ऑन/ऑफ कमान के संचयन की स्मरण शक्ति के प्रावधानों सहित इसके परिचालन का क्षेत्र असीमित होता है।

नवाचार/तकनीक का असर

चूंकि इस कृषि उपकरण को दूर से नियंत्रित किया जा सकता है अतः इससे अत्याधिक लाभ मिलता है जो अगामी तकनीक का उद्देश्य है। यह प्रयास इसी दिशा की ओर बढाया हुआ कदम है।

पहचान/इनाम

- फोरम नोकिया द्वारा विश्व में उभर कर आने वाले बाजार में उत्तम मोबाइल अनुप्रयोग
- मेबाइल विश्व कांग्रेस में ग्लोबल मोबाइल पुरस्कार 2010 के लिए नामांकित
- इंजिनियर संस्थान, पुणे से मिस्टर इंजिनियर पुरस्कार
- MCCIA पुणे से पारखे पुरस्कार
- विलग्रो से वंटराप्रीनुयर पुरस्कार

मुद्दे

कम कीमत पर किसानों को यह तकनीक उपलब्ध कराना एक चुनौती है। इस उत्पाद पर विश्वास करने में किसानों को 2 से 3 साल तक लग जाते हैं जिससे मार्केटिंग व बिक्री लागत में अत्याधिक वृद्धि हो जाती है। बिक्री के बाद स्थानीय स्तर पर इसकी मरम्मत कराना भी मौजूदा समस्या है जिसका समाधान खोजने का नवाचारक प्रयास कर रहा है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

ताजा व रोजाना – ऑन लाइन सब्जी स्टोर

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री विकास चौहान
अनुभव	10 माह
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताई
विस्तार	40 से 50 आर्डर प्रति दिन
कर्मचारियों की संख्या	10
संपर्क विवरण	ए–337, एनटॉप हिल वेयर हाउसिंग कॉम्पलैक्स, वीआईटी कालेज रोड, वाडला (पूर्व) मुम्बई – 400037 मोबाइल न.: 09833932608

बिजनैस मॉडल

श्री विकास चौहान ने दिसम्बर 2010 में ऑन लाइन सब्जी स्टोर खोला था। वर्तमान में वे 40 से 50 आर्डर प्रति दिन पूरे करते हैं। वाडला, सेवरी, प्रभा देवी और पवाई में सब्जी वितरित की जाती है।

नवाचार का विवरण

ऑन लाइन पोर्टल पर सभी प्रकार की सब्जियां, फल, विदेशी फलों के साथ–साथ वह किराने का सामान उपलब्ध कराते हैं। ग्राहक वेबसाइट अथवा फोन पर अपनी जरूरत का आर्डर देते हैं। दिन का आखिरी आर्डर रात के 10 बजे तक लिया जाता है। प्राप्त सभी आर्डरों पर काम करके अगले दिन सुबह सामान भेजा जाता है। सामान की पैकिंग उनके गोदाम में की जाती है। दिन में दो बार ग्राहकों को सामान भेजा जाता है। वे सुपर्दगी पर नकद अदायगी प्रणाली का पालन करते हैं।

शहरी लोगों को इस प्रकार के प्लेटफार्म उपलब्ध कराने से उनका समय बच जाता है। ऑन लाइन स्टोर होने के कारण उनकी लागत की तुलना में थोक श्रृंखला काफी कम होती है। उपरी खर्चे कम होने के साथ इसका ढांचा कमजोर है। इनकी कीमते बहुत ही तुलनात्मक हैं। आस–पास के इलाकों से उन्हें अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

नवाचार/तकनीक का असर

जिन शहरों में लोग अत्याधिक व्यस्त होते हैं वहां ऐसी ऑन लाइन पहल लोगों के लिए इनायत बन कर आती है। इसके अतिरिक्त चूंकि यह किफायती है अतः इसका तेजी विकास होना निश्चित है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

भारत में लोग ठेले वाले से फल व सब्जियां खरीदने के आदी हैं जहां वे खरीदते समय इन्हें देख एवं महसूस कर सकते हैं। चूंकि शिफ्ट उपभोक्ताओं का एक खरीद पैटर्न है अतः अपने आप में यह एक चुनौती है। ग्राहकों के बीच गुणवत्ता की धारणा भिन्न होती है। सभी ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करना और उन्हें संतुष्ट करना मुश्किल है विशेषकर आर्डर करते समय जब सामान ग्राहक के सामने उपलब्ध नहीं होता।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

सब्जी की दुकान – ऑन लाइन सब्जी और किराने की दुकान

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

आई.टी. और मोबाइल अनुप्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री कौशिक मंडल
अनुभव	5 माह
कार्य क्षेत्र	मुम्बई
कुल बिक्री	नहीं बताई
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	मोबाइल न॰. 09022144531

बिजनैस मॉडल

श्री कौशिक ने तीन अन्य साझेदारों के साथ मिल कर 15 अगस्त 2011 को ऑन लाइन स्टोर की शुरूआत की। इस प्रोजैक्ट का अभी परीक्षण चल रहा है इसलिए सामान वितरण के लिए केवल मुम्बई को ही चुना गया है और दिसम्बर तक इसे बड़े पैमाने पर बढाने की वे योजना बना रहे हैं।

नवाचार का विवरण

इस नवाचार के पीछे बेहतर किस्म का आहार उचित कीमत पर मुहैया कराना है। उन्होंने विशेषरूप से आहार की डलिया तैयार करने की भी कल्पना की है जिसमें ग्राहक सप्ताहिक आधार पर अपनी जरूरत के अनुसार सप्ताहिक डलिया का चयन कर सकते हैं। ग्राहक अपनी सप्ताहिक एवं मासिक खर्चों का पता लगा सकते हैं। सब्जी की दुकान का उद्देश्य वैब/मोबाइल व्यवसाय में नई तकनीक को पूरा करना है ताकि उपभोगताओं को फुटकर उद्योग का एकमात्र अनुभव प्रदान किया जा सके। वे APMC बाजार से दैनिक आधार पर सब्जियां खरीदते हैं और अन्य वस्तुओं के लिए विभिन्न विक्रेताओं के साथ जुड़े हुए हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

इस प्रकार की ऑन लाइन पहल को लोगों ने पसंद किया है क्योंकि वे बहुत बढिया किस्म की चीजें उपलब्ध कराते हैं। इससे दलालों के धंधे पर भी लगाम कसी जा सकती जिससे कि सब्जियों की सही कीमत लग सकेगी।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नवाचारक के विचार में सब्जी बाजार सही ढंग से व्यवस्थित नहीं है और सब्जियों की खरीदारी बड़ी समस्या है।

उत्पाद चित्र

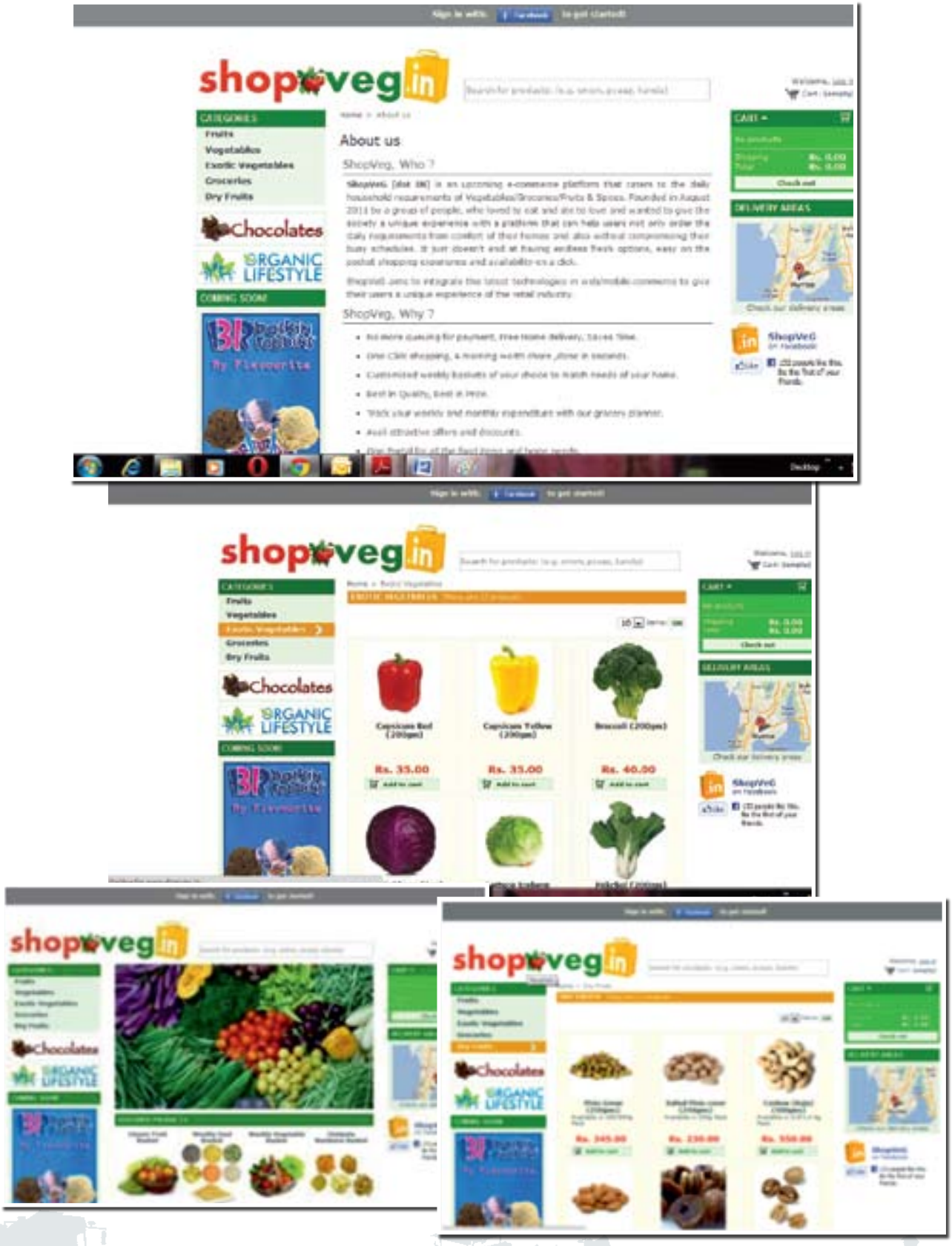

About us
ShopVeg, Who ?
ShopVeg, Why ?
Chocolates
ORGANIC LIFESTYLE

फल और सब्जियां

नवाचार का सारांश

अनोना 2, NMK 1 – शरीफों की अच्छी पैदावार का संकलन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नवनाथ मलहारी कासपते
अनुभव	32 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 3 लाख प्रति बीघा (₹ 12 लाख प्रति हैक्टेयर)
विस्तार	25 टन
कर्मचारियों की संख्या	25 आदमी
संपर्क विवरण	डाकखाना जरमने, तालुक बारशी, जिला सोलपुर, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09822669727, ई–मेलः nmkaspate@yahoo.com

बिजनैस मॉडल

श्री नवनाथ मलहारी कासपते एक नर्सरी चलाते हैं जिसमें वह इन सभी किस्मों के बीज उगाते हैं। वह खुले बाजार में बहुत ही उचित दाम पर इन बीजों की बिक्री करते हैं। पूरे तालुक में उनके पास 3 फार्म हैं। निर्यातकों के साथ भी उनके संबंध हैं और हाल ही में उसने मिडिल ईस्ट में निर्यात किया है। वह किसाानों को मुफ्त सलाह भी देते हैं।

नवाचार का विवरण

नवाचारक शरीफे की खेती पिछले 18 साल से कर रहे हैं। उसने अपने संग्रहालय में अनोना 2, NMK 1 नामक शरीफे की दो किस्मों का चयन किया है। इन चुनी हुई किस्मों के अच्छे गूदे वाले पके हुए फलों में अत्याधिक भण्डारण क्षमता होती है। इनमें स्थानीय किस्म के मुकाबले 3 से 4 गुणा अधिक बीज होते हैं। उसने इनके फूलों का परागण बढाने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालय द्वारा पौधों के बीच 16 x 16 की दूरी रखने की दी गई सलाह के बदले बगीचे में माइक्रो जलवायु का विकास करके मध्यम जमीन पर 10 x 15 फुट की दूरी पर पौधे लगाए हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

इन चुनी हुई किस्मों के पौधों को 10 x 15 की दूरी पर सभी प्रकार की भूमि पर लगाया जा सकता है। इन फलों का रंग एवं आकार बहुत ही आकर्षित होता है और हर फल में बीज बहुत कम होते हैं। इन बढिया किस्म के फलों की कीमत (बाजार की कीमत से 120 से 150 प्रतिशत अधिक) भी ज्यादा मिलती है। यह फल प्लांट पर ही 20 से 25 दिन तक ताजा रहते हैं। इससे किसान बाजार की मांग व माल भेजने की सुविधा के अनुसार अपनी फसल का समय तय कर सकता है।

इस किस्म का सबसे अच्छा पहलु यह है कि मौसम के बाद ही इसका फल पकता है। इसके फलस्वरूप किसान को पारंपरिक मौसम में मिलने वाली कीमत से (₹ 2 से 3) अधिक कीमत मिल जाती है। इसके अतिरिक्त यह किस्में देर तक ताजा रहती हैं अतः निर्यात के लिए एकदम उपयुक्त होती हैं। पुरानी किस्मों का निर्यात हवाई जहाज से किया जाता है क्योंकि वह देर तक ताजा नहीं रहतीं। NMK 1 लगभग 1 माह तक ताजा बनी रहती है इसलिए उनका समुद्री रास्ते से निर्यात किया जाता है और दूसरी किस्मों के मुकाबले इनकी अच्छी कीमत मिलती है। 80 प्रतिशत फल आकार में एकसमान होते हैं अतः निर्यात बाजार में अच्छी कीमत मिल जाती है।

पारंपरिक खेती वाली मौजूदा किस्मों की पैदावार 10 टन प्रति हैक्टेयर होती है जबकि इन चुनी हुई किस्मों की पैदावार 70–80 प्रतिशत ग्रेड–1 के फलों सहित 15–19 टन प्रति हैक्टेयर होती है। मुनाफे में 4:6 का अनुपात रहता है।

महाराष्ट्र के 9–10 जिलों के लगभग 800 किसानों को इन किस्मों से मुनाफा हुआ है जिससे पिछले 8–10 सालों में सोलापुर जिले में 800 हैक्टेयर से अधिक और आस–पास के जिलों में लगभग 450 हैक्टेयर शरीफे की खेती में बढोतरी हुई है। इस किस्म से लागत में ₹ 2,50,000 प्रति एकड़ की कमी और प्रतिदिन दो घंटे समय की भी बचत होती है।

पहचान/इनाम

- महाराष्ट्र राज्य शरीफा पैदावार, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान बोर्ड, पुणे का अध्यक्ष
- सोलापुर अंगूर उत्पादक संघ, सोलापुर के निदेशक
- वसंतराव नायक कृषि सम्मान

मुद्दे

इन चुनी हुई किस्मों को फलों को मक्खियां छिटपुट रूप से नष्ट कर देती हैं। नवाचारक आजकल बहुत से सुरक्षा उपायों की खोज कर रहा है परंतु अभी तक सफल नहीं हुआ है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

भारत में आकर्षक एवं विदेशी फल व सब्जियों की खेती

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मुरलीधर गुंजाल एवं श्रीमती वनीता गुंजाल
अनुभव	25 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	कुल मुनाफा ₹ 3.6 लाख प्रतिवर्ष
विस्तार	54 टन प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	13
संपर्क विवरण	डाकखाना – काण्डली, तालुक – जून्नेर, जिला– पुणे, महाराष्ट्र, मोबाइल नः 09860226085

बिजनैस मॉडल

इस विधि के बारे में वो किसानों को मुफ्त सलाह देते हैं। परिचालन क्षेत्र में बंगलौर, लखनउ और बनारस को भी शामिल किया गया है। कुल मिला कर वो ₹ 30 से 120 किलोग्राम प्रतिवर्ष की बिक्री सहित लगभग 25 विभिन्न प्रकार की सब्जियों व किस्मों की खेती करते हैं। होटल श्रृंखलाओं के साथ उनके संबंध हैं जिन्हें वे ठेके के आधार पर सब्जियों की आपूर्ति करते हैं।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक सब्जियों के बाजार की खोज करते समय उन्हें चीन में मिलने वाली सब्जियों की खेती करने का विचार आया। उन्होंने इन चीनी सब्जियों से संबंधित साहित्य की तालाश की और मुम्बई के पांच सितारा होटलों में इन सब्जियों की मांग के बारे में पता लगाया। मांग के आधार पर उन्होंने विभिन्न प्रकार की विदेशी सब्जियों जैसे पारसले, लाल पत्ता गोभी, बरोकली, लीक, चैरी टमाटर आदि की खेती करना आरंभ कर दिया और खेती से उन्हें स्थायी आमदनी प्राप्त हुई। उन्होंने इन सब्जियों के लिए बाजार विकसित किया और अपनी उपज की बहुत ही असरदार तरीके से बिक्री की। विदेशी सब्जियों का बाजार 15 से 20 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ रहा है और यह दिनोंदिन बढ रहा है चूंकि भारत 85 प्रतिशत से अधिक विदेशी सब्जियों का आयात करता है। इस नवाचारी किसान जोड़ने से ₹ 6,250 प्रतिदिन प्रति हैक्टेयर का खर्च करके 2.2 हैक्टेयर भूमि पर सब्जियों की 25 विभिन्न किस्मों की खेती की है और उन्हें ₹ 8,750 प्रतिदिन प्रति हैक्टेयर की आमदनी हुई है। इन सब्जियों को लगाने के लिए कुशल कृषि मजदूर की आवश्यकता है।

नवाचार/तकनीक का असर

मांग से प्रेरित विदेशी सब्जियों की पैदावार किसानों के लिए उपयुक्त है क्योंकि उन्होंने ग्राहकों के साथ समझौता करके बाजार सुनिश्चित किया है। स्थायी तौर पर आपूर्ति करने के लिए उन्होंने होटलों के साथ संबंध बनाते समय किसानों द्वारा स्वयं संपर्क स्थापित करने तथा आपूर्ति श्रृंखला के लिए बहुत से मध्यस्थों की जरूरत को दूर करते हुए बहुत ही अच्छा उदाहरण पेश किया है। आज कल वो आस–पड़ोस के विभिन्न गांवों में 100 किसानों का समुह इन विदेशी सब्जियों की खेती कर रहे हैं।

पहचान/इनाम

- विविधतापूर्ण कृषि के लिए ICAR से डा॰ एन.जी.रंगा पुरस्कार प्राप्त किया

मुद्दे

विदेशी सब्जियों की खेती करने के लिए कुशल कारीगरों की जरूरत होती है जिन्हें ढूंढ पाना मुश्किल है।

चूंकि वे ऋण पाने में असमर्थ हैं इसलिए आर्थिक कठिनाईयों का सामना कर रहे हैं। कभी–कभी बीज बाजार में उपलब्ध न होने के कारण समस्या हो जाती है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गन्ने की रोग प्रतिरोधी बढिया उपज – CON 05071 किस्म

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान स्टेशन, (RSRS) नवसरी कृषि विश्वविद्यालय
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान स्टेशन, (RSRS) नवसरी कृषि विश्वविद्यालय, नवसरी, गुजरात फोन न.: 02637 282136, ई–मेल: sugarnau@gmail.com डा॰ डी.यू. पटेल (09725055214), ई–मेल: drdhansukhpatel@yahoo.in डा॰ एस.सी.माली (09725018791), ई–मेल: drshaileshmali@yahoo.in

बिजनैस मॉडल

वह प्रजनक बीजों की उपज सहकारी समितियों को बेचते हैं। इस उत्पाद को नवसरी कृषि विश्वद्यिालय (NAU) तथा क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान स्टेशन, (RSRS) द्वारा बाजार में उतारा जाता है।

नवाचार का विवरण

गुजरात में गन्ने की औसत उपज के साथ रोग प्रवृत्त पैदावार होती है। वैज्ञानिक डा॰ डी.यू. पटेल एवं डा॰ एस. सी. माली ने इसे महसूस किया और उत्तम किस्म की गन्ने की रोगमुक्त पैदावार विकसित करने का काम किया जिसका नाम CON-05071 रखा। इस किस्म में फूल नहीं आते परंतु खूब मिठास (लगभग 11.5 प्रतिशत) सहित पूरी तरह रोग मुक्त होती है। यह किस्म भी अत्याधिक कीट रोधी है अतः किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इससे पूर्व औसत पैदावार 80 टन प्रति हैक्टेयर होती थी जबकि इस किस्म से न्यूनतम 150 टन (कुछ किसानों ने 250 टन प्रति हैक्टेयर भी प्राप्त की है) प्रति हैक्टेयर पैदावार मिलती है। अन्य किस्मों से इस किस्म की खेती मे बदलाव अवश्य कुछ धीरे हुआ है परंतु वर्तमान में गुजरात की गन्ना कृषि में यह अच्छी तरह जम गया है।

नवाचार/तकनीक का असर

गुजरात में इस किस्म ने गन्ने की खेती में क्रांति ला दी है। आजकल गुजरात में 16 प्रतिशत से अधिक भूमि पर गन्ने की खेती की जा रही है। इस किस्म से किसानों को 40 प्रतिशत से अधिक मुनाफा भी मिलता है।

पहचान/इनाम

- डैक्कन गन्ना तकनीक संघ द्वारा उत्कृष्ट अनुसंधान दस्तावेज के लिए वसंतदादा पाटिल मैमोरियल पुरस्कार (DSTA) 2009 दिया गया।

मुद्दे

इस फसल के लिए केवल एक ही समस्या है कि इसे जलग्रस्त भूमि पर ही लगाया जा सकता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

आम की नई किस्म – नीलफोनसो

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	बागवानी एसपी महाविद्यालय, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	एसपी उद्यानविद्या महाविद्यालय, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय, नवसरी, गुजरात फोन न.: 02637 282028

बिजनैस मॉडल

नवसरी कृषि विश्वविद्यालय (NAU) ने इस उत्पाद को बाजार में उतारा है।

नवाचार का विवरण

आम की दो किस्मों – नीलम और अलफांसो को सावधानीपूर्वक मिला कर यह किस्म तैयार की गई है। यह किस्म आमतौर पर जोरदार पैदावार की प्रतीक है अतः प्रति हैक्टेयर (अलफांसों से 200 प्रतिशत अधिक) अलफांसो (यह भी अत्याधिक जोरदार फसल है) की तुलना में अधिक पौधे रोपे जा सकते हैं। औसत पैदावार लगभग 50 से 60 किलो/पेड़ (केवल तुलना के लिए केसर की औसत पैदावार 100 किलो/पेड़ और अलफांसो की 90 किलो/पेड़ है) फल का औसत वजन लगभग 200 ग्राम होता है। फल के गुद्दे में रेशा बिल्कुल नहीं होता और स्वाद अलफांसो जैसा होता है। यह फल जून–जुलाई में पक जाता है। यह कई दिनों तक ताजा रहता है और इसमें लगभग 14.58 प्रतिशत तक मिठास होती है। चूंकि यह किस्म कुछ देर से पकती है अतः अलफांसो के पारंपरिक मौसम खत्म होने के बाद अपने आप इससे अधिक लाभ मिल जाता है। स्वाभविक है कि बाजार में इसकी अच्छी मांग बनी रहती है। यद्यपि प्रति पेड़ पैदावार कम होती है परंतु अलफांसो के मुकाबले प्रति हैक्टेयर पैदावार अधिक (क्योंकि प्रति हैक्टेयर अधिक पेड़ लगाए जा सकते हैं) होती है। इस किस्म में स्पंज जैसे तंतुओं की समस्या भी नहीं होती जो कि अलफांसों में दिखाई देती है।

नवाचार/तकनीक का असर

अलफांसो अनियमित धारक है। इसलिए पौधे से पौधे, स्थान से स्थान, वर्ष से वर्ष की पैदावार भिन्न होती है। इसमें अत्याधिक भिन्नताएं होती हैं इसलिए इसमें कुछ जोखिम बना रहता है। विकसित की गई यह किस्म (नीलफांसो) नियमित धारक है और इसमें स्पंज जैसे तंतुओं की समस्या भी नहीं होती। इसलिए किसान की नज़र में यह अधिक सुरक्षित निवेश है। यह सुझाव दिया जा रहा है कि आने वाले सालों में इस किस्म की स्थानीय एवं निर्यात बाजार में बहुत मांग होगी।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

नारियल की गैर–पारंपरिक किस्म की खेती

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री चंदुभाई बालाभाई देसाई
अनुभव	20 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 96,000 प्रति वर्ष
विस्तार	₹ 12,000 प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	4
संपर्क विवरण	डाकखाना – महुआ, तालुक – महुआ, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09913605781

बिजनैस मॉडल

नवाचारक इन नारियलों की बाजार में ₹ 8 प्रति नारियल के हिसाब से बिक्री करता है। वह अपने जिले के किसानों को नारियल की गैर–पारंपरिक किस्म की खेती के बारे में सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक नारियल की गैर–पारंपरिक जैसे बीटी, बोना व देसी किस्मों की खेती करता है। उसके सामने यह चुनौती थी कि उस समय नारियल की खेती करे जब उस इलाके में किसी और ने न की हो। वास्तव में वह इलाका कपास की पारंपरिक खेती का क्षेत्र है। परंतु उसने खेती के स्वरूप को बदल कर खेती की बेहतर ट्यूनिंग पर ध्यान केंद्रित किया ताकि वहां नारियल की खेती सही ढंग से की जा सके। उसके लिए नारियल की खेती मुनाफे का सौदा है और उसकी पैदावार तमिलनाडु व केरल जैसे पारंपरिक नारियल की खेती करने वाले इलाकों में होने वाली पैदावार के लगभग बराबर होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

नारियल की इन किस्मों की खेती करने पर नारियल की पैदावार में 500 नारियल प्रति बीघा वृद्धि हो जाती है। इन किस्मों से जमीन की उर्वरकता में भी वृद्धि होती है और मुनाफा भी बढ कर 25,000 प्रति एकड़ हो जाता है। इसमें मज़दूरी भी 50 प्रतिशत कम हो जाती है और प्रतिदिन 4 घंटे समय व 30 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

यदि इसे बड़ी तस्वीर में देखा जाए तो उस क्षेत्र में तालुक स्तर पर यह नारियल का बाजार बनाने में सहायक है। इस तालुक में नारियल की बाजार में अच्छी मांग को देखते हुए उस इलाके के और अधिक किसानों ने नारियल की खेती करना आरंभ कर दिया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस प्रकार की खेती करने के लिए किसानो के बीच जागरूकता लाना एक समस्या है। नवाचारक आर्थिक रूप से कमज़ोर है और बेहतर कृषि के लिए उसे ऋण की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मीठी मक्कई व अनार के लिए बागवानी का विकास करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री भगवान भाई रावजी भाई जगदिया
अनुभव	4–5 साल
कार्य क्षेत्र	भावनगर
कुल बिक्री	₹ 3,75,000
विस्तार	6 टन मीठी मक्कई और 5 टन अनार
कर्मचारियों की संख्या	4–5
संपर्क विवरण	वारतेज, जिला – भावनगर मोबाइल न.: 09904440319

बिजनैस मॉडल

वह मुफ्त मे सलाह देता है। फसल की बिक्री APMC भावनगर में की जाती है। मीठी मक्कई ₹ 12.50 प्रति किलोग्राम में बेची जाती है और अनार ₹ 60 प्रति किलो में बिकता है।

नवाचार का विवरण

इस नवाचार में मीठी मक्कई व अनार की बागवानी विकसित की जाती है। मीठी मक्कई के लिए संकर किस्म (बताई नहीं गई) और अनार के लिए भगवा किस्म का इस्तेमाल किया जाता है। इस फसल के लिए ड्रिप सिंचाई का भी इस्तेमाल किया जाता है। पारंपरिक तौर पर इस क्षेत्र में इस प्रकार से दो फसलों की खेती नहीं की जाती थी। इन दोनों प्रकार की फसलों के बारे में उसे दो कारणों से प्रेरणा मिली। एक तो यह कि अहमदाबाद और राजकोट जैसे शहरों में मीठी मक्कई की भारी मांग पर पकड़ बनाना जहां भारी संख्या में पर्यटक द्वारका और सोमनाथ जैसे मंदिरों को देखने आते हैं। दूसरी यह कि निर्यात किस्म के अनार की फसल लगाना जिन्हें पोरबंदर की बंदरगाह से आसानी से निर्यात किया जा सकता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कृषि परंपरा में थोड़ा–बहुत अनुकूलन करके उसने मीठी मक्कई और अनार की ऐसी बहुत सी किस्मों को लगाने का प्रयास किया जिनकी खेती इस इलाके में की जा सकती थी।

नवाचार/तकनीक का असर

उसके प्रयासों के परिणामस्वरूप 30 प्रतिशत तक मज़दूरी में बचत हुई और पहले वाली फसल के मुकाबले दिन में 3 घंटे समय की बचत हुई। इस तकनीक से पैदावार में 1 टन प्रति एकड़ की वृद्धि हुई और ₹ 65,000 प्रति एकड़ का मुनाफा हुआ। ड्रिप सिंचाई के कारण पानी के इस्तेमाल में 80 प्रतिशत की बचत हुई। आमतौर पर मुफत सलाह देने के लिए वह अपने घर पर छोटे किसानों की बैठक बुलाता है – इससे बहुत से किसान उसके मार्गदर्शन के अनुसार इन दोनों फसलों की खेती करने लगे हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है जो आसानी से नहीं मिलते। कभी–कभी जंगली जानवर खेतों में घुस कर समस्या पैदा करते हैं। उसे जमीन के विकास के लिए लगभग ₹ 2,00,000 के ऋण की आवश्यकता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

गन्ने की खेती वाले इलाके में शरीफे की खेती

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री पांडूराग सीताराम काले
अनुभव	11 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 1.25 लाख
विस्तार	5 एकड़ खेती की जमीन
कर्मचारियों की संख्या	मौसम की 3 माह की अवधि के दौरान 4 कर्मचारी
संपर्क विवरण	डाकखाना खाड़की, तालुक – दौद, जिला – पुणे मोबाइल नः 09860093267

बिजनैस मॉडल

बाजार में इसका मूल्य ₹ 20 से 30 प्रति किलोग्राम के हिसाब से होता है।

नवाचार का विवरण

यह हैदराबाद की एक चुनी हुई किस्म है। इस फल की खेती के लिए सरकार ने आर्थिक सहायता भी दी है। पेड़ों के बीच 15 फुट की दूरी रखी जाती है। पूरे खेत में ड्रिप सिंचाई की जाती है। इसमें जैविक खाद का इस्तेमाल किया गया और फल के आकार को देखते हुए इसके परिणाम बहुत अच्छे रहे हैं। 5 एकड़ की भूमि पर शरीफे के 900 पेड़ लगाए गए। अब इन पेड़ों की उम्र 11 साल है। प्रत्येक पेड़ 50 किलोग्राम फल देता है। इससे पूर्व इस इलाके में पानी की अत्याधिक जरूरत के कारण गन्ने की खेती पर असर पड़ रहा था। इस इलाके के लोगों ने अन्य विकल्पों की ओर देखना शुरू कर दिया था और ऐसे समय में श्री काले को गन्ने की पारंपरिक खेती वाले इलाके में शरीफे की खेती करने का एहसास हुआ जिसमें पानी की बहुत कम जरूरत होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

साल के चार माह तक स्थायी आमदनी, पारंपरिक गन्ने की खेती के मुकाबले 50 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है। फसल की कटाई और खेती तैयार करते समय मजदूरों की जरूरत बढ जाती है जिससे रोजगार में वृद्धि होती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बिजली बहुत अनियमित होने के साथ–साथ मंहगी भी है। कटाई के समय मजदूरों की संख्या में कमी हो जाती है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

टमाटर की अविनाश किस्म के लिए मानक संचालन प्रक्रिया विकासित करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अशोक पाटिल तावड़े
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	2 एकड़
कर्मचारियों की संख्या	1 स्थायी और 4 अस्थायी
संपर्क विवरण	डाकखाना – मालेगांव खुर्द 29 बी, तालुक – बारामती, जिला – पुणे, महाराष्ट्र मोबाइल नः 09767735151

बिजनैस मॉडल

इस उत्पाद को स्थानीय बाजार में लगभग ₹ 10 से 16 प्रति किलो की दर पर बेचा जाता है। श्री अशोक किसानों के साथ बैठकें भी करते हैं।

नवाचार का विवरण

किसान ने अविनाश किस्म के टमाटरों की खेती की क्योंकि इसका फल आकार में बड़ा और देर तक ताजा रहता है। उसने सफल प्रयोग करते हुए संबंधित टमाटर की किस्म के लिए इस प्रकार के पौधों को डिजाइन किया। दो क्यारियों में 3 फुट की दूरी रखी जाती है और प्रत्येक बैच में 4 बार उर्वरक और 5 बार कीटनाशक दवाएं दी जाती हैं। दो क्यारियों के बीच 3 फुट की दूरी रखी जाती है जबकि दो पौधों के बीच 1 फुट की दूरी रखी जाती है। चूंकि फल का आकार व वजन अधिक होता है अतः पौधे को सहारा देने के लिए लकड़ी की एक डंडी लगाई जाती है। पूरे खेत में ड्रिप सिंचाई की जाती है और ड्रिप यंत्र लगाने में ₹ 40,000 प्रति एकड़ की लागत आती है। पौधे लगाने के 3 माह बाद उपज तैयार हो जाती है जो अगले 3 माह तक रहती है। यदि सही ढंग से देखभाल की जाए तो प्रति एकड़ 25 टन की पैदावार निश्चित हो सकती है।

नवाचार/तकनीक का असर

फल का आकार बड़ा और देर तक ताजा रहने के कारण इस इलाके में उपलब्ध नियमित किस्म का काफी बढिया विकल्प है। अन्य किसान भी इस प्रकार की नई किस्म के उपज के बारे में अधिक जागरूक हो रहे हैं और स्वयं इनकी खेती करने की उन्हें प्रेरणा भी मिल रही है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इनके लिए 'करपा' कीट एक समस्या है, अतः कीट नाशक निवारक दवा का स्प्रे करना अत्यंत आवश्यक है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

झार करेला – जंगली करेले की चुनी हुई किस्म

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री दलीप सिंह
अनुभव	32 साल
कार्य क्षेत्र	पंजाब
कुल बिक्री	₹ 4 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	250–300 किलोग्राम प्रतिवर्ष
कर्मचारियों की संख्या	2
संपर्क विवरण	गांव कोठे रामसर, डाकखाना – ढिलवां कलां, कोटकापुरा, जिला – फरीदकोट, पंजाब मोबाइल न.: 09417929149

बिजनैस मॉडल

नवाचारक ने झार करेले की 1, 2 व 5 किलो की पैकिंग तैयार की है। झार करेले की कीमत ₹ 50 से 60 प्रति किलोग्राम होती है। लुधियाना और भटिंडा से नवाचारक को इनकी बुकिंग मिलती है। वह केवीके में आयोजित 7 दिन के कैम्प में मुफ्त सलाह भी देता है। किसान को लगभग ₹ 2,00,000 प्रति हैक्टेयर का कुल मुनाफा हुआ है। लहसुन की फसल उसकी आमदनी का अतिरिक्त स्त्रोत है जिसे वह अपने दूसरे खेतों में उगाता है और ₹ 2.5 लाख प्रति एकड़ कमाता है।

नवाचार का विवरण

झार करेला रेतीले इलाकों में जंगली पौधे के रूप में झाड़ियों में पाया जाता है। नवाचारक ने इस जंगली पौधे की व्यवसायिक खेती करनी शुरू कर दी। उसने पंजाब के दक्षिण–पश्चिम जिलों में जंगली घास के रूप में उगने वाले इस जंगली पौधे के बीज इक्ठ्ठे किए। वह बीज इक्ठ्ठा करने के लिए राजस्थान भी गया। उसने इन बीजों को चुन कर अपनी स्वयं की एक किस्म तैयार की। पिछले पांच सालों से वह औसतन 0.5–1.5 हैक्टेयर भूमि पर 'झार करेले' की सलाना खेती कर रहा है। यह अंगूर की बेल जैसी फसल होती है जिसके लिए खूंटे लगाने की आवश्यकता होती है। किसान ने इन बेलों को फैलाने के लिए ठोस नींव पर बांस के खूंटों की प्रणाली तैयार कर ली।

नवाचार/तकनीक का असर

औसतन 75 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की पैदावार होती है। वह स्वयं अपने वाहन पर इस फसल की मार्केटिंग करता है। उसने आस–पास के इलाकों में औसतन ₹ 5,000 प्रति क्विंटल प्रति हैक्टेयर की लागत पर इस उपज की बिक्री की है। यह पौधा मधुमेह रोग से पीड़ित लोगों के लिए यह औषधीय अहमियत रखता है। किसान विकल्प के तौर पर इस फसल को अपना सकते हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

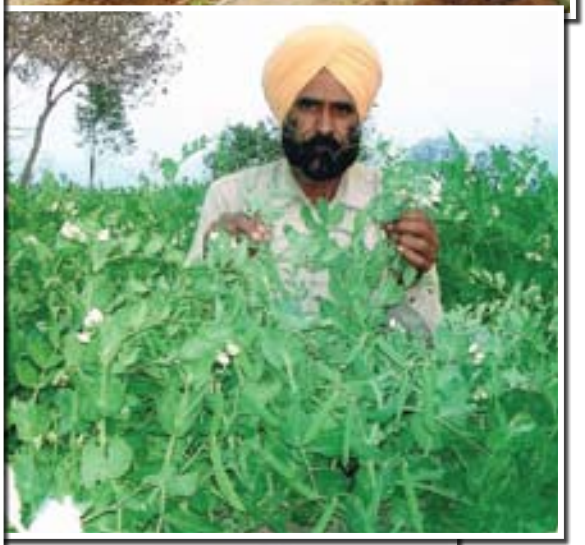

नवाचार का सारांश

आधी शुष्क भूमि पर नारियल व चीकू की बागवानी का विकास करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नाटू भाई देसाई
अनुभव	25 साल
कार्य क्षेत्र	महुआ, राजकोट
कुल बिक्री	₹ 30,000 प्रति वर्ष
विस्तार	3,000 नारियल प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	डाकखाना – महुआ, तालुक – महुआ, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09924849335

बिजनैस मॉडल

गैर–पारंपरिक इलाके में उत्पादित नारियल को स्थानीय व APMC बाजार में ₹ 10 प्रति नारियल के हिसाब से बेचा जाता है। वह सालाना लगभग 3,000 नारियलों की बिक्री करता है और केवल नारियल से उसे प्रति वर्ष ₹ 30,000 की आमदनी होती है। कुल मिला कर वह गैर–पारंपरिक उद्यान खेती से ₹ 35,000 प्रति एकड़ कमा लेता है।

नवाचार का विवरण

श्री नाटू भाई ने गैर–पारंपरिक इलाके में नारियल व चीकू की खेती करने के व्यवसायिक अवसर को पहचाना जिसमें कम निवेश की जरूरत होती है और पौधों की लंबी आयु भी सुनिश्चित की जा सकती है। वह पिछले 25 सालों से नारियल व चीकू की खेती कर रहा है जबकि यह दोनों फसलें इलाके की पारंपरिक फसलें नहीं हैं। इस व्यवसाय को चलाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि अब तक इसमें मजदूरों की बहुत कम जरूरत पड़ी है। ध्यान दी जाने वाले तथ्य यह हैं कि गैर–परंपरिक (नारियल व चीकू) उद्यान भूमि की भिन्न प्रकार की विशेषताएं पारंपरिक भूमि के अनरूप पायी गईं। इससे वह इन दोनों तटीय फसलों की अत्याधिक मांग पर पकड़ बना सका चूंकि यथोचित बाजार संपर्कों के माध्यम से वह स्थानीय बाजार की मांग को पूरा कर पाने में समर्थ है जो अन्यथा केरल व तमिलनाडु में स्थित व पारंपरिक आपूर्ति के कारण अब तक मुश्किल था।

नवाचार/तकनीक का असर

हाल ही में श्री नाटू भाई से प्ररेणा पाकर एवं प्रेरित होकर पांच परिवारों ने गैर–पारंपरिक इलाके में बागवानी करके कमाना शुरू कर दिया है जो कि इससे पूर्व बंजर भूमि की तरह पड़ा था। न केवल व्यक्तिगत स्तर पर अपितु उसने महुआ में उद्यान विकास तथा राजकोट में नर्सरी विकास के लिए आयोजित सेमिनारों में हिस्सा लेकर लोगों को इस प्रकार से उद्यान विकास की जानकारी भी दी।

पहचान/इनाम

- महुआ कृषि विभाग द्वारा क्रुस्का रूस्का पुरस्कार प्रदान किया गया

मुद्दे

उसके अनुसार APMC जैसे बाजार आजकल बेहतर किस्म की मांग करते हैं परंतु अच्छी प्रथाओं को अपनाना कभी–कभी किसानों के लिए मुश्किल पैदा करता है। कटाई से पहले होने वाले नुकसान भी इस इलाके में आम बात है। वर्तमान में इस

इलाके में किसानों को साहूकार द्वारा 36 प्रतिशत सालाना की दर से ऋण दिया जाता है अतः उन्हें बैंकों से ऋण लेने की जरूरत है परंतु अपर्याप्त मूलभूत सेवाओं व बाहरी संपर्क न होने के कारण ऐसी सेवाएं अभी भी स्थानीय लोगों की पहुंच से बाहर हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

प्याज की अत्याधिक पैदावार

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री दिनेश भाई मियानी
अनुभव	1 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	₹ 2,40,000 प्रति वर्ष
विस्तार	12 टन प्रति एकड़
कर्मचारियों की संख्या	2
संपर्क विवरण	वालुकर, तालुक – घोघा, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09904174995

बिजनैस मॉडल

नवाचारक किसानों को मुफ्त सलाह देता है। नवाचारक ने शहर की प्याज की मांग को पूरा करने के लिए अत्याधिक प्याज का उत्पादन करने वाले किसानों का एक दल तैयार किया है। वह ₹ 1200 प्रति किलो की दर पर बीजों की भी बिक्री करता है।

नवाचार का विवरण

भावनगर के इलाके में जहां किसान कपास की खेती करने में व्यस्त हैं वहां श्री दिनेश भाई ने संकर किस्म के बीजों और उर्वरकों की सही मात्रा का इस्तेमाल करके मुख्य रूप से प्याज की फसल पर ध्यान केंद्रित किया। शहर की मांग को पूरा करने के लिए उसने फसल में नियमित आर्वतन करना आरंभ कर दिया जिससे फसल में विविधता भी आ गई। वह मक्की की फसल के साथ प्याज का आर्वतन करता है। फसलों को हर साल बदलने से भूमि विशेष में होने वाली कमी को कम किया जा सकता है क्योंकि जमीन में से मिटने वाले पोषक तत्वों का संतुलन समय के साथ बिगड़ जाता है। साधारण आवर्तन अथवा एक–फसल की तुलना में जमीन के उसी टुकड़े पर कई सालों तक विभिन्न फसलें (और खाद) लगाना आमतौर पर भूमि में अधिक जैविक तत्व, बनावट व जमाव से जुड़ा होता है। इस प्रकार की विशेषताओं की वृद्धि होने से पानी का रिसना और जल धारण क्षमता में बढोतरी के कारण भूमि कटाव की क्षमता में कमी आती है।

नवाचार/तकनीक का असर

उसने किसानों 6 अन्य किसानों को प्याज की खेती करने के लिए प्रेरित किया। इससे क्षेत्र की पारंपरिक फसलों की तुलना में पैदावार में 2000 किलो प्रति एकड़ की वृद्धि हुई और विविधीकरण के माध्यम से भूमि की उर्वरकता में भी बढोतरी हुई है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

किसान को आर्थिक परेशानी है क्योंकि उसे जुताई से पूर्व खेती के लिए ₹ 1 लाख का ऋण चाहिए। वह स्वयं संपर्कों को आगे बढाने का प्रयास कर रहा है क्योंकि स्थानीय बाजार में उसे इस उत्पाद के लिए अच्छे दाम नही मिलते।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

केले की लगातार खेती

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री राजेशभाई जयंतीभाई पटेल
अनुभव	40 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	डाकखाना – पनेठा, तालुक – झागड़िया, जिला – भड़ुच, गुजरात मोबाइल न.: 09930141781

बिजनैस मॉडल

इस नई खेती प्रथा को लागू करने के लिए उसे अतिरिक्त धन राशि की आवश्यकता नहीं थी। वह अन्य किसानों को मुफ्त में सलाह देता है।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक तौर पर भारत में पूरे साल भर में केले की केवल एक खेती ही की जाती थी। अब राजेश पटेल ने दो सालों में केले की सात फसलों की खेती की अवधारणा को चरित्रार्थ किया है। इस विधि से मजदूरी, जमीन तैयार करने, और पौधे रोपणे की लागत में भारी कमी आती है। इसके अतिरिक्त यह लगभग लगातार उसकी आय का स्त्रोत भी बन गया है। केले के पौधों के दो साल में केवल एक बार रोपा जाता है। केले के उतक पौधे को दूसरे पौधे से दूर रोपा जाता है और पानी की बचत करने के लिए ड्रिप सिंचाई का प्रयोग किया जाता है। एक फसल की खेती करने के बाद मौजूदा केले के पौधे को नष्ट होने के लिए छोड़ दिया जाता है और वह अगामी फसल के लिए हरी खाद बन जाता है। इसके अतिरिक्त इसकी कली को इस प्रकार पोषित किया जाता है कि इससे अगामी फसल तैयार की जा सके। इस प्रकार नए उतकों को रोपणे के लिए खेत को दुबारा तैयार करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसी प्रक्रिया को केले की अगली फसल के लिए भी दोहराया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

राजेश पटेल द्वारा बताई गई इस विधि से खेती, पैदावार तथा किसानों की आमदनी में अत्याधिक बढोतरी हुई है। इस तकनीक से एक साल में सात फसलों का उत्पादन किया जा सकता है। किसानों की आमदनी इससे दिन दूनी रात चौगनी बढ गई है और निवेश लागत काफी कम हो गई है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बहुत ज्यादा निवेश और सिंचाई लागत, मजूदर उपलब्ध न होना।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

केले और पपीते की मिश्रित फसलें

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मेहुलभाई भोगीलाल
अनुभव	8 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	डाकखाना – डूंगरा, तालुक – कामरेज, जिला – सूरत, गुजरात

बिजनैस मॉडल

वह अपनी उपज की बिक्री स्थानीय बाजार में करता है। वह राज्य अथवा केंद्र सरकार किसी से भी किसी प्रकार के आर्थिक सहायता नहीं लेता और स्वयं का धन लगा कर सीधे बाजार से केले और पपीते के तंतुओं की खरीद करता है। दूसरे किसानों के साथ इस मिश्रित फसल के बारे में जानकारी बांटने का कोई शुल्क नहीं लेता।

नवाचार का विवरण

पारंपरिक तौर पर इस इलाके में केवल एक ही फसल की खेती की जाती थी। मेहुलभाई ने यहां उद्यान खेती में बहु–फसल की अवधारणा का शुभारंभ किया। उसने केले और पपीते की खेती एक साथ की। इस विधि में इन फसलों की खेती करने में कम मजदूरों की जरूरत होती है क्योंकि यह दोनों फसलें अलग–अलग समय में पक कर तैयार होती हैं। इस प्रकार दोनों फसलों के संपूर्ण विकास एवं कृषि प्रक्रिया की आसानी से व्यवस्था की जा सकती है। उसने एक एकड़ भूमि पर वैकल्पिक तौर पर पपीते के 650 पौधे और केले के 1100 पौधे लगाए।

नवाचार/तकनीक का असर

नियमित फसल के मुकाबले इसकी पैदावार 50 प्रतिशत से अधिक हुई है। इस प्रकार एक ही जोत भूमि पर एक साथ बहु–फसल लगाने से किसान की आमदनी भी बढ जाती है। इससे लागत कमी और प्रति एकड़ मुनाफा बढाने में मदद मिलती है। एक ही जोत भूमि पर बहु–फसलों की खेती करने से जमीन की उर्वरकता में भी सुधार हो जाता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कृषि वैज्ञानिकों की ओर से मिश्रित फसल के लिए सही फसल के चुनाव के संबंध में किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं दिया जाता।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

केले की फसल के लिए आयातित तकनीक का अनुकूलन एवं कार्यान्वयन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

फल और सब्जियां

नवाचारक का विवरण

नाम	देसाई फल एवं सब्जियां
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	प्लॉट न॰. 49, डाकखाना – आमदपोर, राष्ट्रीय मार्ग 8, नवसरी, गुजरात फोन न॰: 02637 281547, मोबाइल न॰: 09824121574 (श्री अजीत देसाई)

बिजनैस मॉडल

इस तकनीक का आयात फिलीपींस से तय सालाना व सफलता के अनुसार शुल्क के आधार पर किया गया है। प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन के दौरान फिलीपींस की एक टीम को बुलाया गया था।

नवाचार का विवरण

भारत विश्व में केले का सबसे बड़ा उत्पादक है परंतु फिर भी अभी तक निर्यात किस्म के केले की भारी मात्रा में पैदावार करने में असमर्थ है। असक्षम आपूर्ति श्रृंखला, खेती की पुरानी तकनीक और बारंबार होने वाले रोगों ने भारत के इस फल को अंतरराष्ट्रीय बाजार की होड़ में पीछे छोड़ दिया है। भारत से और भारत में इस फल के व्यापार की अत्याधिक संभावनाओं को देखते हुए देसाई फल व सब्जी (DFV) ने इन संभावनाओं को पूरा करने के लिए विदेशों से तकनीक मंगाने के बारे में सोचना शुरू कर दिया था। इस बीच फिलीपींस में स्थित एक एजेंसी से उनकी मुलाकात हुई जिसने केले की खेती में कटाई पूर्व और कटाई बाद दोनों प्रक्रियाओं के लिए सफल एवं संक्षिप्त तकनीक तैयार की थी। इसी प्रकार की तकनीकों के प्रस्ताव कुछ अन्य फिलीपींस व दक्षिण अमेरीका में स्थित फर्मों की ओर से भी आने लगे थे।

DFV ने मौजूदा असक्षम तकनीकों से बचने और भारत में इस प्रकार की नई तकनीक लाने के लिए एक एजेंसी के साथ नाता जोड़ा जिसमें भारत में केले की पैदावार के प्राकृतिक दृश्य को बदल डालने की पूरी संभावना थी। इस तकनीक के अनुसार जोत क्षेत्र व आपूर्ति श्रृंखला के प्रक्रम स्तर पर अनेकों बार हस्तक्षेप करने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक पौधे के लिए अधिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रति एकड़ पौधों की संख्या कम की जाती है। पौधों को तरल दवाएं देने के लिए भी विशिष्ट प्रकार की योजना बनाई जाती है। 'सिगा टोका' नामक रोग भारत में केले की खेती की सबसे बड़ी समस्या है। इस तकनीक के अनुसार निर्धारित अंतराल में कुछ रसायनों का प्रयोग करने की जरूरत होती है जिससे इस रोग पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। पौधों की देखभाल के लिए बहुत सी अन्य तकनीकों को भी कार्यान्वित किया जाता है जिसमें पौधों को पोलीथीन से ढकना और फल की चमक को कम होने से बचाने के लिए फोम आदि का इस्तेमाल करना शामिल है। कटाई बाद की कार्यकलापों के लिए फार्म में विशेष प्रकार के ट्रैलर लगाए गए जिससे फलों को पैकिंग वहीं कर दी जाती है ताकि फलों का नुकसान कम से कम हो। संसाधन स्तर पर कुछ रसायनों का प्रयोग करने से आपूर्ति श्रृंखला के अंत तक फल तरोताजा बने रहते हैं। फलों के पकने संबंधी अधिक बेहतर तकनीक इस्तेमाल किया गया जो भारत में इस्तेमाल की जाने वाली आम तकनीक के मुकाबले कम नुकसानदेह पायी गई है।

नवाचार/तकनीक का असर

प्रति एकड़ कम संख्या में पौधे लगाने के बावजूद प्रति एकड़ कुल पैदावार में अत्याधिक सुधार पाया गया जिसके परिणामस्वरूप प्रति एकड़ पैदावार में पर्याप्त वृद्धि हुई और प्रति एकड़ सालाना आमदनी में भी बढोतरी हुई। केले के गुच्छों के भार में भी

लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि पायी गई जबकि फलों पर दाग व धब्बों बहुत कम पाए गए और फल की क्रांति में सुधार हुआ। यही नहीं प्रत्येक वर्ष सामान्यतः दो फसलों की कटाई के बदले दो सालों में तीन फसलें ली जा सकीं। DFV ने किसानों के गहन प्रशिक्षण और गांव भर में किसान संघ बनाने के भी प्रयास किए हैं।

पहचान/इनाम

- इक्नॉमिक टाइम्स व बिजनैस स्टैंर्डड में विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की गई
- APEDA से पुरस्कार मिला

मुद्दे

किसानों के सम्मुख सबसे पहला मुद्दा यह है कि वास्तव में किसान नई तकनीक के खिलाफ हैं और यह भी सही है कि इस तकनीक के तहत वास्तव में प्रति एकड़ कम पौधे लगाए जाते हैं। यह तकनीक गहन श्रम से जुड़ी है और इसमें जरूरत है कि मजदूर एकाग्रचित्त होकर प्रशिक्षण लें। इस तकनीक में ड्रिप सिंचाई की जरूरत होती है और यदि निर्यातक अथवा सरकार इस तकनीक को अपनाने के लिए किसी प्रकार की आर्थिक सहायता न दें तो मूलभूत ढांचे में शुरूआती निवेश करना किसानों के लिए मुश्किल पैदा करता है। कुछ रसायन सीमित रूप से उपलब्ध होते हैं और कभी–कभी उन्हें आयात करने की भी जरूर पड़ती है।

उत्पाद चित्र

अन्य फसलें

नवाचार का सारांश

सफेद बीजों वाली रवी की नई प्रकार की अरहर दाल जिसे GT 102 के नाम से जाना जाता है

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

अन्य फसलें

नवाचारक का विवरण

नाम	दाल अनुसंधान स्टेशन, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	दाल अनुसंधान स्टेशन, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय नवसरी, गुजरात फोन न.: 02637 282028, ई–मेलः pulsenau@gmail.com

बिजनैस मॉडल

वे बीजों की पैदावार करके उनकी बिक्री सहकारी समितियों तथा बाजार में करते हैं। इस उत्पाद को नवसरी कृषि विश्वविद्यालय (NAU) बाजार में उतारता है।

नवाचार का विवरण

दक्षिण गुजरात के किसानों को रवी मौसम में रवी की सफेद बीजदार अरहर दाल की जरूरत होती है। दाल अनुसंधान, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक ने GT 102 को विकसित करके इस जरूरत को पूरा कर किया है। इसे पकने के लिए मध्यम समय चाहिए, सामान्य रूप से लंबी और यह बैंगनी लाल धारीदार हरी फली और प्रमुख रूप से सफेद रंग की होती है जो पूरे फैलाव के साथ बढती है। यह SMD (Sterility Mosaic Disease) जीवाणूरहिणता पच्चीकारी रोग प्रतिरोधी होती है जो कि इस इलाके के किसानों के लिए बहुत बड़ी समस्या है। यह रोग स्वतः ही झाड़ीदार, फूलों रहित फीके पीले रंग के पौधों में दिखाई पड़ता है – इससे पत्ते हल्के और गहरे हरे रंग के कीड़ों जैसी पच्चीकारी से दिखने लगते है। इस रोग पर काबू पाने के लिए संक्रमित पौधे को जड़ से निकाल कर फेकना पड़ता है जिसके लिए समय और मजदूर दोनों की जरूरत पड़ती है।

नवाचार/तकनीक का असर

रवी की फसल लगाने के बदले किसान विकल्प के तौर पर इस फसल को लगा सकते हैं। इससे 1595 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की पैदावार मिलती है और सी–11 व BDN-2 (अन्य प्रबल किस्में) से 16.5 प्रतिशत व 47.8 प्रतिशत से अधिक वृद्धि होती है। SMD रोग के खिलाफ इसकी प्रतिरोधी क्षमता सबसे बड़ा फायदा देती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस किस्म के सम्मुख केवल एक ही समस्या है कि यदि एन टाइप उर्वरकों का इस्तेमाल सिफारिश की गई मात्रा से अधिक किया जाए तो फसल SMD रोग से पीड़ित हो सकती है। किसानों को इसकी जानकारी देना अधिक महत्वपूर्ण है और वे समझदारी से इस जानकारी का प्रसार कर सकते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मिसीला रिफाइनरी में बिनोलों से एक ही बार में तेल निचोड़ने की तकनीक को समेकित करके स्वदेश में विकसित

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

अन्य फसलें

नवाचारक का विवरण

नाम	अभय कोटेक्स प्राइवेट लिमिटेड
अनुभव	2 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 96 करोड़
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	305
संपर्क विवरण	श्री डी.ए. प्रसाद (CEO) ई–मेलः Prasad.d@abhaycotex.com, मोबाइल न.: 09404505881 श्री आशीष मंत्री (निदेशक) ई–मेलः Ashish.m@abhaycotex.com, मोबाइल न.: 09595291999 31, नई गुड मार्किट, मौंधा, बस स्टैंड के नजदीक, जालना, महाराष्ट्र – 431203 फोन न.: 02482 229308, वेबसाइटः www.abhaycotex.com

बिजनैस मॉडल

बिनोलों से निकाले गए तेल की बिक्री स्थानीय बाजार में की जाती है। कपास से तैयार उपोत्पादों का निर्यात किया जाता है। तेल रहित खली (DOC) की अच्छी मांग और व्यापार की अधिकता पुनः बिक्री में व्यापकता बनी रहें। आमतौर पर इनका निर्यात दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य खाड़ी देशों में किया जाता है। तेल रहित खली बिनौलों का निर्यात चीन में किया जाता है जहां वे इसका इस्तेमाल मशरूम उगाने के लिए करते हैं।

नवाचार का विवरण

बिनोलों से तेल निकालने के लिए बाजार में बहुत सी प्रक्रियाएं उपलब्ध हैं। पारंपरिक तौर पर बिनोलों को सीधे पीस कर तेल निकाला जाता है। इसे निष्कासान प्रकिया कहा जाता है। बिनोलों को फाहों व छिलकों सहित मोटा पीसा जाता (जो तैल रहित अशुद्धियों से युक्त होते हैं) इस प्रक्रिया से प्राप्त तेल युक्त खली में पीसे व घने फाहे और छिलके रह जाते हैं। भारत में कपास का 1.25 करोड़ टन सालाना उत्पादन होता है; और लगभग 96 प्रतिशत बिनोलों की पिसाई इसी तकनीक से की जाती है। इस प्रक्रिया की एक कमी यह है कि तेल निकालने से पहले रूई के फाहों और बिनोलों को अलग नहीं किया जा सकता। इसलिए तेल युक्त खली में फाहों और बिनोलों की मौजूदगी के कारण प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती है। दूसरी प्रक्रिया में तेल निकालने से पहले बिनोलों से खली और फाहों को अलग करने के लिए अनेक चरणों से गुजारना पड़ता है। परंतु अधिकांशतः इन सभी प्रक्रियाओं में पानी का अत्याधिक इस्तेमाल और इसके परिणामस्वरूप अपशिष्ट का अत्याधिक रिसाव होता है। प्रदूषण बोर्ड के साथ इन संयंत्रों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि अपशिष्ट का रिसाव भारी चुनौती है।

अभय कोटेक्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली प्रक्रिया में मात्र एक बार में ही परिशोधन हो जाता है जिसमें पानी का इस्तेमाल की जरूरत नहीं पड़ती। कपास के फाहों को अलग करने की प्रक्रिया में लगभग 10 प्रतिशत वजन में कमी आ जाती है जिनका इस्तेमाल अन्य प्रयोजनों के लिए किया जाता है। बिनोलों के छिलके निकालने की प्रक्रिया के कारण लगभग 30 प्रतिशत वजन कम हो जाता है। इस प्रकार इस विधि में केवल बहुत अच्छी तरह से साफ किए गए बीजों को ही तेल निकालने के लिए पारित किया जाता है। चूंकि इस प्रक्रिया में पानी का बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं होता अतः इससे पानी की अत्याधिक बचत होती है और इसके परिचालन में ऊर्जा की भी अधिक खपत नहीं होती। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप DOC में प्रोटीन की मात्रा पारंपरिक प्रक्रिया की 18 प्रतिशत के मुकाबले 38 प्रतिशत होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

यह उत्तम प्रक्रिया है जो अपने प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले अधिक सस्ती है, इसके अतिरिक्त इस प्रक्रिया के उपोत्पाद भी उत्तम होते हैं और उनकी अपनी अच्छी मार्किट होती है। जिस DOC का इस्तेमाल पशु आहार के लिए किया जाता है वह बाजार में उपलब्ध इस प्रकार के सभी उत्पादों से अधिक बेहतर होती है–जिसमें बाजार में उपलब्ध औसतन 22 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा के मुकाबले 38 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा होती है। इसे बाजार में अच्छा अधिक मूल्य और बहुत बड़ा निर्यात बाजार मिलता है। इस DOC का यदि नियमित इस्तेमाल किया जाए तो इससे दूध की पैदावार में 20 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। मुख्यरूप से यह इसलिए होता है क्योंकि इस DOC में पारंपरिक पशु आहार (6 प्रतिशत) की तुलना में प्रोटीन की (65 प्रतिशत) अधिक मात्रा होती है।

बिनोलों के छिलकों को (ठोस रूप में) चीन में निर्यात किया जाता है जहां इनका इस्तेमाल मशरूम उगाने के लिए किया जाता है। जमीन पर मशरूम की खेती करने की अपेक्षा इस प्रक्रिया से अधिक बेहतर पैदावार मिलती है। जबकि भारतीय किसान इन छिलकों का इस्तेमाल सस्ते पशु आहार के रूप में करते हैं। चीन में इसका इस्तेमाल और अधिक मूल्यवर्धन के लिए किया जाता है इसीलिए वे इनकी भारी कीमत देने के लिए तैयार रहते हैं।

वर्तमान में भारत में तेल की काफी कमी (भारत अपनी जरूरत का लगभग 45 से 50 प्रतिशत आयात करता) है। इस दृष्टिकोण से ऐसी प्रक्रिया का इस्तेमाल करना जिसमें 6 से 7 प्रतिशत तक तेल बर्बाद हो जाए तो यह देश के लिए बहुत भारी नुकसान है। राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (NDRI), करनाल द्वारा किए गए अध्ययन से यह पता चला है कि भारत में बिनोलों का इस प्रकार से संसाधन करने के लिए इस प्रक्रिया का इस्तेमाल करने पर एक साल में लगभग 6,300 करोड़ रुपए की भारी बचत हो सकती है।

पहचान/इनाम

- युवा उपलब्धि पुरस्कार
- महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा मेगा परियोजना का दर्जा दिया
- SGS भारत (खाद्य पदार्थ प्रमाणिकरण सेवाएं) द्वारा बेहतर उत्पादन प्रैक्टिस की मजूरी दी गई

मुद्दे

सबसे बड़ी समस्या अच्छी किस्म के बिनोले उपलब्ध न होना है। आजकल बेहतर भण्डारण परिस्थितियों को बनाए रखना आवश्यक है और इसके बारे में संबंधित किसानों को शिक्षित करके इस समस्या का हल निकाला जा सकता है।

खली की बिक्री करने में भी बहुत सी चुनौतियां हैं। भारतीय बाजार अभी भी खली से मशरूम का उत्पादन करने से मिलने वाले लाभ को आंकने का प्रयास नहीं कर रहा है। इसलिए 90 प्रतिशत खली चीन को निर्यात की जाती है।

DOC की बिक्री करना भी बड़ी चुनौती है। स्थानीय डेरीयों को इस नए उत्पाद को अपनाने के लिए राजी करना सबसे बड़ी चुनौती है। इसमें लगभग 20 प्रतिशत तक उनका मुनाफा बढाने की क्षमता है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मंदे मौसम के दौरान गुड़– शीरे के निर्यात अवसरों का विकास

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

अन्य फसलें

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री विकास गायकवाड
अनुभव	11 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 12 करोड़
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	27
संपर्क विवरण	रॉयल एग्रो फूड इंडस्ट्री, दूसरी मंजिल, भानू मनसीबन, भवानी शंकर रोड दादर, मुम्बई मोबाइल न.: 09029555440, ई–मेलः vikas@royalagrofoods.com

बिजनैस मॉडल

गुड़–शीरे का निर्यात अग्रिम पेशगी का पूरा भुगतान होने पर किया जाता है। नवाचारक मुख्य रूप से alibaba.com जैसी वेबसाइट के माध्यम से अपने व्यापार का विकास करता है।

नवाचार का विवरण

गुड़ गन्ना मिलिंग उद्योग का उतोत्पाद है जिसका इस्तेमाल व्यवसायिक तौर पर मुख्यतः मदिरा बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता है। भारत विश्व में गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। स्थानीय मांग की दृष्टि से यदि देखा जाए तो मंदे मौसम में भी स्थानीय भारतीय बाजार में गुड़ शीरा प्रचूर मात्रा में उपलब्ध रहता है। आमतौर पर इसे नष्ट किया जाता है अथवा मानवीय उपभोग के लिए इस्तेमाल किया जाता है। श्री विकास गायकवाड़ ने ऐसे विदेशी बाजारों की तालाश की जहां भारत के मंदी मौसम में शीरे की आपूर्ति कम हो जाती थी। उसने देखा कि इस अवधि के दौरान अफ्रीका और मध्य पूर्वी देशों में गुड़ की अत्याधिक मांग रहती है और उसने इस वैब–विंडो का इस्तेमाल करके निर्यात के ढेरों अवसर खोज निकाले। उस समय शायद ही इस मंदी मौसम में गुड़ का कोई प्रतिष्ठित भारतीय निर्यातक था और चूंकि उस समय नाममात्र स्पर्धा थी इसलिए इसमें अत्याधिक जोखिम भी था क्योंकि कोई और इस काम में हाथ नहीं डाल रहा था। इस प्रकार उसने निर्यात के लिए ऐसे बाजार का विकास करना आरंभ कर दिया। मुख्य रूप से उसे अपनी ट्रैड वेबसाइट alibaba.com पर ग्राहक मिलने लगे। आरंभ में उसने बिना भुगतान के आर्डर लेने शुरू किए परंतु शीघ्र ही आयातकों से समय पर भुगतान न मिलने के कारण समस्या उत्पन्न हो गई जिसका हल निकालने के लिए उसने अग्रिम पेशगी लेना आरंभ कर दिया। इसी बीच उसकी आरंभिक माल आपूर्ति के कारण अफ्रीका के आयातकों पर आपूर्तिकर्ता के रूप में उसका पूरा भरोसा जम चुका था। उसने कम परंतु अधिक व्यवहार्य कीमतें रखीं ताकि निर्यात किया गया माल अफ्रीका के स्थानीय उत्पादन के साथ सफलापूर्वक होड़ कर सके। कुछ ही सालों में यह उसके लिए लाभदायक एवं स्थिर आय का स्रोत बन गया।

नवाचार/तकनीक का असर

मात्र अवसर को पहचान कर उसने कुल ₹ 1–2 करोड़ (लगभग) का नियमित कारोबार चला लिया। जोखिम के बाबजूद उसकी उद्यमी पहल से उसे कमाई का जरिया मिल गया और उसने यह दिखा दिया कृषि व्यापारी यदि पारंपरिक बाजार से आगे देखें तो किस प्रकार अवसर तालाश किए जा सकते हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

भुगतान को लेकर उसके सामने सबसे बड़ी समस्या थी जिससे निपट पाना बहुत मुश्किल था। अब धीरे–धीरे उसने अपनी कारोबारी योजना में बदलाव करके इस समस्या का हल निकाल लिया है। अब वह केवल उन्हीं ग्राहकों को माल देने के लिए राजी होता है जो उसे 100 प्रतिशत अग्रिम पेशगी दे देते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

धान के बीजों का संरक्षण

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

अन्य फसलें

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मावनजी गणपत पवार
अनुभव	5 साल
कार्य क्षेत्र	आस–पास के गांव
कुल बिक्री	नहीं बताई
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	गांव – चौक, तालुक – जवाहर, जिला – थाणे, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09209583106

बिजनैस मॉडल

इस फार्म पर वे धान के बीजों का प्रजनन करते हैं। अन्य किसानों को यह बीज मुफ्त में दिए जाते हैं। शर्त केवल यह है कि किसान बाद में उसी किस्म के दुगने बीज लौटा देगा। इस पहल के लिए श्री पवार को BAIF द्वारा आर्थिक सहायता भी दी जाती है।

नवाचार का विवरण

इस परियोजना को BAIF के साथ साझेदारी करके चलाया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य धान की स्थानीय किस्मों का संरक्षण करना है जो दुर्लभ होती जा रहीं हैं। किसानों के बीच संकर किस्म के धान इन पारंपरिक किस्मों के स्थान पर अधिक प्रचलित हैं जिसके परिणामस्वरूप निवेश लागत काफी वृद्धि हो गई है क्योंकि उनके लिए बाहरी निवेश की अत्याधिक जरूरत होती है और इससे जमीन की उर्वरकता का भी ह्रास हो जाता है। भविष्य में खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि धान की इन स्थानीय किस्मों का संरक्षण किया जाए। यह माना जाता है कि संकर किस्म के मुकाबले इन किस्मों का पोषण मूल्य कहीं अधिक होता है। इस परियोजना के तहत थाणे के विभिन्न ग्रुपों से विभिन्न प्रकार के धानों की किस्में एकत्रित की जाती हैं। आज की तारीख में उनके पास थाणे जिले से एकत्रित की गईं 220 दुर्लभ किस्में मौजूद हैं। इन्हें जमीन पर रोप कर कटाई के बाद विशेष प्रकार से तैयार किए गए पात्रों में सावधानी पूर्वक रखा जाता है। पैदावार, खेतीहरों की संख्या आदि जैसी विभिन्न विशेषताओं का रिकार्ड भी दर्ज किया जाता है अन्य किसानों को यह बीज इस शर्त पर मुफ्त दिए जाते हैं कि वे बाद में उसी किस्म के दुगने बीज लौटाएंगे – जिससे कि बीज संरक्षण की इस पहल की सफलता सुनिश्चित की जा सके।

नवाचार/तकनीक का असर

भारत की भावी खाद्य सुरक्षा का यह मुख्य प्रयास और नवाचार है। देश के विभिन्न हिस्सों में बहुत से किसानो ने इनके यहां दौरा किया और इसकी नकल करने का प्रयास किया।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। बहुत से अन्य किसानों को इन किस्मों के बारे में प्रचार करने के लिए अधिक सुविधाओं मुहैया कराने की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

मूंग दाल की नई किस्म – GBM1

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

अन्य फसलें

नवाचारक का विवरण

नाम	दाल अनुसंधान स्टेशन, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	दाल अनुसंधान स्टेशन, नवसरी कृषि विश्वविद्यालय, नवसरी, गुजरात फोन न.: 02637 282028, ई–मेलः pulsenau@gmail.com

बिजनैस मॉडल

वे इन बीजों का उत्पादन करके सहकारी समितियों व बाजार में बिक्री करते हैं। नवसरी कृषि विश्वविद्यालय (NAU) द्वारा इस उत्पाद को बाजार में उतारा जाता है।

नवाचार का विवरण

नवसरी कृषि विश्वविद्यालय, के वैज्ञानिकों ने मूंग दाल की नई किस्म तैयार की है जिसे गुजरात काली मूंग 1 (GBM 1) के नाम से जाना जाता है। यह मूंग दाल काले रंग की होती है जिसमें बहुत बढिया नमी बनी रहती है। इसकी अवधि बहुत कम, मध्यम लंबाई और काले रंग के मोटे बीज होते हैं। इसमें MYMV, खस्ता फफूंदी व मैक्रोफोमीना, पाले जैसे रोगों की प्रतिरोधी शक्ति भी होती है और सुरक्षित नमी की परिस्थितियों के कारण यह रवी फसल के लिए अधिक उपयुक्त होती है। यह एक विशिष्ट प्रकार की किस्म है जिससे किसानों को रवी फसल के लिए मूंग की फली का विकल्प मिल जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

अन्य किस्मों के मुकाबले इस किस्म से मूंग की 27.75 प्रतिशत अधिक पैदावार मिलती है। इससे 930 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की पैदावार में वृद्धि होती है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह रवी मौसम की मूंग की किस्म के रूप में बेहतर विकल्प की तरह काम करती है। इससे पूर्व किसानों के पास केवल मूंग की एक ही किस्म थी जिसे रवी मौसम में बोया जा सकता था।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस किस्म के सामने सबसे बड़ा मुद्दा यह है कि यदि एन–टाईप उर्वरक का इस्तेमाल अनुशंसित मात्रा से अधिक किया जाए तो हो सकता है कि फसल को पीले मोजैक वायरस का रोग लग जाए। इसके बारे में किसानो को जागरूक बनाना कठिन है अतः इस बारे में बेहतर जानकारी देकर इसका प्रसार किया जाना चाहिए।

उत्पाद चित्र

मत्स्य पालन

नवाचार का सारांश

किफायती मछली शुक्राणु पैकिंग व ढुलाई करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

मत्स्य पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री हसन महासलाइ
अनुभव	6 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	गांव – गोव, डाकखाना – पुगांव, तालुक – रोहा, जिला – रायगढ, महाराष्ट्र मोबाइल नः 09421252939, ई–मेलः hasnmhaslai@yahoo.com

बिजनैस मॉडल

वह किसानों को मुफ्त सलाह देता है। वह पूरी तरह मौखिक प्रचार पर निर्भर रहता है – जबकि वह फायदा कमाने के लिए अपने उत्पाद को बाजार में नहीं उतारता। वह अन्य स्रोतों से ₹ 3–4 लाख कमा लेता है।

नवाचार का विवरण

श्री हसन महासलाइ ने आसानी से उपलब्ध पॉलीथीन थैलियों में मत्स्य शुक्राणुओं (फ्राय व फिंगरनेल) की पैकिंग के लिए नई तकनीक इजाद की है। इन थैलियों का आयाम 50'' से 24'' होता है तथा इनमें 300–350 ग्राम तक की सामग्री डाली जा सकती है। पारंपरिक थैलियों में 20 लीटर पानी रखने के मुकाबले इन थैलियों में 50 लीटर पानी रखा जा सकता है। वह थैली में 20 लीटर पानी में 5000 फ्राय मछलियां भर देता है। उसके बाद थैली में बची शेष जगह में ऑक्सीजन भर कर जूट की रस्सी के स्थान पर स्थानीय तौर पर उपलब्ध नाइलॉन रस्सियों (250 x 4.8 mm) से इन सभी थैलियों को सील कर देता है।

नवाचार/तकनीक का असर

पॉलीथीन थैली का आकार बड़ा होने से प्रति थैली शुक्रणाओं की संख्या भी बढाई जा सकती है जिसके परिणामस्वरूप थैलियों की गिनती में छठे हिस्से तक कमी हो जाती है। इससे पैकिंग भी अधिक सघन नहीं होती और इनकी ढुलाई आसान हो जाती है। पॉलीथीन थैलियों को बांधने के लिए इस्तेमाल की गई बनी बनाई रस्सियां अथवा नाईलॉन रस्सियां बांधने से ऑक्सीजन का रिसाव नहीं होता और ढुलाई के दौरान मछली के शुक्रणाओं की जीवित दर कमी नहीं आती। इस तकनीक से कीमत में कमी, मुनाफे में वृद्धि और कार्य करने में रूचि बढ जाती है। इसे अपनाना भी आसान है और इस तकनीक का हस्तांतरण बहुत कम कीमत पर किया जा सकता है। इससे मजदूरी दसवें हिस्से तक कम हो जाती है और 9 लीटर प्रति ड्रम पानी की भी बचत होती है।

पहचान/इनाम

- कुण्डालिका मच्छीमार सहकारी समिति, गोवे के अध्यक्ष

मुद्दे

समय की कमी के कारण नवाचारक किसी प्रकार का प्रचार नहीं कर पा रहा है और इस उत्पादन में भारी निवेश के कारण लोग भी इस उत्पाद को खरीदने में इच्छुक नहीं हैं।

उत्पाद चित्र

पशु पालन

नवाचार का सारांश

भारतीय बैलों को संक्रमण रोगों के प्रति कम संवेदनशील बनाना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

पशु पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री शिवाजी जोंधाले
अनुभव	25 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	लगभग ₹ 2 लाख़
विस्तार	एक बछड़ा प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	डाकखाना – कौथे कमलेश्वर, तालुक व जिला – अहमदनगर, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09545140773

बिजनैस मॉडल

कृषि प्रयोजन के लिए वह बैलों की बिक्री करके राजस्व प्राप्त करता है। वह अधिकांशतः मौखिक प्रचार पर निर्भर करता है।

नवाचार का विवरण

नवाचारक के पास खिलहार जैसी गायों की भारतीय नस्ल है। वह बैलों का भी पालन–पोषण करता है। गायों का दूध बेचने के बदले बैलों को उनका दूध पिलाता है जिससे बैलों की नस्ल ज्यादा बढिया हो जाती है और तब वह कृषि कार्यों के लिए इन बैलों की बाजार में बिक्री कर देता है। इस प्रकार से पोषित बैल अधिक बलवान होते हैं और खेत में काम करने के लिए पूरी तरह सक्षम होते हैं। वे पिछली दो पीढियों से इसी काम से आजीविका कमा रहे हैं। वह अन्य कोई व्यापार अथवा खेती का काम नहीं करता अपितु उसने इसी काम को अपनी आमदनी का चिरस्थायी जरिया बना लिया है।

नवाचार/तकनीक का असर

केवल डेरीफार्म/दूध की बिक्री के लिए गायों के पारंपरिक इस्तेमाल के बदले इस नवाचार से उसे नए अवसर मिले हैं। स्थानीय नस्ल का इस्तेमाल करने पर कीमत कम हो जाती है जबकि इसी दूध पर पोषित बैलों की बिक्री करके दूध बेच कर कमाए गए मुनाफे से कहीं अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। आस–पास के गांवों के बहुत से किसान इस अवधारणा की जानकारी प्राप्त कर इसे कार्यान्वित करने जा रहे हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

पशुधन के लिए विशिष्ट प्रकार से खनिज मिश्रित क्षेत्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

पशु पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री आर.एस. गुप्ता
अनुभव	
कार्य क्षेत्र	गुजरात
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	अनुसंधान वैज्ञानिक, पशु आहार अनुसंधान विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशु पालन महाविद्यालय, आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद – 388110 फोन न.: 02692 263440

बिजनैस मॉडल

लागू नहीं

नवाचार का विवरण

आमतौर पर किसान अपने पशुओं को घास व फसलों से शेष बची सामग्री सहित स्थानीय तौर पर उपलब्ध एक या दो प्रकार की सामग्री का गाढा घोल देते हैं जो कि वास्तव में असंतुलित आहार होता है। इसके फलस्वरूप पशुओं की दूध देने की क्षमता का पूरा फायदा उठा पाना संभव नहीं हो पाता और यदि पशुओं को जरूरत से अधिक आहार दिया जाए तो कभी–कभी दूध उत्पादन की कीमत भी बढ जाती है। यदि खनिज परिपूरक पर्याप्त हों तो यह सोखे हुए पोषक तत्वों का उपयोग पूरी सक्षमता के साथ करने में सहायक होते हैं और विकास में सुधार, दूध उत्पादन तथा प्रजनन सक्षमता को कई अन्य तरीकों से बढावा देते हैं। इस प्रकार आनंद कृषि विश्वविद्यालय (AAU) विशेष रूप से खनिज की कमी वाले इलाकों तथा विशेष कृषि जलवायु क्षेत्र में खनिज संबंधी पशुओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशिष्ट प्रकार के खनिज मिश्रण वाले इलाकों की पहचान कर खनिजों का पता लगाने संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन करता है। एक किलो खनिज मिश्रण की कीमत ₹ 50–200 तक होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इसे पशुओं के चारे के साथ योजक अथवा पूरक आहार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसके फलस्वरूप गाय व भैंसों की परिपक्व अवधि में कमी होने से उनके गर्भाधान के अवसर अधिक हो जाते हैं। चूंकि इससे पशुओं की दैनिक खनिज जरूरतें पूरी हो जाती हैं अतः इससे खनिज की कमी होने के अवसर घट जाते हैं। इसके अतिरिक्त खनिज की कमी से होने वाले रोगों में भी कमी आती है। बेहतर स्वास्थ्य और संतुलित पोषण से पशुओं के दूध मे सुधार होने लगता है और इससे उनके मालिक की आमदनी में वृद्धि होती है।

पहचान/इनाम

इस नवाचार को कोई पुरस्कार नहीं मिला परंतु इसके बारे में प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

मुद्दे

कीमतों में कमी–बेशी होती रहती है क्योंकि यह इलाकेविशेष से संबंधित है। यद्यपि कच्चा माल उपलब्ध रहता है परंतु गुणवत्ता और कीमत में अनुकूलन की आवश्यकता है। किसानों को वास्तव में पशुओं की दैनिक खनिज जरूरतों का अंदाज नहीं है इसलिए वे इसे खरीदने के इच्छुक नहीं हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि पशुओं के लिए प्रोबॉयोटिक पूरक

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

पशु पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री मौलिक पटेल
अनुभव	
कार्य क्षेत्र	आनंद कृषि विश्वद्यिालय
कुल बिक्री	लागू नहीं
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	'त्रिशक्ति' बंगलो, मधुरम पार्क, एकता परिवार सोसाइटी के सामने, ए.वी. रोड, आनंद – 388001 मोबाइल न.: 09998183710, ई–मेलः maulik8090@yahoo.co.in

बिजनैस मॉडल

लागू नहीं

नवाचार का विवरण

नवाचारक ने कृषि पशुओं के लिए विशेष तौर पर प्रोबॉयोटिक मिश्रण तैयार किया है। इस उत्पाद में गतिशील माइक्रोगेजिम शामिल होते है। प्रोबॉयोटिक रूप में इस्तेमाल की जाने वाली नस्ल में *बेसीलस पुमीलस* होते हैं। इस प्रतिपादन में *बेसीलस पुमीलस* के जीवाणुओं निहित होंगे। *बेसीलस पुमीलस* सकारात्मक ग्राम जीवाणु होते हैं जो गैर–रोगजनक माइक्रोवस तैयार करते हैं। इस उत्पाद में *बेसीलस पुमीलस* की ऐसी नस्ल होती है जिसमें सकारात्मक ग्राम माइक्रोवस की बैक्टीरिया विरोधी क्रियाशीलता रहती है। इससे लक्षित पशु को सकारात्मक ग्राम माईक्रोवस संबंधित रोग से बचाने में मदद की जा सकती है क्योंकि पशुओं को स्तन सूजन जैसे रोग हो जाते हैं अतः यह पशुओं से संबंधित प्रमुख मुद्दा है। स्तन की सूजन जैसे रोगों के कारण प्रति वर्ष ₹ 1670.2 करोड़ से अधिक आर्थिक नुकसान होता है। इस नवाचार का उद्देश्य ऐसे उत्पाद का विकास करना है जो कृषि पशुओं पर धावा बोलने वाले माइक्रोवस के खतरे को कम कर सके।

नवाचार/तकनीक का असर

यह उत्पाद कृषि पशुओं को सकारात्मक ग्राम रोगजनक माइक्रोवस से सुरक्षा प्रदान करता है क्योंकि इससे बैक्टीरिया विरोधी मिश्रण तैयार करते हैं। मुर्गियों जैसे घरेलु पक्षियों को इन रोगों के खतरों से बचाने में इस उत्पाद सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जा सकता है क्योंकि यह पक्षी सूक्ष्मजीवाणु संबंधी रोगों से जल्दी ही ग्रस्त हो जाते हैं। इसे रोगजनक माईक्रोवस को एक जगह इकठ्ठा करने के लिए भी भागीदार बनाया जा सकता है और इस प्रकार इनसे होने वाले संकट को कम करके सभी पशुओं एवं मत्स्य जैसी जलीय प्रजातियों को बचाया जा सकता है। इस प्रोबॉटिक उत्पाद के उपाए कृषि पशुओं की तंदरूस्ती और रोगजनक माइक्रोबस से लड़ने के लिए उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं। यह विशेषकर चारा खाने वाले जानवरों के दूध की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि करने में अधिक लाभकारी होता है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नवाचारक की माली हालत अच्छी नहीं है वह आगे अनुसंधान करने के लिए ऋण लेना चाहता है।

उत्पाद चित्र

डेरी

नवाचार का सारांश

गिर पशु पालन के माध्यम से कम कोलेस्ट्रोल वाले दूध का उत्पादन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

डेरी

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री वाजी भाई मोहन भाई पटेल
अनुभव	6 साल
कार्य क्षेत्र	अघवाड़े गांव व भावनगर के अन्य हिस्से
कुल बिक्री	₹ 14,40,000
विस्तार	36,000 लीटर प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	8
संपर्क विवरण	डाकखाना – अधवाडे, जिला – भावनगर, गुजरात मोबाइल न.: 09712959191

बिजनैस मॉडल

यह उत्पाद श्री वाजी भाई द्वारा स्व वित्त पोषित है जो अपनी खुदरा प्रणाली के माध्यम से ₹ 40 प्रति लीटर की दर पर लगभग 100 लीटर प्रति दिन दूध की बिक्री करके ₹ 3.6 लाख का सालाना मुनाफा कमा लेता है। वह पिछले 6 साल से इस व्यवसाय को चला रहा है और ऐसे व्यवसाय की शुरूआत करने के लिए वह दूसरे किसानों को मुफ्त सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

बाजार में कम कोलेस्ट्रोल और कम वसा वाले दूध की बड़ी भारी मांग थी, जो 50 साल से अधिक उम्र वाले लोगों के बीच अधिक प्रचलित है। इसलिए अघवाड़े के श्री वाजी भाई ने इस अवसर को पहचान कर बाजार पर अपनी पकड़ बनाने का निर्णय लिया और कम कोलेस्ट्रोल युक्त दूध उपलब्ध कराने के लिए केवल गिर नस्ल की गाय पर ध्यान केंद्रित किया। वर्तमान में वह बेहतर गौशाला व जल आपूर्ति प्रणाली जैसी सुविधाओं का विकास करने के लिए ऋण लेकर अपने इस व्यवसाय को और आगे बढाने की योजना बना रहे हैं। किसान ने पाया कि इससे 1.5 किलोग्राम/गाय के दूध में वृद्धि हुई है। मवेशियों के गोबर का इस्तेमाल करने से जमीन की उर्वरकता भी बढ गई है। इससे दिहाड़ी मजदूरों की जरूरत में दुगनी कमी और कृषि कामकाज में कुल 2 घंटे प्रतिदिन समय की बचत भी होती है।

नवाचार/तकनीक का असर

ग्रामीण बाजारों में भी इस दूध की अत्याधिक मांग बढने लगी है, इसलिए अधिक लोग गिर नस्ल की गायों का चयन रहे हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

इस व्यवसाय की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि गिर गाय अधिक संवेदनशील होती हैं इसलिए उनकी देखभाल करते समय अधिक सावधानी की जरूरत होती है। कुशल कारीगर ढूंढ पाना भी एक समस्या है क्योंकि नवाचारक को उन्हें प्रशिक्षित करने में अधिक समय लगाना पड़ता है। श्री वाजी भाई के अनुसार गौशाला और जल आपूर्ति प्रणाली के लिए लगभग ₹ 7 लाख की जरूरत है।

उत्पाद चित्र

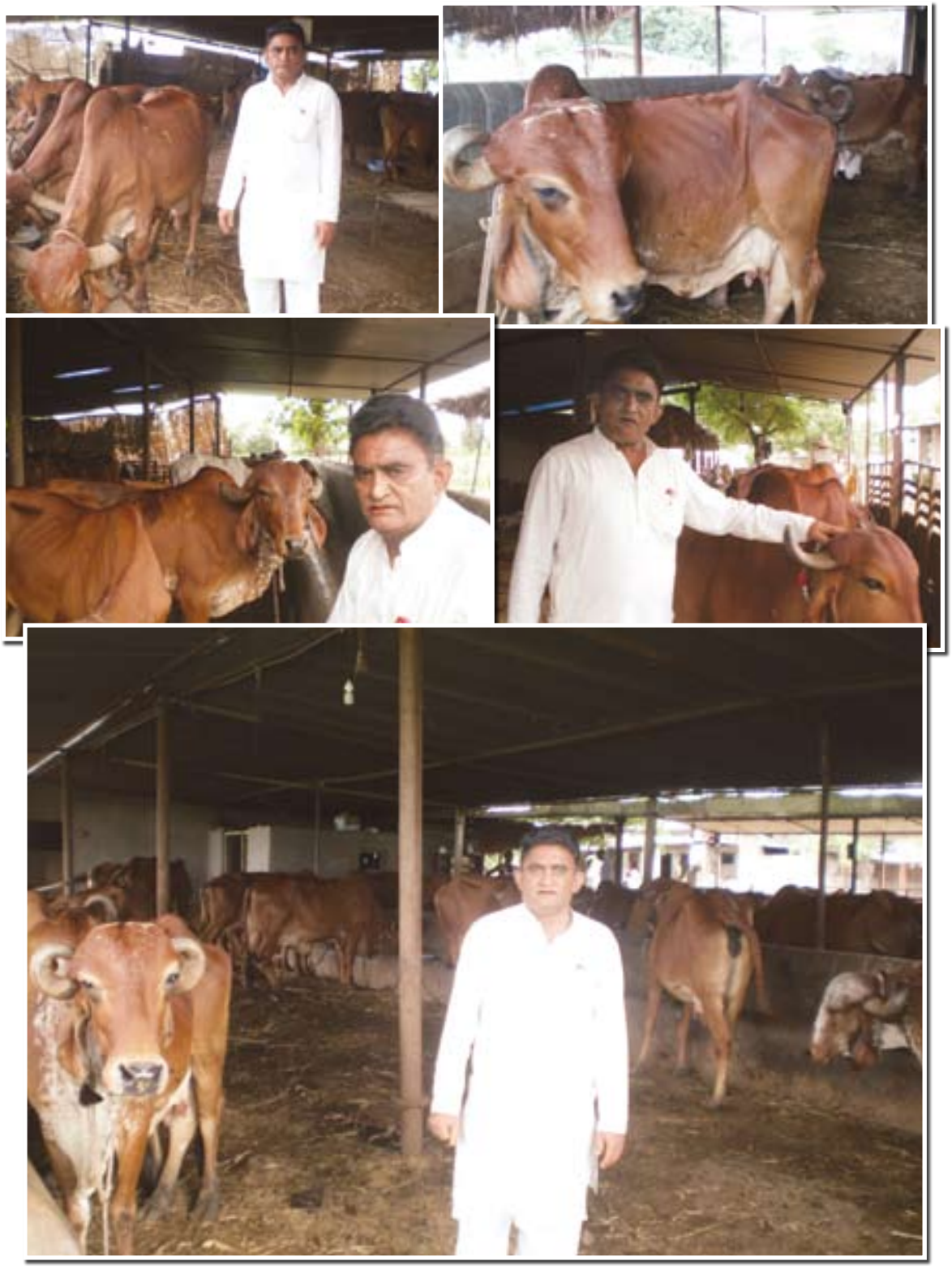

नवाचार का सारांश

गोशाला के लिए नए शैड तैयार करना व उनकी व्यवस्था करना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

डेरी

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री कैलाश जाधव
अनुभव	15 साल
कार्य क्षेत्र	पुणे, महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 54,75,000
विस्तार	40 भैंसे, 300 लीटर दूध प्रति दिन
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	रविराज हाईटैक फार्म, एपी नेरे, तालुक – मुल्श, जिला – पुणे मोबाइल न.: 09822258378

बिजनैस मॉडल

डेरी फार्म में 40 भैंसे हैं। प्रत्येक भैंस प्रतिदिन 9 से 11 लीटर दूध देती है जिसकी बिक्री वह अपनी बाजार श्रृंखला में ₹ 50 प्रति लीटर की दर से कर देते हैं। भैंसों के चारे की पैदावार के लिए वह 5 एकड़ कृषि भूमि का इस्तेमाल करते हैं।

नवाचार का विवरण

नया स्वच्छ व कुदरती रूप से ठण्डा रहने वाला गोशाला शैड तैयार किया गया है, जिसे 10,000 वर्ग मीटर क्षेत्र पर तैयार करने में लगभग ₹ 4 से 5 लाख की लागत आई है। इस प्रकार के शैड में हवा का संचार बहुत बढिया तरीके से होता है। हवा का संचार उपर व चारों दिशाओं से होता है। धूप और बारिश से भी यह रक्षा करता है। दूध और दूध से बने उत्पादों की बिक्री करने के लिए उन्होंने पुणे में निजी बिक्री केंद्र की व्यवस्था की है। छत पर जीआई की चादरें डाली गई हैं इस प्रकार से तैयार किए गए मॉडल गर्मियों में तापमान ठण्डा रखने में सहायक होते हैं और किफायती भी होतें हैं तथा इन्हें सुविधाजनक ढंग से तैयार किया जा सकता है। भैंसों के लिए मुख्य तौर पर आयुर्वेदिक दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है। दूध की पोषकता बढाने के लिए विभिन्न प्रकार के घास–फूस का इस्तेमाल किया जाता है। यह मॉडल केवल वाणिज्यक दृष्टिकोण से काम करने की अपेक्षा संपूर्ण रूप से काम करते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

दवाओं की कीमत 50 से 60 प्रतिशत तक कम हो गई है। अन्य पारंपरिक ढंग से व्यवस्थित डेरी प्रोजैक्ट के स्थान पर इससे दूध के उत्पादन में 20 से 30 प्रतिशत तक ज्यादा वृद्धि हुई है। उन्हें दूध से अच्छी आमदनी होती है क्योंकि उनकी अपनी बाजार श्रृंखला उपलब्ध है। भारत के सभी हिस्सों के किसान व उद्यमी उनके फार्म का दौरा करने आते हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

सही ढंग से बिजली की आपूर्ति की वे मांग करते हैं। कारीगरों की सबसे बड़ी समस्या है। दूध निकालने की मौजूदा मशीन भारतीय भैंसों के लिए उपयुक्त नहीं है इसलिए बेहतर ढंग से तैयार की गई मशीन की वे मांग करते हैं।

उत्पाद चित्र

मांस व –
मुर्गी पालन

नवाचार का सारांश

छोटे से खेत में देसी तरीके से मुर्गी (देशी कोमबडी) पालन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

मांस व मुर्गी पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री दयानदेव सोपानराव वाघ
अनुभव	8 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 11.4 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	1000 पक्षी प्रति माह
कर्मचारियों की संख्या	2
संपर्क विवरण	आदर्श स्कूल के नजदीक, डाकखाना – भीगवान, तालुक – दौंड़, जिला – पुणे मोबाइल न.: 09970737195

बिजनैस मॉडल

स्थानीय बोल–चाल में ''देसी कोमबडी'' नाम से जानी जाने वाली स्वदेशी स्थानीय मुर्गियों का पालन व्यापारिक बिक्री के लिए किया जाता है। कुल 3000 मुर्गियां हैं। उनकी आयु 1, 2 व 3 माह का अंतर होता है। प्रत्येक माह 900 से 1000 मुर्गियां बाजार में बेची जाती हैं। प्रत्येक मुर्गी की कीमत ₹ 90 से 110 होती है। वह ₹ 35 से 45 प्रति मुर्गी मुनाफा कमा लेते हैं।

नवाचार का विवरण

उसके पास मात्र एक एकड़ भूमि है और वह इस भूमि का इस्तेमाल मुर्गी पालन के लिए करता है – आमतौर पर पालन के लिए यह छोटी सी जगह अनुपयुक्त मानी जाती है। परंतु इसे ही उसने मुनाफे का उद्यम बना लिया है।

इन सभी नस्लों की मुर्गियों के लिए वह लगभग 3/8 एकड़ भूमि का इस्तेमाल शैड के तौर पर करता है। जबकि आधी एकड़ भूमि का इस्तेमाल वह मुर्गी दाना/आहार उगाने के लिए करता है। यद्यपि उसकी क्षमता इससे कहीं अधिक है परंतु वह उसका पूरा इस्तेमाल इसलिए नहीं करता ताकि मुर्गियों की देखभाल सही ढंग से की जा सके। उसकी मुर्गियों की जीवित दर 90 प्रतिशत तक पाई गई है। उसने सभी शैड स्वयं तैयार किए हैं और मुर्गियों को टीके लगाना के काम भी सीख लिया है।

नवाचार/तकनीक का असर

वास्तविकता यह है कि जमीन का छोटा सा टुकड़ा होने पर भी उसने मुर्गी पालन को अपनी आमदनी का स्थायी स्रोत बना लिया है और उसने इस इलाके के बहुत से छोटे किसानों को भी प्रेरित किया है इसी कारण वे उसके फार्म पर समय–समय पर दौरा करने आते हैं ताकि वे भी इसी प्रकार का काम शुरू कर सकें।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

बिजली अनियमित और मंहगी है। रात को बिजली न रहने के कारण बहुत से चूजें अचानक मर जाते हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

छतरमुर्ग पालन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

मांस व मुर्गी पालन

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री अशोक पाटिल तावड़े
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	0.5 एकड़
कर्मचारियों की संख्या	3
संपर्क विवरण	डाकखाना – मालेगांव खुर्द 29 बी, तालुक – बारामती, जिला – पुणे, महाराष्ट्र मोबाइल न.: 09767735151

बिजनैस मॉडल

वह अण्डे और पक्षी दोनों की बिक्री करता है। उसने पिछले साल लगभग 1250 अण्डों, 500 छोटे जोड़ों और 20 बड़े पक्षियों (लगभग 25 किलोग्राम) की बिक्री की है। उसने उन बहुत सी गैर–सरकारी संस्थाओं, किसानों एवं व्यक्तियों से विचार'–विमर्श किया जो भारत में छतर मुर्गों का पालन करने में रूचि रखते हैं। इसका प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है जिसके लिए प्रति प्रशिक्षाणार्थी ₹ 3000 फीस ली जाती है।

नवाचार का विवरण

इस इलाके में पारंपरिक तौर पर गन्ने की खेती की जाती थी। जिसके लिए पानी की बहुत अधिक जरूरत होती थी और आमदनी भी पूरे साल सुनिश्चित नहीं हो पाती थी। इस समस्या से निपटने के लिए श्री तावड़े ने अपने खेत के एक हिस्से में छतर मुर्ग पालन करने पर विचार किया जो कि अपेक्षाकृत भारत के लिए नया विचार है।

छतर मुर्ग पालन को देखते हुए 1500 वर्ग मीटर का क्षेत्र बड़े पक्षियों के लिए बेहद सीमित क्षेत्र होता है। नवजात पक्षियों को अलग से बंद कमरे में नियंत्रित तापमान में रखा जाता है। पक्षियों की उम्र 1 माह से 3 माह होने पर उन्हें खुली हवा वाले छोटे कमरे में स्थानांतरित कर दिया जाता है। 3 माह बाद पक्षियों को खुली हवा वाले बड़े कमरे में रखा जाता है। इन पक्षियों की देखभाल करने के लिए एक कर्मचारी काफी होता है। लगभग 100 पंक्षियों के लिए लगभग 50 किलोग्राम चारे की जरूरत होती है। आहार का मुख्य भाग हरी घास (चारा) ही होती है जिसे उसी खेत में उगाया जाता है। प्रत्येक पक्षी का जीवन काल लगभग 40 वर्ष का होता है। मादा पक्षी साल में 18 से 32 अण्डे देती है और वे 25 साल की आयु तक अण्डे दे सकती हैं। आमतौर पर 12 से 15 साल वाले पक्षियों की बिक्री मांस के लिए की जाती है।

नवाचार/तकनीक का असर

इससे आमदनी पूरे साल नियत रहती है। गन्ने की पारंपरिक फसल की तुलना में पानी की जरूरत 75 प्रतिशत तक कम हो जाती है। गन्ने की खेती के मुकाबले इसमें मजदूरों की जरूरत भी कम होती है। आस–पास के गांवों के बहुत से उद्यमी इस प्रोजैक्ट से प्रेरित हुए हैं और उन्होंने सफलतापूर्वक अपने आप इस काम को करना शुरू कर दिया है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

भारत में एक नई अवधारणा होने के कारण छतर मुर्ग पालन के बारे में जागरूकता की कमी है और अन्य एजेंसियों की इसका प्रचार करने में की गई पहल मद्दगार हो सकती हैं।

उत्पाद चित्र

समुदायिक प्रयास

नवाचार का सारांश

फसल–पशुधन की एकीकृत किफायती कृषि

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नत्थु भाई कालू भाई जाधव
अनुभव	4 साल
कार्य क्षेत्र	ओमेर गांव, तलाजा एवं महावा क्षेत्र
कुल बिक्री	₹ 5,40,000
विस्तार	14,600 लीटर
कर्मचारियों की संख्या	5
संपर्क विवरण	डाकखाना – देगवाड़ा, तालुक – महुआ, जिला – भावनगर मोबाइल न.: 09427559234

बिजनैस मॉडल

श्री नत्थु भाई ₹ 37 प्रति लीटर की दर पर भावनगर जिला दुग्ध उत्पादन यूनियन लिमिटेड को प्रतिदिन 40 लीटर दूध बिक्री करता है जिससे उसे सलाना ₹ 4 लाख का मुनाफा होता है। वह स्वयं भी दुग्ध सहकारी समिति का सदस्य है और यह सहकारी समिति वसा प्रतिशत के आधार पर दूध की खरीद करती है। इसी प्रकार का व्यवसाय आरंभ करने के लिए वह अन्य लोगों को मुफ्त में सलाह भी देता है।

नवाचार का विवरण

पुरानी बंजर भूमि को उपजाउ भूमि में बदल कर उसमें पशु पालन करने की श्री नत्थु भाई की पहल से उसके स्वयं एवं उसके सहयोगियों के जीवकोपार्जन में सार्थक सकारात्मक बदलाव हुआ। इससे पूर्व इस भूमि पर पानी का कहीं कोई अंतः स्रवण नहीं था, जिसने श्री नत्थु भाई को कृषि संबंधी कार्यकलापों के लिए पानी का एक तालाब तैयार करने के लिए उत्तेजित किया और इसी के साथ उसने पशु पालन का काम भी करना आरंभ कर दिया। इस व्यवसाय को चलाने के लिए उसने सहकारी मॉडल के रूप में गांव के 12 लोगों का एक दल बनाया। कृषि के लिए पशु अहाते की खाद का इस्तेमाल किया जाता है और फार्म में उत्पन्न होने वाली उपज का इस्तेमाल पशुओं के चारे में किया जाता है जिससे संपूर्ण लागत में अत्याधिक कमी आ जाती है। हाल ही में वह अलग हुआ है और वह 5 भैंसों के लेकर इस व्यवसाय को स्वतंत्र रूप से कर रहा है। बाजार में इसकी मांग को देख कर वह वर्तमान में इस व्यवसाय को आगे बढाने की योजना बना रहा है।

नवाचार/तकनीक का असर

इस नवाचार के परिणामस्वरूप दूध में प्रतिदिन 2 लीटर की वृद्धि पायी गई है। मवेशियों के गोबर की खाद का इस्तेमाल करने से जमीन के उपजाउपन में भी सुधार होता है। इसके अतिरिक्त कुल 50 प्रतिशत मजदूरों की जरूरत और 30 से 50 प्रतिशत समय की बचत भी हुई है। हालांकि यह व्यवसाय अधिक जटिल नहीं है इसलिए इसे चलाना आसान है।

कुल मिला कर डेरी फार्म का व्यवसाय करने के लिए अनेक किसानों को उत्साहित करने के साथ–साथ दुग्ध उत्पादन सहकारी समिति बनाने से किसानों को अपने उत्पाद की बेहतर कीमत पाने में भी अत्याधिक मदद मिली है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

यद्यपि बाजार को लेकर किसानों को किसी प्रकार की समस्या नहीं हुई है परंतु इस व्यवसाय को आगे बढाने के लिए और अधिक पशुधन खरीदने व नए डेरी शैडों का निर्माण करने के लिए लगभग ₹ 10 लाख की जरूरत है। वर्तमान में उन्होंने दुध उत्पादन के लिए 20 और भैसें खरीदने की योजना बनाई है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

विदेशी व देसी सब्जियां व फलों की समुदायिक कृषि

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	अभिनव किसान दल
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	850
संपर्क विवरण	अभिनव किसान दल, दुकान न॰. 428/1, डाकखाना – मान, तालुक – मुलशी, जिला – पुणे

बिजनैस मॉडल

हरित घर बनाने के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा 50 प्रतिशत आर्थिक सहायता दी जा रही है। पिछले वित्त वर्ष में कुल बिक्री पर लगभग 20 प्रतिशत मुनाफा कमाना संभव हो पाया था। सब्जियां एवं फल ग्राहकों से पहले से आर्डर लेने के बाद ही उगाए जाते हैं। अतः इस प्रकार के उत्पाद के लिए बाजार निश्चित रहता है।

नवाचार का विवरण

इस इलाके में किसानों के बीच विदेशी सब्जियों व फलों के प्रति बढती हुई रूचि पाई गई है। परंतु इन उत्पादों को बाजार में उतारते समय मांग की अनिश्चितता बहुत बड़ा मुद्दा है क्योंकि स्थानीय APMC के पास इन उत्पादों के लिए नियमित मांग नहीं होती। इस समस्या का हल निकालने के उद्देश्य से किसानों का एक दल एकजुट होकर सामने आया और यह विचार किया कि ग्रेडिंग, पैकिंग और सुपुर्दगी की कार्यप्रणाली में तालमेल बिठाने के साथ–साथ पुणे में स्थित होटल श्रृंखलाओं, खुदरा दुकानदारों व अन्य ग्राहकों के साथ सीधा संपर्क किया जाए। सभी फसलों की खेती जैविक ढंग से की जाती है। स्थायी तौर पर उभरी हुई क्यारियों में ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल किया जाता है। आज इस किसान दल में 216 सदस्य हैं और उन्होंने लगभग 850 कर्मचारियों को रोजगार मुहैया कराया है। सदस्य किसानों के खेतों से सब्जियों व फलों को कुछ चुने हुए सदस्यों के खेतों में ले जाया जाता है। यह वही सदस्य होते हैं जो किसान दल की ओर से पुणे शहर में सीधे संपर्क स्थापित करने में अग्रणी होते हैं। अतः स्व–सहायता दल ग्रेडिंग व पैकिंग फार्म पर ही करते हैं। अंत में सीधी सुपुर्दगी के लिए इन उत्पादों को पुणे शहर के ग्राहकों तक पहुंचाया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

गैर–पारंपरिक फसलों की मांग को पूरा करने का यह सबसे बढिया उदाहरण है। अग्रगामी संपर्क स्वयं स्थापित करने की सक्षमता के कारण आपूर्ति श्रृंखला से बिचौलियों को पूरी तरह हटा दिया जाता है और एक साथ मिल कर काम करने की अवधारणा से बेहतर तालमेल बिठाना व परस्पर ज्ञान बांट पाना संभव हो सका है।

पहचान/इनाम

- 2007–08 का राष्ट्रीय पुरस्कार

मुद्दे

मांग ने उत्पादन को पीछे छोड़ दिया है और यह दल और अधिक किसानों को साथ मिलाने पर विचार कर रहा है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि सेवा केंद्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	दीपक उर्वरक व पैट्रोकेमिकल कारपोरेशन लिमिटेड
अनुभव	
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	2500 किसान प्रति वर्ष
कर्मचारियों की संख्या	85
संपर्क विवरण	201–204 मैरीगोल्ड, नेको गार्डन, विमान नगर, पुणे–411014, महाराष्ट्र, भारत फोन न.: 020 66478000, ई–मेलः abfs@deepakfertilisers.com

बिजनैस मॉडल

महाधन सारथी केंद्र 1000 से अधिक गांवों में काम करता है और पूरे महाराष्ट्र, कर्नाटक व गुजरात में लगभग 10,500 किसानों तक पहुंचता है।

नवाचार का विवरण

दीपक उर्वरकों द्वारा एक छत के नीचे कृषि संबंधी समाधान प्रदान करने के लिए 'महाधन सारथी' अवधारणा पर आधारित एक परामर्श समिति की शुरूआत की गई। महाधन सारथी का उद्देश्य भूमि, पानी व संयंत्र का परीक्षण करके संपूर्ण कृषि समाधान प्रदान करने के साथ–साथ प्राथमिक पोषक (NPK) तत्वों के अतिरिक्त गौण व माइक्रो पोषक तत्वों सहित वनस्पति पोषित उत्पादों का पूरा इस्तेमाल करके फसल पोषण संबंधी संपूर्ण व्यवस्था करना है। प्रत्येक महाधन सारथी केंद्र, केंद्रीकृत रूप से संभावित बाजारों में स्थित कार्यालयों द्वारा चलाया जाता है। कुशल सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रत्येक केंद्र का प्रबंधन कृषि वैज्ञानिक द्वारा किया जाता है जिसकी मदद पर्यवेक्षक दल व तकनीकी सहायक करते हैं। पांच सारथी पर्यवेक्षकों का एक दल कृषि वैज्ञानिक की मदद जमीनी कामों में करता है। वे फसल आधारित परीक्षण रिपोर्ट व सदस्य किसानों के साथ परस्पर विचार–विर्मश करके बाजार सूचनाओं के आधार पर तकनीकी सलाह देते हैं। वे खेतों का दौरा करने संबंधी दिनों, फसल संबंधी सेमिनार व खेतों में विशेषज्ञों के दौरों का आयोजन करते हैं तथा निर्धारित फसल की अधिक पैदावार सुनिश्चित करने के अतिरिक्त प्रापण व खुदरा व्यापार के माध्यम से कृषि उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाजार संपर्क बनाने का काम करते हैं। इससे किसान विश्वव्यापी रूप से प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं और वे उन्हें अपने ग्रंथालय से चुनी हुई फसलों से संबंधित मूल्यवान जानकारी भी प्रदान करते हैं। किसानों को प्रदत्त प्रमुख सेवाओं के तहत वे उन्हें वनस्पति पोषण, बेहतर कृषि संबंधी अभ्यास, फसल की कटाई के बाद प्रबंधन सेवाएं तथा फार्म संयोजन सेवाएं प्रदान करते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

गांवों में यह केंद्र मौजूद होने के कारण किसान अपने खेतों से दूर और बाजार जाए बिना सभी प्रकार की तकनीकी जानकारी हासिल कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप किसानों व कृषि विज्ञान में होने वाले नवीनतम विकास से संबंधित जानकारी हासिल करने के बीच की दूरी खत्म हो गई है।

पहचान/इनाम

- FAI द्वारा उत्तम शिक्षा विस्तार क्रियाकलापों के लिए पुरूस्कृत

मुद्दे

कुछ केंद्रों में कृषि निवेश की उपलब्धता एक मुद्दा बना हुआ है। इन केंद्रों द्वारा दी गई सलाह को सौ प्रतिशत नहीं अपनाया जाता।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि विज्ञान वाहन

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

समुदाय व उद्योगों की ओर से की गई पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	एराइज एग्रो लिमिटेड
अनुभव	42 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 175 करोड़
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	500–1000
संपर्क विवरण	एरीज हाउस, प्लॉट न.:. 24, देओनार, गोवंडी (पूर्व), मुम्बई – 400043 फोन न.: 022 25564052

बिजनैस मॉडल

एरीज एग्रो ने भारत के 26 राज्यों में 8 लाख से अधिक किसानों को विश्व स्तरीय वनस्पति पोषण अवधारणा संबंधी जानकारी देने के लिए बहुत सी विशिष्ट अवधारणाओं की विकासात्मक पहल के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। इस काम के लिए 500 प्रशिक्षित मार्किट कर्मचारी व श्रव्य दृश्य उपकरण, भूमि परीक्षण उपकरण, कृषि विज्ञानिक व प्रदर्शन सामग्री सहित पूरी तरह सुसज्जित 100 **कृषि विज्ञान वाहनों (KVVs)** का बेड़ा तैयार किया है जो हर रोज 6 गांवों में पूर्व निर्धारित मार्गों पर उन नवाचारी अवधारणों की जानकारी देते हैं जो एरीज ब्रान्ड का आधार है।

नवाचार का विवरण

एरीज कृषि विज्ञान वाहनों (KVVs) – श्रव्य दृश्य उपकरण, भूमि परीक्षण उपकरण, कृषि विज्ञानिक व प्रदर्शन सामग्री सहित पूरी तरह सुसज्जित 100 वाहनों का बेड़ा जो हर रोज 6 गांवों में पूर्व निर्धारित मार्गों पर उन नवाचारी अवधारणों की जानकारी देते हैं जो एरीज ब्रान्ड का आधार है। ज्ञान का प्रसार करने व मांग पैदा करने के अतिरिक्त वाहनों पर सवार कर्मचारी आर्डर लेते हैं और किसानों को दुर्घटना व चिकित्सा बीमे की मुफ्त सुविधाएं भी प्रदान करते हैं। यह वाहन ऐसी बाजार प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ग्रामीण समुदायों में जानकारी देने के तरीकों में बदलाव कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारियों व वितरकों का माल तेजी से बिक रहा है क्योंकि इसके आर्डर KVVs पर बुक किए जाते हैं – इस प्रकार उन्हें इस नवाचार से लाभांश पाने वालों के रूप में सक्रिय बनाया जाता है।

नवाचार/तकनीक का असर

KVVs दूर दराज के इलाकों में जागरूकता लाने और सेवा रहित बाजारों पर ध्यान केंद्रित करने का काम करता है। वे किसानों की बैठकें बुलाते हैं और उत्पाद का प्रयोग करने के लिए श्रव्य–दृश्यों का प्रदर्शन करते हैं। वे किसानों को द्वार पर ही सलाहकार सेवाएं, भूमि परीक्षण व प्रश्नों के समाधान भी उपलब्ध कराते हैं। KVVs के माध्यम से बुकिंग करने पर किसानों को प्रोत्साहन के रूप में विशेष योजनाओं का लाभ भी प्रदान किया जाता है। वे विस्तार कार्यों अर्थात संपर्क किए गए किसान बनाम आर्डर लिए गए बनाम वास्तविक बिक्री के प्रभाव का भी ध्यान रखते हैं।

पहचान/इनाम

- वॉल स्ट्रीट जरनल ने आज के भारत में सबसे अधिक नवाचारी ग्रामीण बाजार तकनीक के रूप में इन वाहनों की प्रशंसा की है।

मुद्दे

भारत में उत्पादों की बिक्री करने के लिए बिक्री कर न. लेने की जरूरत होती है जो कि चल वाहनों के लिए लागू नहीं होता। अतः इन वाहनों का इस्तेमाल केवल आर्डर लेने के लिए ही किया जा सकता है न कि उत्पादों की बिक्री के लिए।

उत्पाद चित्र

MILAGROW

aries

aries agro limited
aries agro limited
ARIES AGRO

aries agro limited
KRISHI VIGYAN VAHAN

नवाचार का सारांश

एग्रो सेवा केंद्र

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री शशांक कुमार, मनीष कुमार
अनुभव	3 साल
कार्य क्षेत्र	बिहार
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	खरौना गेट, (बुद्धा) विश्व शांति स्तूप), वैशाली, बिहार मोबाइल नः 09304511409

बिजनैस मॉडल

फसल का चुनाव करने से लेकर मामूली शुल्क पर बाजार ले जाने तक FnF (खेत एवं किसान) पूरे मौसम किसानों के साथ रहता है। वह प्रत्येक सदस्य किसान का पार्श्व चित्र तैयार करता है जिसमें जमीन का विवरण, पिछले 3 सालों के फसल का स्वरूप, सिंचाई योजना, खेत में उपलब्ध सहायता तथा अन्य विवरण शामिल होता है। पूरे राज्य भर में FnF (खेत एवं किसान) किसानों के लिए अत्यंत बड़ा एवं विविध आधार है। FnF (खेत एवं किसान) नैटवर्क सभी प्रकार से उपयुक्त अनाज, दालों, सब्जियों, मसालों व फलों की मांग को पूरा करने में पूरी तरह सक्षम है।

नवाचार का विवरण

FnF (खेत एवं किसान) किसानों को फसल के चयन से लेकर बाजार तक की 360° सेवाएं उपलब्ध कराता है। FnF (खेत एवं किसान) पड़ोसी गांवों के किसानों का एक दल तैयार करके जमीन की स्थिति के आधार पर अगामी 1 साल के लिए फसल लगाने की योजना बनाता है एवं किसानों के पार्श्व चित्र तैयार करता है। ग्रामीण स्त पर सौदे–बाजी के जरिए तय कीमत पर चुनी हुई फसल के बढिया बीजों का केंद्रीकृत रूप से प्रापण, किसानों का प्रशिक्षण, मौसम के अनुसार कार्यक्रम बनाना, कठिनाईयो को दूर करना, कटाई व कटाई बाद किया गया मूल्य वर्धन आदि अन्य कार्यकलापों में शामिल है। इन सभी प्रक्रियाओं के अंत में नजदीकी केंद्र से उत्पाद एकत्रित किया जाता है। नजदीकी FnF केंद्र प्रासंगिक कृषि सामग्री की दैनिक कीमत, नई तकनीक संबंधी विडियो, देश के अन्य हिस्सों के किसानों की सफलता की कहानियां आदि जैसी अन्य लाभकारी सूचनाएं भी उपलब्ध कराता है। आज FnF टीम बिहार के छः जिलों में 500 से अधिक किसानों के साथ काम कर रहा है। राज्य भर में FnF अपने सदस्य किसानों की 350 एकड़ भूमि पर बासमती चावल, राजमाह, बेबी कॉर्न, मशरूम, लीची, पपीता, चना, औषधीय जड़ी बूटियां, प्रजातिए एवं मौसमी सब्जियों जैसी बहुत सी फसलें उगाने में मदद कर रहा है।

नवाचार/तकनीक का असर

FnF का मॉडल इस प्रकार का है कि छोटे से छोटा किसान भी बड़े किसान जितना लाभ कमा सकता है : क्योंकि बड़े समूह का हिस्सा होने के नाते उन्हें कम कीमत पर कच्चा माल खरीदने में मदद मिलती है जबकि अपने उत्पाद की कीमत अधिक मिलती है – और साथ ही विभिन्न स्तरों पर अनेक दलालों के पास जाने की जरूरत भी खत्म हो जाती है। इससे छोटे किसानों की आमदनी में 40 से 50 प्रतिशत प्रति यूनिट की वृद्धि हो जाती है और लगातार मुनाफा मिलने की अवधि 150–160 दिनों के बदले 80–90 दिन तक रह जाती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

स्थानीय किसानों का विश्वास व भरोसा जीतना इस दिशा में उठाया गया सबसे मुश्किल कदम है। चूंकि पिछले लम्बे अर्से के इतिहास से साफतौर पर पता चलता हैं कि बहुत से दलालों ने किसानों को धोखा दिया है इसलिए यह काफी मुश्किल लगता है कि वे FnF के साथ सहयोग करें जबकि इससे उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा अपितु लाभ अवश्य मिलेगा।

उत्पाद चित्र

फसल का अंतिम रूप
R&D के परिणाम व बाजार पर आधारित फसल संबंधी अंतिम निर्णय और विशलेषण विशेषज्ञों ने यह सिफारिश किए कि खेती किस प्रकार की जाए।

खेत परिक्षण
R&D समूह व pH, RH भूमि कृषि की प्रकार एवं जलवायु संबंधी अन्य परिस्थितियां

सरकार द्वारा दिया गया समर्थन एवं स्रोत
सरकारी समर्थन का आबंटन, प्रशिक्षण पाने के लिए FnF को पहले से सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

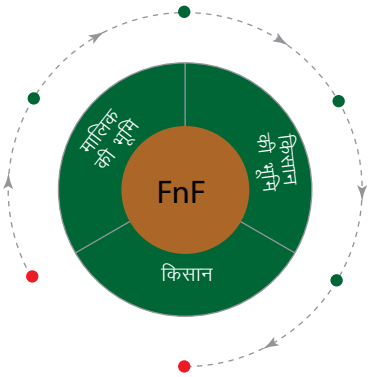

प्रारंभ
हमारी टीम छोटे और सीमांत किसानों के साथ मिल कर कार्रवाई योजना बनाती है।

कृषि प्रक्रिया पर नजर रखना
FnF ग्रुप अधिक पैदावार के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सही प्रक्रिया का समर्थन करता है।

बाजार में पहुंच
मार्केटिंग टीम फसल को बाजार तक ले जाती है जहां अधिकतम लाभ कमाया जा सकता है।

नवाचार का सारांश

कालभात किस्म के धान संरक्षण व जैविक उत्पादन के लिए सामुदायिक पहल

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री सारंग पांडे (लोक पंचायत)
अनुभव	10 साल
कार्य क्षेत्र	आस–पास के गांव
कुल बिक्री	₹ 12 लाख
विस्तार	अकोले ब्लॉक के 25 गांवों में 225 किसान
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	लोक पंचायत, तालुक – संगमनेर, जिला – अहमदनगर, महाराष्ट्र मोबाइल नः 09421590907

बिजनैस मॉडल

इस किस्म के धान की खेती लगभग 100 हैक्टेयर भूमि पर की जाती है। लोक पंचायत किसानों से ₹ 25 प्रति किलोग्राम की दर से भूसी सहित धान खरीद लेती है। बाजार में वह इसे ₹ 50–60 प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेच देते हैं।

नवाचार का विवरण

लोक पंचायत किसानों की एक संस्था है – यह किसानों को जैविक खेती, जैविक खाद तथा कीटनाशक उत्पादन, सरकारी योजनाओं व खेती के बहुत से अन्य विषयों के बारे में प्रशिक्षित करती है। यह दुर्लभ किस्म के चावलों की मार्केटिंग भी करती है। कालभात चावल की स्थानीय देसी किस्म है – इसमें खुशबू एवं पोषण मूल्य अधिक होता है। यह इसलिए दुर्लभ किस्म बन चुकी है क्योंकि बाजार में अधिक उपज वाली संकर किस्म की अधिक मांग है। बाजार में मिले समर्थन से चावल की पूर्व किस्म की तुलना में इस किस्म से किसानों को अधिक मुनाफा होता है। इस संस्था ने कम कीमत के जैविक निवेश एवं संसाधनों को लागू करने में किसानों की मदद की है। इससे 9–10 क्विंटल प्रति एकड़ की पैदावार मिलती है। यह संस्था 10 एकड़ के प्रयोगात्मक फार्म पर लगातार अनुसंधान करती रहती है। सदस्य किसान एकसाथ मिलकर बैठकों में कार्रवाई नीति व योजना पर विचार करते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

किसानों का बड़ा समूह होने व चावलो की दुर्लभ किस्म के कारण इन्हें सरकार की ओर से अच्छी आर्थिक सहायता मिल जाती है। किसान खुश हैं क्योंकि सभी प्रकार के बाहरी निवेशों में उनकी बचत होती है चूंकि उन्हें अपनी फसल से ही बीज प्राप्त हो जाते हैं जिससे फार्म पर कम कीमत का निवेश होता है। अधिक से अधिक किसान इस संस्था से जुड़ रहे हैं और इसका लाभ उठा रहे हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

किसानों को चावलों की इस किस्म से ज्यादा संकर किस्म के चावलों पर भरोसा है। लगातार प्रयास करते रहने से बाजार में अच्छी मांग पैदा की जा सकती है परंतु यह सच्चाई है कि संकर किस्म की तुलना में इसकी पैदावार में दोगुनी कमी होती है और यही प्रारंभिक रूकावट पैदा करती है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

सामुदायिक रूप से सब्जियां उगाना (सब्जी केंद्र)

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

समुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री कृष्णपाल सिंह मोरे
अनुभव	6 साल
कार्य क्षेत्र	आस–पास के गांव
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	200 किसान
कर्मचारियों की संख्या	नहीं बताया
संपर्क विवरण	सनावाड़, जिला – खण्डावा, मध्य प्रदेश, मोबाइल नः 09826621562

बिजनैस मॉडल

वह दूसरे किसानों को फसल के चुनाव, फसल की खेती और भूमि निरीक्षण के लिए मुफ्त सलाह देता है। वह विभिन्न उर्वरकों व पर्यावरणीय अनुकूलित रसायनिक कीट नाशकों के बारे में भी सलाह देता है। यह इन सभी अभ्यासों को एकसाथ देखा जाए तो उसके फार्म पर औसतन ₹ 2 लाख प्रति एकड़ मुनाफा होता है। उसने स्वयं अपनी ड्रिप सिंचाई एवं मल्चिंग कागज आपूर्ति एजेंसी की भी शुरूआत की है।

नवाचार का विवरण

श्री मोरे के पास 50 एकड़ भूमि है – जिसमें से अधिकांश का इस्तेमाल खेती के लिए नहीं होता था और उपज की गुणवत्ता और मात्रा भी निराशजनक थी। अतः उसने 30 एकड़ भूमि पर विभिन्न किस्मों की सब्जियां उगाने का निर्णय लिया और उसे एक प्रयोग की तरह माना। वह खेती, फसल का चुनाव तथा भूमि के सुधार के बारे में बेहतर अभ्यास का पता लगाकर उसे अपने खेत पर लागू करना चाहता है। धीरे–धीरे उसने उस इलाके की भूमि और जलवायु संबंधी परिस्थितियों में सब्जियां उगाने के सभी पहलुओं के बारे में प्रभावपूर्ण ढंग से जांचा–परखा ज्ञान जुटा लिया है। जो जमीन कभी अच्छी पैदावार तक नहीं दे सकती थी अब वही जमीन अत्याधिक मुनाफा कमा रही है। भूमि के विकास के लिए उसने मुख्य रूप से मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई तकनीक का इस्तेमाल किया है। उसने विभिन्न प्रकार की अधिक पैदावार देने वाली संकर किस्म के बीजों का इस्तेमाल किया ताकि उसके फार्म की परिस्थितियों के हिसाब से सबसे अधिक उपयुक्त बीज मिल सकें। आज वह मुख्य रूप से शिमला मिर्च, तरबूज, टमाटर, मिर्च व करेला आदि जैसी सब्जियां उगाता है। लगभग 200 बड़े किसानो ने उसके साथ सलाह–मशविरा करके इसी व्यवहार का पालन किया है। अब वे सब्जी बाजार की जरूरतों को मिल कर पूरा करते हैं और लागत व प्रयासों का अधिकतम लाभ पाने के लिए सामूहिक वाहन का प्रयोग करते हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

भारतीय किसानों की जोखिम उठाने की योग्यता का यह सबसे बेहतर उदाहरण है। यह सही है कि किसान ने बड़े पैमाने पर प्रयोग करने का निर्णय लिया और यहां वहां से प्राप्त ज्ञान के विभिन्न अंशों व टुकड़ों को जोड़कर समाधान ढूंढ निकाला जो इसका सबूत है। जब उसने इस ज्ञान को उस इलाके के किसानों के साथ बांटा तो लगभग 200 किसान उसके अनुभव से लाभ उठाने लगे और यहां तक कि वे सामुहिक बाजार विकास व परिवहन के लिए प्रयास कर रहे हैं – निजी लाभ का किस प्रकार का व्यापक प्रभाव पूरे इलाके पर पड़ता है यह इसका उदाहरण है।

पहचान/इनाम

- ब्लॉक स्तर पर ''उत्तम किसान'' का पुरस्कार दिया गया

मुद्दे

किसानों का एक ग्रुप मल्चिंग मशीन की मांग कर रहा है जो कि आसानी से उपलब्ध नहीं होती। सरकार द्वारा प्रदान किए गए मल्चिंग कागज घटिया किस्म के हैं। उसने यह भी बताया कि सरकार सब्जियों के लिए MSP (न्यूनतम समर्थन मूल्य) नहीं देती अतः बिक्री मूल्य को लेकर किसानों में अनिश्चितता बनी रहती है – जो वास्तव में सब्जियों की खेती करने में छोटे किसानों के लिए रूकावट साबित हो रही है।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

छोटे खेतों के लिए पारंपरिक मौसम पूर्वानुमान तकनीक

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नागेश एम स्वामी
अनुभव	12 साल
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र
कुल बिक्री	₹ 1,10,500
विस्तार	लागू नहीं
कर्मचारियों की संख्या	1
संपर्क विवरण	शेवाड़े (अम्बराज), तालुक – कराड, जिला – सोलापुर – 415109 मोबाइल नः 09822848432, 09423341861

बिजनैस मॉडल

श्री स्वामी द्वारा विकसित तकनीक से अगले 6 माह के मौसम का सही अनुमान लगाया जा सकता है। वह इससे औसतन बारिश का अनुमान लगा सकते हैं और अगले सप्ताह के लिए बारिश के दिनों का भी अनुमान लगा सकते हैं। इससे उसे सुरक्षित काल में कृषि संबंधी अपने सभी कार्यकलाप करने में मदद मिलती है। बहुत से किसान एवं दिलचस्पी रखने वाले लोग उनके फार्म पर आते हैं और इन तरीकों के बारे में जानने का प्रयास करते हैं।

नवाचार का विवरण

चूंकि सरकार क्षेत्र विशेष अथवा इलाके के लिए मौसम संबंधी कोई पूर्वानुमान नहीं बताती अतः छोटे किसानों के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि अगले 6 माह और आने वाले सप्ताह में मौसम कैसा रहेगा और आने वाले समय के लिए कौन सी फसल उपयुक्त होगी। नवाचारक ने ऐसी प्रणाली तैयार की है जो हवा की तीव्रता, सूर्य की रोशनी, बारिश, नमी आदि का पूर्वानुमान लगा सकती है। उसे अपने अनुभव पर पूरा भरोसा है और पूर्वानुमानित समयावधि में वास्तविक मौसम के बारे में उसके पूर्वानुमान 80 से 90 प्रतिशत सही होते हैं। उसने एक डायरी बना रखी है जिसमें उसने पिछले 6 वर्षों से प्रतिदिन के मौसम का हाल लिख रखा है। वह पिछले आंकड़ों एवं सूर्य, चांद व पृथ्वी जैसे नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर मौसम की भविष्यवाणी करता है। वह अपनी भविष्यवाणी की सूचना हमेषा अपने इलाके के कृषि विश्वविद्यालय को भेजता है।

नवाचार/तकनीक का असर

उसके पास उपलब्ध पिछले आंकड़ों के आधार पर वह भविष्यकाल में विभिन्न फसलों के लिए कुदरती मौसम संबंधी भविष्यवाणी कर सकता है। इससे उसे अपने फार्म पर तदानुसार फसल लगाने में मदद मिलती है। इससे उसके समय की बचत होती है और उसे बढिया जैविक पैदावार भी मिलती है। इस विधि से उसे स्वावलंबी बनने में मदद मिलती है।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

नवाचारक को बारिश का अनुमान लगाने के लिए सस्ते उपकरण की जरूरत है। इसके अतिरिक्त वह सरकार से अपील करता है कि कृषि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में इस जानकारी को शामिल किया जाए।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

अनार की खेती के लिए नवाचारी अनुबंध खेती का नमूना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	इनल फार्म प्राईवेट लिमिटेड
अनुभव	लागू नहीं
कार्य क्षेत्र	महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश
कुल बिक्री	नहीं बताया
विस्तार	नहीं बताया
कर्मचारियों की संख्या	37
संपर्क विवरण	बी 202, यूनिवर्सल बिजनैस पार्क, चण्डीवाली फार्म रोड, अंधेरी (पूर्व) मुम्बई – 400072 फोन न.: 022 42600700

बिजनैस मॉडल

अनार के बागों का विकास करने के लिए अनुबंध खेती तथा खुदरा व्यापारियों व निर्यातकों को सीधे आपूर्ति करना – इसके पीछे भाव यह है कि छोटे किसानों के साथ काम करते हुए किफायत के साथ बडे पैमाने पर वृक्षारोपण करना।

नवाचार का विवरण

INI फार्म और 'परवर फल व सब्जी मार्केटिंग सोसायटी' ने छोटे और मध्यम किसानों के साथ मिल कर 300 एकड भूमि पर अनार के बाग लगाने के लिए संधि की है। यह नवाचार अनुबंध खेती का विकासशील नवाचारी नमूना है जिसमें कंपनी, सोसाइटी और किसान संयुक्त रूप से मिल कर कंपनी व सोसाइटी द्वारा बताई गई तकनीक, निवेश तथा प्रबंधन करेंगे और किसानों को न्यूनतम गारंटी मूल्य दिया जाएगा तथा अतिरिक्त मुनाफे को इन तीनों इकाईयों के बीच बांट लिया जाएगा। इस मॉडल में SFAC उपक्रम की पूंजीगत योजना तथा किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए समूह विकास योजना जैसी विभिन्न सरकारी योजनाएं शामिल हैं।

नवाचार/तकनीक का असर

इस नवाचारी मॉडल से 60–70 किसानों को मदद मिल सकेगी और सभी मध्यस्थतों को दूर किया जा सकेगा जो कि किसानो के लिए बेहतर अहसास होगा तथा पैदावार में 30 प्रतिशत का इजाफा होगा व विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप उत्कृष्ट किस्म के उत्पादों का उत्पादन किया जा सकेंगे। नवाचारी मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि अनुबंध खेती मॉडल की सफलता के लिए प्रत्येक इकाई के हितों को श्रेणीबद्ध किया जा सके।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

हितों में संघर्ष और बाजार मूल्यों में उतार–चढाव भारत में अनुबंध खेती करने संबंधी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

उत्पाद चित्र

नवाचार का सारांश

कृषि समृद्धि के लिए उत्पादक कंपनी का नमूना

जिन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है

सामुदायिक पहल

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री नयन रंजन
अनुभव	5 साल
कार्य क्षेत्र	गैरातगंज
कुल बिक्री	₹ 65 लाख प्रति वर्ष
विस्तार	2001 सांझीदार
कर्मचारियों की संख्या	लागू नहीं
संपर्क विवरण	गांव मेहगुवांकलां, रायसन – 464552, मध्य प्रदेश मोबाइल नः 09329775146, ई–मेलः ikcpcl@rediffmail.com

बिजनैस मॉडल

लवकुश फसल उत्पादक कंपनी ने DPIP परियोजना की पहल के अंतर्गत छोटे और सीमांत किसानों को उत्पादक कंपनियों के साथ जोडना शुरू कर दिया है ताकि उनका बाजार के साथ सीधा संपर्क बन सके और सीमित साधनों, तकनीकी सहायता के साथ वे अपने उत्पादन में वृद्धि करने के साथ–साथ अपने उत्पाद की बेहतर कीमत वसूल कर सकें। लवकुश फसल उत्पादक ने 1 गांव से अपना काम शुरू किया था और आज सिलवानी और गैरातगंज नामक दो ब्लॉको के 63 गांवों तक पहुंच चुका है जिनमें लगभग 2000 साझीदार शामिल हैं।

नवाचार का विवरण

DPIP ने उत्पादन में वृद्धि करने के लिए कुआं, ट्यूब वैल, डीजल पंप, बेहतर किस्म के बीजों के लिए धन राशि मुहैया कराई है। वर्तमान में यह कंपनी गरीब और सीमांत किसानों को मुनासिब दामों पर अच्छी किस्म के बीज, खाद तथा कृषि रसायन मुहैया कराने के लिए बीजों के बिजनैस और फार्म निवेश आपूर्ति का काम कर रही है। इसने इस जिले में पहली बार प्रजनक बीजों के माध्यम से सोयाबीन की नई किस्म तैयार की है, और हरे चने, अरहर और मटर की भी नई किस्म तैयार की जा रही है।

नवाचार/तकनीक का असर

मैंगांन–कला गांव के किसान आलू की खेती करते थे परंतु यह अनुमान लगाया जा रहा था कि उन्हें अपने उत्पाद की अच्छी कीमत नहीं मिलती थी। ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए DPIP ने किसानों को किसान स्तर पर महासंघ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों को अधिशुल्क और आर्थिक सहायता से लाभ मिला उन्हें अच्छी किस्म के बीज, उनके उत्पाद की बेहतर बाजार कीमत, बाजार ताकतों के बारे में मिली जानकारी में सुधार, रियायती दरों पर अच्छी किस्म के बीज मिलने लगे। वे अपने सेवा प्रदाता के माध्यम से दरवाजे पर ही सीमांत एवं रियायती दरों पर कृषि निवेश मुहैया कराते हैं।

पहचान/इनाम

कोई नहीं

मुद्दे

कोई नहीं

उत्पाद चित्र

संपादकीय टीम

प्रवेश शर्मा

पुर्णिमा खण्डेलवाल

पंकज खण्डेलवाल

अनुसंधान टीम

सौमाभ सेन

रूपाली चौधरी

चंद्रलेखा सिंह

मोहित काबरा

श्री भगवान त्यागी

यह दस्तावेज सार्वजनिक है और इसका उद्धरण एवं उल्लेख मुक्त भाव से किया जा सकता है। किसी भी प्रकार का व्यवसायिक उपयोग निषेध है।

बिक्री के लिए नहीं है

© लघु कृषक कृषि–व्यापार संघ (एस.एफ.ए.सी.) नई दिल्ली, 2013

डिजाइन व प्रिंट : मैक्रो ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड www.macrographics.com

पाठकों के लिए नोट

INI कंसल्टिंग प्राईवेट कंपनी ने नवाचारों के इस संग्रह को एस.एफ.ए.सी. की ओर से संकलित किया है। नवाचार के दावे का सत्यापन करने के लिए परामर्शदाता ने पूरी लगन के साथ काम किया है और प्रत्येक मामले में खेती की जांच की है और सभी संबंधित दस्तावेज आदि एकत्रित किए हैं। इन सभी दस्तावेजों की प्रतियां एस.एफ.ए.सी. में उपलब्ध हैं।

परंतु यह भी संभव है कि कुछ मामलों के अध्ययन में तथ्यात्मक अशुद्धियां शेष रह गई हों। पाठकों से निवेदन है कि यदि उन्हें ऐसी त्रुटियों की जानकारी है तो वे अवश्य ही इन्हें हमारे ध्यान में लाएं।

हम इसी प्रकार के नवाचारों पर देश के सभी हिस्सों से और अधिक सहयोग की कामना करते हैं और शीघ्र ही इसी किस्म का हम दूसरा खण्ड भी प्रकाशित करेंगे। जानकारी इसी संरूप में भेजी जाए जैसी कि इस खण्ड में प्रकाशित की गई है और फोटोग्राफ अवश्य संलग्न किए जाएं।

कृपया योगदान के लिए पिछे दिये गये पते या ई–मेल पर संपर्क करें

YEAR of HORTICULTURE 2012

SFAC
लघु कृषक
कृषि व्यापार संघ

SMALL FARMERS' AGRIBUSINESS CONSORTIUM

NCUI Auditorium Building, 5th Floor, 3 Siri Institutional Area
August Kranti Marg, Hauz Khas, New Delhi - 110016
Tel: 91-11-26862365, 26966017 | Fax: 91-11-26862367
Email: info@sfacindia.com, sfac@nic.in | Web: www.sfacindia.com